

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182018

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82/I145 Accession No. G.H. 1607

Author रूसन, हेनरिक ।

Title समाज का स्वर्णम । 1959 v. 8.

This book should be returned on or before the date
last marked below.

समाज के स्तम्भ

(मूल लेखक—हेनरिक इब्सन)



अनुवादक—श्री लक्ष्मोनारायण मिश्र,

बी० ए०

ग्रंथ-संख्या—५६

प्रकाशक तथा विक्रेता

भारती-भण्डार

लीडर प्रेस, इलाहाबाद

Checked 1965

Checked 1969

प्रथम संस्करण

वि० '५९

मूल्य १)

मुद्रक

कृष्णाराम मेहता,
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

यह पुस्तक यूरोप के प्रसिद्ध नाटककार हैनरिक इब्सन के नाटक “पिलर्स आफ सोसाइटी” का अनुवाद है। इब्सन के नाटकों ने अपने समय में बड़ी सनसनी पैदा की थी और यूरोप की आधुनिक नाट्य कला पर उन का विशेष प्रभाव पड़ा है। इस से भी बड़ी बात यह कि उन का यूरोप की विचारधारा पर ही नहीं बल्कि नैतिकता पर भी काफ़ी प्रभाव पड़ा है। इब्सन की रचनाओं की मुख्य विशेषता यह है कि वे भावुकताप्रधान न हो कर बुद्धि-प्रधान हैं और उन में से प्रत्येक में किसी न किसी समस्या पर प्रकाश डाला गया है। इब्सन ने ऊपरी सदाचार का परदाकाश करने में संकोच नहीं किया है, परन्तु इस का अर्थ यह नहीं है कि वे सदाचार अथवा नैतिकता के विरोधी हैं। वे ढोंग और बाह्याडम्बर के विरोधी हैं और सदा सत्य तक पहुँचने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

इस नाटक के अनुवादक पंडित लक्ष्मी नारायण मिश्र, बी० ए०, स्वयं एक आधुनिक शैली के सफल नाटककार हैं। इब्सन के मर्म को समझ सकने की उन में एक विशेष क्षमता है और इसलिए उन्हें हिन्दी संसार को भेंट करने के लिए वे विशेष रूप से उपयुक्त हैं।

—प्रकाशक

नाटक के पात्र

कारस्टे बर्निक—एक जहाज़ के कारखाने का मालिक ।

मिसेज़ बेत्ती बर्निक—उसकी स्त्री ।

ओलाफ़—उनका तेरह साल का लड़का ।

मिस मर्था बर्निक—कारस्टे बर्निक की बहिन ।

जान त्वांसे—मिसेज़ बर्निक का छोटा भाई ।

लोना हस्सेल—मिसेज़ बर्निक की पास के रिश्ते की बहिन ।

हिल्मा त्वांसे—मिसेज़ बर्निक का चचेरा भाई ।

दीना दोर्फ़—एक नौजवान लड़की जो बर्निक परिवार के साथ रहती है ।

रारलुन्त—स्थानीय विद्यालय का अध्यापक ।

रुम्मेल—एक व्यापारी ।

विजलान्त—एक व्यवसायी ।

सान्स्तात—एक अन्य व्यवसायी ।

क्राप—बर्निक का विश्वासपात्र क्लार्क ।

आउन—बर्निक के कारखाने का फ़ोगमैन ।

मिसेज़ रुम्मेल ।

हिल्दा रुम्मेल—उसकी पुत्री ।

मिसेज़ हाल्त ।

नेत्ता हाल्त—उसकी पुत्री ।

मिसेज़ लीञ्ज ।

(स्थान—नारवे के सागर-तटवर्ती एक कस्बे में बर्निक का घर)

पहला—अंक

[बर्निक के मकान में बगीचे की ओर एक बड़ा कमरा । आगे की बाईं ओर बर्निक के दफ्तर का दरवाज़ा है । उसी दीवार में आगे की तरफ बढ़ कर एक और उसी तरह का दरवाज़ा । दूसरी ओर की दीवार के बीचो बीच बाहर जाने के लिए एक बड़ा फाटक, जिसके उस ओर सड़क है । पीछे की दीवार बिलकुल शीशे से मढ़ी है । इसके बीच के दरवाजे से होकर बगीचे में जाने की सीढ़ियाँ—सीढ़ियाँ के ऊपर थूँप रोकने का छज्जा । सीढ़ियों के नीचे की ओर बगीचे का कुछ भाग देख पड़ता है—चहारदीवारी से घिरा हुआ उसमें छोटा सा दरवाज़ा । चहारदीवारी की दूसरी ओर सड़क—सड़क के उस किनारे लकड़ी के छोटे छोटे मकान, अच्छी तरह पालिश किये हुए । गर्मी का दिन है—सूरज तेजी से चमक रहा है । जब तब आदमी देख पड़ते हैं—सड़क से चलते हुए और कभी कभी खड़े होकर बातें करते हुए और कोने पर की एक दूकान में आते जाते हुए... इत्यादि... इत्यादि ।

कमरे में कई स्त्रियाँ मेज़ के चारों ओर बैठी हैं । मिसेज बर्निक सभा-नेत्री की जगह पर हैं । उनकी बाईं ओर मिसेज हाल्ट और उसकी लड़की नेता हैं । उनके बाद मिसेज रुम्मेल् और हिल्दा रुम्मेल् हैं । मिसेज बर्निक के दाएँ मिसेज लीव्ज, मर्था बर्निक और दीना दोर्फ हैं । सभी स्त्रियाँ व्यस्त हैं । मेज़ पर बहुत से कपड़े रक्खे हैं और पोशाक की ओर भी कई चीजें हैं, कुछ तो अधसिज़ी और कुछ अभी कटी हुई । और पाछे की ओर छोटी मेज़, उस पर दो फूलदान और एक ग्लास शरबत रक्खे हैं । रारलुन्त बैठा हुआ एक सुन्दर किताब पढ़ रहा है, लेकिन बस इतने ही ऊँचे स्वर

में जिसमें कि वहां बैठी हुई स्त्रियां कभी कभी कुछ सुन पाती हैं। बगीचे के भीतर ओलाक बर्निक दोड़ रहा है—खेलने के धनुष से निशाना लगाता है।

थोड़ी देर के बाद धीरे से आउन का प्रवेश, दाहिनी ओर के दरवाजे से। पढ़ने में थोड़ा देर बाया। मिसेज बर्निक उसको सिर झुकाती है और बायीं ओर के दरवाजे की ओर संकेत करती है। आउन धीरे से निकल जाता है और धीरे धीरे बर्निक के दरवाजे पर धक्का देता है। थोड़ी देर रुक कर फिर थपथपाता है। क्राफ कमरे के बाहर आता है, हाथ में हैट और बगल में कुछ पत्र दबाये हुए।]

क्राफ—अरे आप दरवाजा खटखटा रहे थे ?

आउन—मिस्टर बर्निक ने मुझे बुलाया था।

क्राफ—हां बुलाया तो था लेकिन वे इस समय मिल नहीं सकते। उन्होंने मुझे आपसे यह कहने को भेजा है।

आउन—आप को भेजा है ? फिर भी मैं तो यही चाहता...

क्राफ—मुझे भेजा है आपसे वही कह देने के लिए जो कि वह कहते। आप मजदूरों में शनिवार को जो भाषण दिया करते हैं उसे बन्द कर दीजिये।

आउन—सचमुच ? मैंने तो समझा था कि मैं अपने खाली समय का जैसा चाहूं वैसा उपयोग कर सकता हूं।

क्राफ—लेकिन अपने समय का ऐसा उपयोग न कीजिए कि काम करने के घंटों में मजदूर निकम्मे बन जायें। उस शनिवार को आप मजदूरों को बता रहे थे कि हमारी नई मशीनों से मजदूरों की क्या हानि होगी और कारखाने के नये तरीकों से भी उनकी क्या हानि होगी। किस लिये आप यह सब करते हैं ?

आउन—समाज की भलाई के लिये मैं यह करता हूं।

क्राप—बड़ो विचित्र बात है ! मिस्टर वर्निक कहते हैं कि यह समाज को छिन्न-भिन्न करना है ।

आउन—मेरा समाज मिस्टर वर्निक का समाज नहीं है, मि० क्राप ! मजदूर-संघ के सभापति की हैसियत से मेरा कर्तव्य ..

क्राप—आपका सब से पहला और मुख्य कर्तव्य मिस्टर वर्निक के जहाज के कारखाने के फोरमैन की हैसियत से है और सब से पहले आपको अपना कर्तव्य पूरा करना है उस समाज के प्रति जिसे कहते हैं 'वर्निक एण्ड कम्पनी' । यही हम लोगों में से हर एक का कर्तव्य है । खैर, अब आप समझ गये कि मिस्टर वर्निक को आप से क्या कहना था ?

आउन—मिस्टर वर्निक इस तरह न कहते, मिस्टर क्राप ! लेकिन मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि इसका कारण क्या है । ये कमबख्त अमेरिकन जहाज वाले ! वे यहाँ भी वैसे ही सब काम कराना चाहते हैं जैसे कि उनके यहाँ होता है, और यह...

क्राप—हाँ, हाँ, लेकिन मैं इन सब बातों में नहीं पड़ूँगा । अब आप जान गये कि मि० वर्निक का क्या मतलब है और यह काफ़ी है । कृपा कर कारखाने में जाइये, शायद वहाँ आपकी ज़रूरत होगी । थोड़ी देर में मैं भी आऊँगा—क्षमा करना देवियो ! [ब्रियों की ओर सिर झुका कर बगीचे के बाहर सड़क की ओर निकल जाता है । आउन धीरे से दाहिनी ओर जाता है । ररलुन्त जो इन बातों के होते हुए भी जो धीरे धीरे हुई हैं पड़ता रहा है, क्रिताव समाप्त होने पर उसे जोर से बन्द करता है ।]

ररलुन्त—अच्छा, देवियो ! यह समाप्त हो गई ।

मिसेज़ रुम्मेल—कैसी शिक्षाप्रद कहानी है !

मिसेज़ हाल्ट—और उससे कैसा सुन्दर उपदेश मिलता है !

मिसेज बर्निक—ऐसी पुस्तक वास्तव में कुछ विचार करने का मसाला देती है ।

रारलुन्त—बिलकुल ठीक । दुर्भाग्य से हम लोगों की आँखों से जो पत्रों और पत्रिकाओं में गुजरता है उसका यह बिलकुल प्रतिकूल पहलू सामने उपस्थित कर देती है । किसी भी बड़े समाज के ऊपरी चमकीले आवरण को देखिये और विचार कीजिये कि उसके नीचे क्या छिपा हुआ है । वास्तव में शून्य और सड़ा हुआ, अगर मैं ऐसा कह सकूँ । कोई भी नैतिक नींव नहीं—उसके भीतर । वास्तव में आज के बड़े बड़े समाज ऊपर से पुती हुई कब्र के समान हैं ।

मिसेज हाल्त—आपने कैसी सच्ची बात कही है !

मिसेज रुम्मेल—और उदाहरण के लिये हमें दूर जाने की जरूरत नहीं । इन अमेरिकन नाविकों को देखिये जो इस समय यहाँ ठहरे हुए हैं ।

रारलुन्त—ओह ! अच्छा हो कि मैं मनुष्यता की इस हीन श्रेणी की बाबत कुछ न कहूँ । लेकिन ऊँची श्रेणी में भी—वहाँ क्या दशा है ? सभी ओर सन्देह और बेचैनी की हवा ; मस्तिष्क कभी भी शान्त नहीं; और उसके सारे व्यवहार में अस्थिरता की झलक । देखिये वहाँ पारिवारिक जीवन कितना नीचे पहुँच चुका है । गम्भीर से गम्भीर सत्यों की ओर भी सन्देह की दृष्टि से देखने के लज्जाहीन आचरण को तो देखिये ।

दीना—[अपना काम न छोड़कर, सिर न उठाती हुई] लेकिन क्या वहाँ बहुत से बड़े कार्य भी नहीं होते ?

रारलुन्त—बड़े काम ? मैं तो समझ नहीं सका ।

मिसेज हाल्त—[विस्मय से] अरे दीना ! क्या कहती हो ?

मिसेज रुम्बेल—[उसी सॉस में] दीना ! तुम ऐसी बातें कैसे ... ?

रारलुन्त—मैं तो समझता हूँ कि शायद ही हम लोगों के लिये यह अच्छी बात होगी अगर ऐसे “ बड़े काम ” यहाँ भी होने लगें । नहीं, वास्तव में तो हम लोगों को बहुत अनुग्रहीत होना चाहिये कि इस देश में जैसी बातें हैं वैसी ही हैं । यह सच है कि यहाँ हमारे विचार में भी काई जम जाती है, क्या कहूँ, लेकिन हम लोग भरसक जहाँ तक हम लोगों से बन पड़ता है उसे अलग करने की कोशिश करते हैं । आवश्यक बात तो है समाज को पवित्र रखना, देवियों—उन सभी बुरे प्रयोगों को दूर रखना जिन्हें कि यह अशान्त युग हम लोगों पर डाल देने का प्रयत्न कर रहा है ।

मिसेज हाल्ट—दुःख की बात तो यह है कि हवा में ही ऐसा बहुत कुछ आ गया है ।

मिसेज रुम्बेल—हाँ, आपको मालूम है पारसाल हम लोग अपने नजदीक रेलवे चल जाने से बाल बाल बचे थे ।

मिसेज बर्निक—ओह ! मेरे पति ने इसे रोक दिया ।

रारलुन्त—ईश्वर की दया, मिसेज बर्निक । आपको विश्वास करना चाहिये कि आपके पति इस आयोजन को अस्वीकार करते समय किसी महान शक्ति के उपकरण थे ।

मिसेज बर्निक—और इस पर भी पत्रों में उनके विरुद्ध ऐसी भयानक बातें कही गईं ! लेकिन हम लोग आपको धन्यवाद देना बिल्कुल भूल गईं मिस्टर रारलुन्त ! वास्तव में हम लोगों के लिये अपने इतने समय का व्यय करना आपके लिये मित्रता से बढ़कर बात है ।

रारलुन्त—बिल्कुल नहीं, आज तो छुट्टी है और...

मिसेज़ बर्निक—हाँ, लेकिन तब भी यह त्याग है मिस्टर रारलुन्त ।

रारलुन्त—[अपनी कुर्सी नज़दीक खींचते हुए] इसकी बात न कहिये श्रीमती जी । क्या आप सभी किसी बड़े उद्देश्य के लिये त्याग नहीं कर रही हैं ? और कितनी इच्छा से ! कितनी प्रसन्नता से ! यह अभाग्य पतित प्राणी, जिनकी मुक्ति के लिये हम लोग इतना प्रयत्न कर रहे हैं, इनकी तुलना युद्ध क्षेत्र में आहत सैनिकों से की जा सकती है । आप महिलायें दया की स्नेहमयी बहिनें हैं, जो इन चोट खाये हुआओं के लिये मरहम तैयार करती हैं, इनके घावों पर धीरे से पट्टी रखती हैं, उन्हें भर देती हैं, उन्हें चंगा कर देती हैं...

मिसेज़ बर्निक—यह वास्तव में विस्मयजनक विभूति है—सब चीजों को इस सुन्दर रूप में देखना ।

रारलुन्त—बहुत कुछ तो यह मनुष्य के स्वभाव में रहता है, लेकिन बहुत कुछ प्राप्त भी किया जा सकता है । जरूरत इस बात की है कि सभी बातों को जीवन के चरम-लक्ष्य के प्रकाश में देखा जाय । [मर्या से] आप क्या कहती हैं, मिस बर्निक ? आपको अनुभव नहीं हुआ है कि जब से आपने अपने को स्कूल के कामों में लगा दिया है आप किसी दृढ़ भूमि पर खड़ी हो गई हैं ?

मर्या—वास्तव में क्या कहना चाहिये मैं समझ नहीं पाती । ऐसा समय भी आता है जब स्कूल के कमरे में रहते हुए मुझे ऐसी इच्छा होती है मैं कि बहुत दूर अशान्त समुद्र पर होती ।

रारलुन्त—यह केवल प्रलोभन मात्र है, प्रिय, मिस

बर्निक ! ऐसे अशान्त कर देने वाले अतिथियों के लिये आपको अपने मस्तिष्क का द्वार बन्द कर देना चाहिये । “अशान्त समुद्र” से, मैं समझता हूँ, आप का मतलब है बाहरी दुनिया की अशान्त लहरों से, जहाँ बहुतों का जीवन नष्ट हो जाता है । बाहर जीवन का जो प्रवाह तेजी से बह रहा है, क्या उसे आप इतना महत्व देती हैं ? केवल वहाँ सड़क पर देखिये । वे जा रहे हैं, धूप में चलते हुए, पसीने से तर-बतर, अपनी छोटी मोटी समस्याओं से परेशान । नहीं, निस्सन्देह इसमें बहुत कुछ हमें मिला है जो यहाँ इस ठंडक में बैठ सकते हैं और उस ओर अपनी पीठ फेर सकते हैं जहाँ से अशान्ति की लहर चलती है ।

मर्था—हाँ, मुझे कोई सन्देह नहीं कि आप बिल्कुल सच कह रहे हैं ।

रारलुन्त—और किसी ऐसे घर में—ऐसे सुन्दर पवित्र घर में, जहाँ पारिवारिक जीवन अपना सब से सुन्दर रूप दिखलाता है, जहाँ शान्ति और सामञ्जस्य का राज्य है । [मिसेज़ बर्निक से] आप क्या सुन रही हैं मिसेज़ बर्निक ?

मिसेज़ बर्निक—[जो बर्निक के कमरे के दरवाजे की ओर देख रही हैं] वे सब वहाँ बड़े जोर से बातें कर रहे हैं ।

रारलुन्त—कोई विशेष बात हो रही है ?

मिसेज़ बर्निक—पता नहीं । इतना सुनाई पड़ता है कि मेरे पति के साथ कोई और है ।

[हिल्मा त्वांसे, सिगार पीते हुए, दाई ओर के दरवाजे पर दोख पड़ता है, लेकिन एकदम खड़ा हो जाता है, खियों को देख कर]

हिल्मा—अरे, क्षमा कीजिये—[लौट जाने के लिये घूमता है]

मिसेज़ बर्निक—नहीं, हिल्मा ! आ जाओ । हम लोगों को बाधा नहीं होगी । क्या कुछ चाहते हो ?

हिल्मा—नहीं, मैं केवल यहाँ आना चाहता था । नमस्कार देवियो । [मिसेज़ बर्निक से] क्यों, क्या फल रहा ?

मिसेज़ बर्निक—किस बात का ?

हिल्मा—कारस्टें ने एक सभा करने की नोटिस दी है । तुम्हें पता है ?

मिसेज़ बर्निक—उन्होंने ? किस लिये ?

हिल्मा—अरे, वही रेलवे की बेहूदगी फिर...

मिसेज़ बर्निक—बेचारे कारस्टें, इस विषय में और फजीहत चाहते हैं क्या ?

रारलुन्त—लेकिन आप इसे कैसा समझते हैं मिस्टर त्वांसे ? आप जानते हैं कि पारसाल मिस्टर बर्निक ने बिल्कुल स्पष्ट कह दिया था कि वे यहाँ रेलवे नहीं चाहते ।

हिल्मा—हाँ, यही मैं भी सोचता था । लेकिन मैं उनके विश्वस्त क्लार्क क्राप से मिला, और उसने कहा कि रेलवे का आयोजन फिर प्रारम्भ हो गया है और मिस्टर बर्निक यहाँ के तीन पूंजीपतियों से राय ले रहे हैं ।

मिसेज़ रुम्मेल—ओ ! मैं ठीक सोच रही थी कि मैंने अपने पति की बोली सुनी है ।

हिल्मा—ठीक, मिस्टर रुम्मेल भी इसमें हैं और इसी तरह हैं, सान्स्तात् और माइकेल विजलान्त—जिन्हें लोग “ सन्त माइकेल ” कहते हैं ।

रारलुन्त—उफ ..

हिल्मा—क्षमा कीजिये मिस्टर रारलुन्त !

मिसेज़ बर्निक—उस समय जब कि सब कुछ सुन्दर और शान्त था...

हिल्मा—ख़ैर, जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मुझे कोई भी विरोध नहीं, उनके इस भंभट के मोल लेने में। कुछ भी हो, इसमें कुछ मनोरंजन तो होगा।

रारलुन्त—मैं समझता हूँ ऐसे मनोरंजन के बिना भी हम लोगों का काम चल सकता है।

हिल्मा—यह तो अपनी तबियत पर निर्भर है। कुछ लोगों का स्वभाव ऐसा होता है कि वे कभी कभी युद्ध की भी इच्छा करते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से देहात की जिन्दगी में वैसी बात बहुत नहीं मिलती, और सब के पास ऐसी शक्ति नहीं कि—[जिस पुस्तक को रारलुन्त पढ़ रहा था उसके पन्ने इधर उधर उलटता है] “समाज की सेविका स्त्री।” ऐं! यह क्या ऊटपटांग है?

मिसेज़ बर्निक—हिल्मा, ऐसी बात न करो। यह निश्चय है कि तुमने यह किताब नहीं पढ़ी।

हिल्मा—नहीं, और इसे पढ़ने की इच्छा भी मैं नहीं करता।

मिसेज़ बर्निक—शायद आज तुम्हारी तबियत अच्छी नहीं है।

हिल्मा—नहीं, अच्छी नहीं

मिसेज़ बर्निक—शायद कल रात नींद नहीं आई।

हिल्मा—नहीं, सोता तो रहा लेकिन बड़ी बुरी तरह। कल शाम को स्वास्थ्य के लिये मैं घूमने चला गया था। क्लब पहुँच कर घूमना समाप्त कर दिया। इसके बाद ध्रुव-यात्रा की एक किताब पढ़ता रहा। प्रकृति के साथ जो युद्ध कर रहे हैं, उन मनुष्यों के साहसपूर्ण कार्यों में, कोई ऐसी बात है जो बल प्रदान करती है।

मिसेज रुम्मेल—लेकिन उसने आप की कोई बड़ी भलाई नहीं की है मिस्टर त्वांसे !

हिल्मा—नहीं, वास्तव में उसने नहीं की । मैं सारी रात अध-नींद में इधर उधर उलटता पलटता रहा और सपना देखा कि मुझे एक भयंकर जन्तु खदेड़ रहा है ।

ओलाफ—[जो कि इस बीच में बगीचे से ऊपर सीढ़ियों पर आ गया है] मामा ! आपको भयंकर जन्तु खदेड़ रहा था ?

हिल्मा—मैंने सपना देखा, तुम वहरे ! तुम अब भी उसी नकली धनुष से खेल रहे हो । एक असली बन्दूक क्यों नहीं ले लेते ?

ओलाफ—चाहता तो हूँ लेकिन ..

हिल्मा—ऐसी चीज़ में कुछ समझ की बात भी है । हर बार जब फायर करते हो, कुछ जोश आता है ।

ओलाफ—और तब मैं भालू मार सकूंगा मामा ! लेकिन दादा दिलावेंगे नहीं ।

मिसेज वर्निक—उसके दिमाग में ऐसी बात न भरो, हिल्मा !

हिल्मा—हूँ, वाह ! आज कल हम लोग कैसी अच्छी नस्ल तैयार कर रहे हैं ! है न यही बात ? पुरुषत्व और साहस के बारे में हम लोग बातें तो बड़ी लम्बी चौड़ी हाँकते हैं, लेकिन सच तो यह है कि इस समस्या के साथ हम लोग केवल खेल करते हैं; वास्तव में कोई दृढ़ विचार नहीं होता, उस कठोर नियमन के लिये जो पुरुषत्व के साथ खतरे के सामने खड़े होने का साहस पैदा करता है । मेरी तरफ निशाना लगा कर न खड़े हो, उद्धत ! कहीं छूट न जाय ।

ओलाफ—नहीं मामा, इसमें तीर नहीं है ।

हिल्मा—तुम नहीं जानते कि उसमें कुछ नहीं है—शायद कुछ हो, कुछ हो भी सकता है। हटा लो, कह रहा हूँ। तुम अमेरिका क्यों नहीं गये, अपने पिता के किसी जहाज पर ? तब तुम भैंसे का शिकार देखे होते या रेड-इण्डियनों के साथ कोई युद्ध।

मिसेज़ बर्निक—अरे रे ! हिल्मा...

ओलाफ़—मैं तो यह बहुत पसन्द करता मामा। और तब शायद मैं मामा जान और मौसी लोना को भी देख पाता।

हिल्मा—हूँ, पगले !

मिसेज़ बर्निक—बगीचे में फिर जाओ ओलाफ़।

ओलाफ़—मैं सड़क पर भी बाहर जा सकता हूँ माँ ?

मिसेज़ बर्निक—हाँ, लेकिन बहुत दूर नहीं, खयाल रहे।

[ओलाफ़ बगीचे में दौड़ जाता है और दरवाज़े के बाहर चहारदीवारी के उस पार निकल जाता है।]

रारलुन्त—ऐसी कल्पना की बातें लड़के के दिमाग में नहीं भरनी चाहिए मिस्टर त्वांसे !

हिल्मा—नहीं, निश्चय ही बहुतेरे अभागों की तरह उसे भी घर का बँधुआ होना है।

रारलुन्त—लेकिन ऐसी यात्रा आप ही क्यों नहीं कर लेते ?

हिल्मा—मैं ? अपने इस बिगड़े हुए स्वास्थ्य से ? यह सच है कि मैं इस बात का अधिक विचार नहीं करता। उसे अलग रख कर भी, आप भूल रहे हैं कि हर एक व्यक्ति के उस समाज के प्रति कुछ कर्तव्य होते हैं, जिस समाज का वह एक अंग होता

है। आदर्श का झंडा ऊँचा रखने के लिये भी तो किसी को यहाँ होना चाहिये। ओह ! फिर शोर कर रहा है।

स्त्रियाँ—कौन शोर कर रहा है ?

हिल्मा—मैं ठोक नहीं जानता। वे इतना शोर कर रहे हैं कि उसका बड़ा बुरा असर मेरे नाड़ी-जाल पर पड़ रहा है।

मिसेज़ रुम्मेल—शायद मेरे पति हैं मिस्टर त्वांसे ! लेकिन आप को याद रखना चाहिये कि उनकी बड़ी-बड़ी सभाओं में ऐसे ही बोलने की आदत है।

रारलुन्त—मैं दूसरों को भी धीमी बोली वाला नहीं कह सकता।

हिल्मा—हे ईश्वर, नहीं, किसी भी ऐसी बात पर नहीं जो उनकी थैली छूती हो। सभी बातें यहाँ समाप्त होती हैं—इन्हीं रुपये पैसे के नीचे विचार में। ओफ़ !

मिसेज़ बर्निक—किसी भी हालत में यह उससे तो अच्छा है जब कि सभी बातें समाप्त होती थीं छिछोड़पन में।

मिसेज़ लीज—क्या यहाँ भी ऐसी बुरी बातें होती थीं ?

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, होती थीं, वास्तव में मिसेज़ लीज ! आप अपने को भाग्यवान समझ सकती हैं कि तब आप यहाँ नहीं थीं।

मिसेज़ हाल्त—हाँ समय तो बदल गया है, निस्सन्देह। जब मैं उस समय की याद करती हूँ जब मैं लड़की थी...

मिसेज़ रुम्मेल—ओह ! पन्द्रह या चौदह वर्ष पीछे जाने को ज़रूरत नहीं। ईश्वर क्षमा करे...कैसी जिन्दगी हम लोगों ने बिताई ! नृत्य-मण्डल हुआ करता था और संगीत-मण्डल...

मिसेज बर्निक—और नाट्य-समाज भी मुझे खूब याद है ।

मिसेज रुम्मेल—हाँ, वहीं आपका नाटक खेला गया था मिस्टर त्वांसे ।

हिल्मा—[कमरे के पीछे से] क्या, क्या ?

रारलुन्त—मिस्टर त्वांसे का एक नाटक ?

मिसेज रुम्मेल—हाँ, आपके आने के बहुत पहले मिस्टर रारलुन्त । और वह केवल एक ही बार खेला गया ।

मिसेज लीञ्ज—वह वही नाटक तो नहीं था, जिसके बारे में आपने कहा था मिसेज रुम्मेल, कि उसमें आपने किसी युवक की प्रेमिका का स्थान लिया था ।

मिसेज रुम्मेल—[रारलुन्त की ओर देखती हुई] मैंने ? मुझे बिल्कुल याद नहीं है मिसेज लीञ्ज । लेकिन हाँ यह याद है कि बड़ा आनन्द और आमोद-प्रमोद रहता था ।

मिसेज हाल्त—हाँ, मुझे भी याद है । ऐसे भी घर थे जहाँ एक ही सप्ताह में दो दो बार बड़ी बड़ी दावतें हो जाती थीं ।

मिसेज लीञ्ज—हाँ ठीक है और मैंने सुना है कि एक घूमने वाली नाटक-मण्डली यहाँ भी आई थी !

मिसेज रुम्मेल—हाँ, सब से बुरी बात तो यही हुई ।

मिसेज हाल्त—[बेचैन हो कर] उहँ !

मिसेज रुम्मेल—आपने नाटक-मण्डली कहा ? मुझे तो कुछ ऐसा नहीं याद है ।

मिसेज लीञ्ज—जी हाँ, और मैंने यह भी सुना है कि वे सब तरह की गन्दी चीजें दिखलाते थे । इन कहानियों में सच्चाई कितनी है ?

मिसेज़ रुम्मेल—उनमें कुछ भी सत्यता नहीं है मिसेज़ लीज़ !

मिसेज़ हाल्त—दीना, प्यारी, वह कपड़ा मुझे देना ।

मिसेज़ बर्निक—[उसी समय] प्यारी दीना, ज़रा जाकर कैटराइन से कहवा लाने के लिये कह दो !

मर्था—मैं तुम्हारे साथ चलूंगी दीना !

[मर्था और दीना उधर वाले बायें दरवाजे से निकल जाती हैं]

मिसेज़ बर्निक—[उठती हुई] थोड़ी देर के लिये क्षमा चाहती हूँ । मैं सोचती हूँ बाहर कहवा पिया जाय । [बरामदे में बाहर जाकर एक मेज ठीक करने का प्रयत्न करने लगती है । शरलुन्त दरवाजे पर खड़ा होकर उससे बातें करने लगता है । हिल्मा बाहर बैठकर सिगरेट पीने लगता है ।]

मिसेज़ रुम्मेल—[धीरे से] हे ईश्वर ! मिसेज़ लीज़, तुमने मुझे कैसा डरा दिया !

मिसेज़ लीज़—मैंने ?

मिसेज़ हाल्त—हाँ, लेकिन याद है तुम्हीं ने यह बात चलाई थी, मिसेज़ रुम्मेल ।

मिसेज़ रुम्मेल—मैंने ? ऐसी बात कैसे कह रही हो मिसेज़ हाल्त ? मेरे मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला ।

मिसेज़ लीज़—लेकिन इसका मतलब क्या है ?

मिसेज़ रुम्मेल—किस बात पर यह सब कहने लगीं ? सोचो । यह नहीं देखा कि दीना कमरे में थी ?

मिसेज़ लीज़—दीना ? कोई बुरी बात है इसमें ?

मिसेज़ हाल्त—और इसी घर में भी ! तुम्हें यह मालूम नहीं था कि वे मिसेज़ बर्निक के भाई थे ?

मिसेज़ लीज़—उनके बारे में क्या है ? मुझे तो इसकी कोई खबर नहीं । तुम जानती हो मैं इस जगह से बिल्कुल अपरिचित हूँ ।

मिसेज़ रुम्मेल—यह भी नहीं सुना ? उहँ ! [अपनी लड़की से] हिल्दा ! प्यारी, थोड़ी देर बगीचे में घूम आओ ।

मिसेज़ हास्त—तुम भी जाओ नेन्ता । और जब बेचारी दीना लौटे उस पर दया रखना । [हिल्दा और नेन्ता बगीचे में चली जाती हैं ।]

मिसेज़ लीज़—अब कहो क्या बात है मिसेज़ बर्निक के भाई के बारे में ?

मिसेज़ रुम्मेल—उसकी भयंकर बदनामी तुम नहीं जानतीं ?

मिसेज़ लीज़—भयंकर बदनामी ? मिस्टर त्वांसे की ?

मिसेज़ रुम्मेल—हे ईश्वर ! नहीं । मिस्टर त्वांसे उनके चचेरे भाई हैं मिसेज़ लीज़ । मैं उनके खास भाई की बात कह रही हूँ ।

मिसेज़ हास्त—उस बदमाश त्वांसे की...

मिसेज़ रुम्मेल—उसका नाम जान था । वह अमेरिका भाग गया ।

मिसेज़ हास्त—आपको जानना चाहिये उसको भागना पड़ा ।

मिसेज़ लीज़—तो फिर यह बदनामी उसके वार में है ?

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, ऐसी ही बात थी—कैसे कहूँ उसे ? कोई ऐसी बात उसके और दीना की मा के बीच में हुई थी । मुझे तो सब याद है जैसे कल की बात हो । जान त्वांसे तब बुढ़िया मिसेज़ बर्निक के आफिस में था; कारस्टें बर्निक अभी अभी पेरिस से आया था । अभी उसकी शादी भी नहीं हुई थी ।

मिसेज़ लीज़—अच्छा, लेकिन बदनामी क्या थी ?

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ तो तुम्हें पता होना चाहिये कि उस समय म्वालेर कम्पनी इस कस्बे में अभिनय कर रही थी। जाड़े के दिन थे...

मिसेज़ हाल्त—और दोर्फ़ अभिनेता और उसकी स्त्री उस मण्डली में थे। कस्बे के सभी युवक उसके मोह में पड़ गये थे।

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, पता नहीं वे उसे सुन्दरी कैसे समझते थे। अच्छा तो दोर्फ़ एक रात देर कर के घर लौटा...

मिसेज़ हाल्त—और विल्कुल अचानक...

मिसेज़ रुम्मेल—और उसने देखा... नहीं, वास्तव में यह बात कोई कहना नहीं चाहेगा।

मिसेज़ हाल्त—अरे, उसे कुछ भी तो नहीं देख पड़ा क्योंकि दरवाजा भीतर से बन्द था।

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, यही बात मैं कहने जा रही थी। उसे दरवाजा बन्द मिला। और फिर सोचो इस बात को—जो पुरुष घर के भीतर था उसे खिड़की से कूदना पड़ा।

मिसेज़ हाल्त—बड़ी ऊँची खिड़की से।

मिसेज़ लीज—और वह मिसेज़ बर्निक का भाई था ?

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, वही था।

मिसेज़ लीज—और इसी लिए वह अमेरिका भाग गया ?

मिसेज़ हाल्त—हाँ, आप विश्वास कीजिए कि उसे भागना पड़ा।

मिसेज़ रुम्मेल—क्योंकि पीछे ऐसी एक और बात मालूम हुई जोकि उतनी ही बुरी थी। ज़रा सोचो तो—वह कैश बाक्स में से मनमाना रुपया निकालता रहा था।

मिसेज हास्त—लेकिन आप जानती हैं, किसी को इसका निश्चय नहीं था, मिसेज रुम्मेल ! शायद इस अक़वाह में कोई सचाई न भी रही हो ।

मिसेज रुम्मेल—अजी, मुझे कहना पड़ा ! क्या यह बात सारे कस्बे को मालूम नहीं थी ? इसके फल स्वरूप मिसेज वर्निक दीवालिया नहीं हो गई ? परन्तु ईश्वर क्षमा करे, मैं तो ऐसी बातों के फैलाने में सहयोग नहीं दे सकती ।

मिसेज हास्त—खैर, जो भी हो, मिसेज दोर्फ को वह रुपया नहीं मिला, क्योंकि वह

मिसेज लीज—हां, तो फिर दीना के मा बाप का क्या हुआ ?

मिसेज रुम्मेल—हां, दोर्फ अपनी स्त्री और लड़की दोनों को असहाय छोड़ कर चल दिया । लेकिन श्रीमती जी यहाँ साल भर तक ठहरी रहीं । ज़रा यह धृष्टता तो देखिए । इसमें तो शक नहीं कि रंग-मंच पर फिर कभी आने का साहस उन्होंने नहीं किया, लेकिन वे कपड़े धोने और सीने का काम करती रहीं ।

मिसेज हास्त—और फिर उन्होंने एक नृत्यशाला का आयोजन किया ।

मिसेज रुम्मेल—स्वभावतः यह आयोजना सफल नहीं हुई । कौन मा बाप ऐसी स्त्री पर विश्वास करके अपनी सन्तान को उसके यहां नृत्य-कला का अभ्यास करने के लिए भेजता ? लेकिन यह शाला बहुत दिन तक नहीं रही । श्रीमती को काम करने का अभ्यास तो था नहीं, उनके फेफड़े में कोई गड़बड़ी होगई और उसी से उनकी मृत्यु हो गई ।

मिसेज लीज—कैसी भयंकर लज्जा का विषय है !

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ अब समझ सकती हो वर्निक परिवार के लिये यह कितना कष्टकर था। उनके भाग्य सूर्य में यह काला धब्बा है—जैसा कि रुम्मेल ने एक बार कहा था। अब इस घर में यह चर्चा कभी न कीजियेगा मिसेज़ लीज़ !

मिसेज़ हाल्ट—और ईश्वर के लिये उनकी वहिन का भी कभी जिक्र न चलाइएगा।

मिसेज़ लीज़—तो मिसेज़ वर्निक की कोई वहिन भी है ?

मि० रुम्मेल—थी; भाग्य से उनका सम्बन्ध अब हमेशा के लिये मिट गया। वह भी विलक्षण व्यक्ति थी। क्या आपको विश्वास होगा कि उसने अपना बाल कटाकर छोटा कर लिया था ? और खराब मौसम में वह पुरुषों जैसे जूते पहन कर बाहर निकलती थी !

मिसेज़ हाल्ट—और जब उसका वह भाई, वह बदमाश, निकल गया और जब स्वभावतः सारे क्रस्वे में उसकी चर्चा हो रही थी—तब जानती हो उसने क्या किया ? वह भी उसके पास अमेरिका चली गई।

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, लेकिन वह बदनामी तो याद करो जो उसने अमेरिका जाने के पहले उठाई थी, मिसेज़ हाल्ट !

मिसेज़ हाल्ट—चुप, चुप, उसके बारे में कुछ न कहो।

मिसेज़ लीज़—उसने भी बदनामी कमाई ?

मिसेज़ रुम्मेल—मैं समझती हूँ आप को यह भी सुन लेना चाहिये मिसेज़ लीज़ ! मिस्टर वर्निक की अभी अभी बेत्ती त्वांसे से शादी तै हुई थी और वे दोनों हाथ में हाथ डाले उसकी चाची के कमरे में यह सन्देश देने गये...

मिसेज़ हाल्ट—माल्डूम है बेत्ती त्वांसे के मां बाप मर चुके थे ?

मिसेज़ रुम्मेल—वस अकस्मात् लोना हेस्सल ने अपनी कुर्सी से उठकर बेचारे शरीक कारस्तेन बर्निक की कनपटी पर ऐसा धूसा दिया कि उसका सिर चक्कर खा गया ।

मिसेज़ लीञ्ज—मुझे विश्वास है कि ऐसी बात तो मैंने कभी नहीं सुनी ।

मिसेज़ हाल्ट—यह बिल्कुल सच है ।

मिसेज़ रुम्मेल—और तब उसने अपना मामान बांधकर अमेरिका की राह ली ।

मिसेज़ लीञ्ज—मैं समझती हूँ कि उसकी नज़र बर्निक पर लगी थी, अपने ही लिए ।

मिसेज़ रुम्मेल—वास्तव में उसकी नज़र थी । उसने कल्पना कर रखी थी कि जब वह पेरिस से लौट आवेगा तो उसके साथ उसकी जोड़ी अच्छी रहेगी ।

मिसेज़ हाल्ट—उसका ऐसा सोचना ! यह विचार ! कारस्तेन बर्निक...ऐसा समझदार पुरुष और विनम्रता की मूर्ति...पूरा सज्जन—सभी स्त्रियों का प्यारा...

मिसेज़ रुम्मेल—और इसके साथ हो साथ ऐसा अच्छा युवक, मिसेज़ हाल्ट ! . इतना सदाचारी !

मिसेज़ लीञ्ज—लेकिन उस मिस हेस्सल ने अमेरिका में जाकर क्या किया ?

मिसेज़ रुम्मेल—सुनो । यह समझो कि इसके ऊपर (जैसा कि मेरे पति ने एक बार कहा था) एक पर्दा पड़ा है, जिसे उठाने के समय किसी को भी आगा पीछा करना पड़ेगा ।

मिसेज़ लीञ्ज—तुम्हारा मतलब ?

मिसेज रूमेल—इस परिवार से अब उसका कोई सम्बन्ध नहीं है, जैसा कि आप अनुमान कर सकती हैं, लेकिन इतना तो सारा कम्बा जानता है कि उसने वहाँ रुपये के लिये शराबखानों में गाना गाया है...

मिसेज हास्त—और गुले आम व्याख्यान दिये हैं...

मिसेज रूमेल—और कोई पागलपन की किताब भी छपवायी है !

मिसेज लीज—क्या सचमुच ?

मिसेज रूमेल—हाँ, यह सच है कि लोना हेस्सल बर्निक परिवार के सौभाग्य सूर्य पर धब्बा है। अब तो आपको सभी कहानी मालूम हो गई मिसेज लीज ! मुझे विश्वास है कि अगर आप को सावधान करने की जरूरत न होती तो मैं कभी भी यह कुछ न कहे होती।

मिसेज लीज—आः ! आप निश्चिन्त रहिये मैं बहुत सावधान रहूँगी। लेकिन यह बेचारी लड़की दीना दोर्फ ! मुझे उसके लिये सचमुच दुःख है।

मिसेज रूमेल—अजी वास्तव में उसके लिए यह सौभाग्य की बात थी। सोचो तो अगर उसका पालन पोषण ऐसे मा बाप द्वारा हुआ होता तो उसके लिये यह अच्छा होता ? हां, हम लोगों ने भरसक उसके लिए कुछ उठा नहीं रक्खा, और हम लोगों में से हर एक ने और जहां तक हो सका उसे अच्छी सलाह दी। और अन्त में मिस बर्निक ने उसे इस घर में बुला लिया।

मिसेज हास्त—लेकिन वह हमेशा ऐसी लड़की रही है जिसे वश में रखना बड़ा कठिन रहा है। यह स्वाभाविक ही है, उसके आगे जो बुरे उदाहरण थे। ऐसी लड़की हम लोगों की लड़कियों की तरह नहीं हो सकती; उसपर तो दया रखनी पड़ेगी।

मिसेज रुम्मेल्—चुप, चुप, वह आ रही है। [ऊंची आवाज में] हाँ, दीना वास्तव में चतुर लड़की है। अरे ! तुम हो दीना ? हम लोग अब इन वस्तुओं को हटा रही हैं।

मिसेज हाल्ट—प्यारी दीना ! तुम्हारा कहवा कैसा बढ़िया महक रहा है। ऐसे बढ़िया कहवे का एक प्याला...

मिसेज बर्निक—[बरामदे से पुकारती हुई] आप लोग यहाँ बाहर आयेंगी ? [इस बीच में मथा और दीना ने नौकरानी की सहायता से कहवा का प्रबन्ध कर दिया है। सर्भा स्त्रियाँ बरामदे में बैठती हैं और दीना की ओर बड़ी कृपा डिल्लाती हुई बातें कर रही हैं। थोड़ी देर में दीना कमरे में आती है और अपनी सिलाई देखती है।]

मिसेज बर्निक—[कहवे की मेज़ से] दीना ! तुम नहीं...?

दीना—नहीं, धन्यवाद ! [सिलाई करने बैठ जाती है। मिसेज बर्निक और रारलुन्त थोड़ी सा बातें करते हैं, थोड़ी देर बाद वह कमरे के भीतर आता है, किसी वहाने से मेज़ तक जाता है और धीरे धीरे दीना से बातें करने लगता है।]

रारलुन्त—दीना !

दीना—कहिये।

रारलुन्त—तुम औरों के साथ बैठना क्यों नहीं चाहती ?

दीना—जब मैं कहवा लेकर आई तो मुझे उस नशागन्तुक स्त्री के चेहरे से मालूम हो गया कि वे सब मेरे बारे में बातें कर रही थीं।

रारलुन्त—लेकिन तुमने यह भी नहीं देखा कि वह बाहर तुम्हारी ओर कितनी उदार थीं।

दीना—यही बात तो मैं नहीं सह सकती।

रारलुन्त—दीना ! तुम बहुत ही हठी हो !

दीना—हाँ ।

रारलुन्त—लेकिन क्यों ?

दीना—क्योंकि मेरा स्वभाव ही ऐसा है ।

रारलुन्त—तुम अपना स्वभाव बदलने का प्रयत्न न कर सकोगी ?

दीना—नहीं ।

रारलुन्त—क्यों नहीं ?

दीना—[उसकी ओर देखती हुई] क्योंकि मैं 'अभागे पतित प्राणियों' में से एक हूँ । समझे ?

रारलुन्त—शर्म आनी चाहिये दीना !

दीना—और ऐसी ही मेरी मा थी ।

रारलुन्त—किसने तुम्हें यह सब बतलाया ?

दीना—किसी ने नहीं । ऐसा वे कभी नहीं करतीं । क्यों नहीं करतीं ? वे मेरे साथ ऐसा दिखावे का व्यवहार करती हैं—मानो वे सोचती हैं कि मैं टुकड़े टुकड़े होकर गिर पड़ूँगी...अगर वे... ओह ! मैं इस उदारता को कितनी घृणा करती हूँ !

रारलुन्त—प्रिय दीना ! मैं खूब समझता हूँ कि तुम यहाँ दबी हुई सी अनुभव करती हो लेकिन ..

दीना—हाँ अगर मैं यहाँ से निकल कर दूर चली जाऊँ, मैं अपना रास्ता स्वयं अच्छी तरह निकाल लूँगी, अगर मैं ऐसे जीवों के बीच में न रहूँ जो कि...

रारलुन्त—कैसे हैं ?

दीना—इतने शिष्ट और इतने सदाचारी ।

रारलुन्त—लेकिन दीना तुम्हारा मतलब यह तो नहीं है ।

दीना—आप अच्छी तरह से जानते हैं कि मैं किस मतलब से कह रही हूँ । हिल्दा और नेत्ता यहाँ रोज आती हैं, मेरे लिये सुन्दर उदाहरण बन कर मुझे दिखालाई जाने के लिये । मैं इतनी सुशील कभी नहीं बन सकती जैसी कि वे हैं । मैं वह बनना भी नहीं चाहती । अगर मैं केवल यहाँ से निकल सकूँ, तो मैं बढ़ कर किसी योग्य हो सकूंगी ।

रारलुन्त—लेकिन तुम्हारा मूल्य बहुत है, प्यारी दीना ।

दीना—उससे मुझे यहाँ क्या लाभ है ?

रारलुन्त—यहाँ से निकल जाना, तुम कहती हो ? तुम यह गंभीरता के साथ कह रही हो ?

दीना—मैं यहाँ एक दिन भी न ठहरती, अगर आपके कारण न होता ।

रारलुन्त—बताओ दीना ! तुम क्यों मेरे साथ रहना पसन्द करती हो ?

दीना—क्योंकि आप मुझे इतनी सुन्दर शिक्षा देते हैं ।

रारलुन्त—सुन्दर ? जो कुछ ज़रा सा मैं तुम्हें बता देता हूँ उसे तुम सुन्दर समझती हो ?

दीना—जी हाँ । और शायद, सच तो यह है कि आप मुझे कुछ सिखलाते नहीं, लेकिन जब मैं आप की बातें सुनती हूँ, मैं सुन्दर स्वप्न देखने लगती हूँ ।

रारलुन्त—जब तुम किसी चीज़ को सुन्दर कहती हो तो तुम्हारा असल मतलब क्या होता है ?

दीना—मैंने कभी इस पर विचार नहीं किया ।

रारलुन्त—तब अब विचार कर लो । सुन्दर चीज़ तुम किसे समझती हो ?

दीना—सुन्दर चीज़ वह है जो महान है और बहुत दूर...

रारलुन्त—हूँ, दीना ! तुमसे मेरा इतना गहरा सम्बन्ध है, प्यारी !

दीना—बस इतना ही ?

रारलुन्त—तुम खूब जानती हो कि जितना मैं स्वयं कह सकता हूँ उससे कहीं अधिक तुम मुझे प्रिय हो ।

दीना—अगर मैं हिल्मा या नेत्ता होती तो आप इस बात को अन्य लोगों पर प्रकट होने देने में डरते नहीं ।

रारलुन्त—ओफ़, दीना, बाध्य होकर मुझे कितनी बातों का ख्याल करना पड़ता है, इसकी तनिक भी जानकारी तुम्हें नहीं है । जब किसी पुरुष को भाग्य से समाज के सदाचार का स्तम्भ बन कर रहना पड़ता है, तो उसे हर बात में अत्यन्त सतर्क रहना ज़रूरी हो जाता है । अगर मुझे इतना भी विश्वास होता कि लोग मेरे उद्देश्य को ठीक ठोक समझ सकेंगे...लेकिन इसकी कोई चिन्ता नहीं—तुम्हारे उत्थान में अवश्य सहायता करनी होगी । दीना यह हम लोगों की शर्त है कि जब मैं आऊँ, जब परिस्थितियाँ मुझे इस बात का अवसर दें कि मैं आऊँ और कहूँ “मैं तुम्हारा पाणि-ग्रहण करना चाहता हूँ” तब तुम मेरा हाथ पकड़ लोगी और मेरा पत्नीत्व स्वीकार करोगी । इसका वचन देती हो, दीना ?

दीना—हाँ ।

रारलुन्त—धन्यवाद, धन्यवाद, क्योंकि अपने हृदय में ओह, दीना ! मैं तुम्हें बहुत प्रेम करता हूँ । चुप—कोई आ रहा

है। दीना ! मेरी खातिर उन सबके पास बाहर चली जाओ ।
[वह कहवा की मेज पर बाहर चली जाती है । उसी समय रुम्मेल,
सान्स्तात और विजलान्त वर्निक के कमरे से निकलते हैं—उनके पीछे
कागज़ात का एक पुलिन्दा लिये हुए वर्निक है ।]

वर्निक—हाँ, तो यह बात निश्चित होगई ?

विजलान्त—मैं भी यही आशा करता हूँ कि तै हो गई ।

रुम्मेल—यह निश्चित होगया वर्निक ! आप जानते हैं नारवे
के निवासी की बात इतनी दृढ़ होती है जितनी कि पहाड़ को
चट्टान ।

वर्निक—कोई भी कमजोरी न दिखावे, कोई भी इस बात से
न हटे, चाहे हम लोगों का कितना भी विरोध हो ।

रुम्मेल—या तो हम लोग निर्द्वन्द्व खड़े ही रहेंगे या गिरेंगे तो
साथ ही ।

हिल्मा—[बरामदे से भीतर आते हुए] क्या गिरेंगा ? अगर मैं
पूछ सकूँ, क्या वही रेलवे की स्कीम तो नहीं है जो गिरने जा
रही है ?

वर्निक—नहीं, बल्कि वह आगे बढ़ रही है ।

रुम्मेल—बड़ी तेज़ी से, मिस्टर त्वांसे !

हिल्मा—[नजदीक पहुंचकर] सचमुच ?

रारलुन्त—क्या बात है ?

मिसेज़ वर्निक—[बरामदे के दरवाजे पर] कारस्तें, प्रिय, यह
क्या है जो...

वर्निक—प्यारी बेटी, इसमें तुम्हें क्या दिलचस्पी हो सकती
है ? [उन तीन पुरुषों से] हिस्सेदारों की सूची हमें बना लेनी चाहिये

और जितना ही जल्दी हो सके उतना ही अच्छा। हम लोगों के चार नाम तो, स्पष्ट है, ऊपर रहेंगे ही। समाज में हमारा जो स्थान है, उससे हम लोगों का यह कर्तव्य हो जाता है कि इस कार्य में जहां तक सम्भव हो सके हम सब से आगे रहें।

सान्स्तात्—यह तो स्पष्ट है मिस्टर बर्निक !

रुम्मेल्—यह आयोजना अवश्य सफल होगी बर्निक ! मैं शपथ लेता हूं, जरूर होगी।

बर्निक—अरे ! मुझे असफलता की जरा भी आशंका नहीं है। हम लोगों को केवल यह करना है कि हम जी तोड़कर काम करें, हर एक अपनी परिचित परिधि में। और अगर हम लोग यह बात दिखला सकें कि समाज की प्रत्येक श्रेणी में यह स्कीम लाभदायक समझी जाती है तो यह बात स्पष्ट मालूम होती है कि हमारे म्यूनि-सिपल कारपोरेशन को भी अपने हिस्से का धन देना होगा।

मिसेज़ बर्निक—कारस्तें, यहाँ आओ और हम लोगों को भी बतलाओ...

बर्निक—प्यारी, यह एक ऐसी बात है जिसका सम्बन्ध स्त्रियों से बिल्कुल नहीं है।

हिल्मा—तो अन्त में आप इस रेलवे स्कीम का अनुमोदन करने जा रहे हैं ?

बर्निक—हाँ, स्वभावतः।

रारलुन्त—लेकिन पारसाल मिस्टर बर्निक...

बर्निक—पारसाल दूसरी बात थी। तब तो समुद्र के किनारे किनारे लाइन बनाने की बात थी।

विजलान्त—जो कि बिल्कुल व्यर्थ होता मिस्टर रारलुन्त, क्योंकि वहां तो हमारे स्टीमर चलते ही हैं।

सान्स्तात—और क़ज़ूल ही उस में ख़र्च भी बहुत बैठता ।

रुम्मेल—हाँ, और उस से क़स्वे का बहुत सा अहित हुआ होता ।

वर्निक—मुख्य बात तो यह थी कि उससे समष्टि रूप से समाज का लाभ न होता । इसीलिये मैंने उसका विरोध किया, जिसका फल यह हुआ कि फिर भीतरी लाइन बनाने का निश्चय हुआ ।

हिल्मा—हाँ, लेकिन वह इस देहात के कस्बों को तो न छू पायेगी ?

वर्निक—यहाँ तो आखिर आही जायेगी, क्योंकि हम लोग यहां एक ब्रांच लाइन बनाने जा रहे हैं ।

हिल्मा—हाँ ? तो एक नई स्कीम...

रुम्मेल—यह उपयोगी स्कीम है न ?

रारलुन्त—हूँ !

विजलान्त—यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि हमारे इस देहात की प्रकृति ने रचना ही इस प्रकार की है जैसे वह उसे एक ब्राञ्च लाइन के योग्य बनाना चाहती रही हो ।

रारलुन्त—क्या सचमुच आपका यह मतलब है मिस्टर विजलान्त ?

वर्निक—हाँ, मुझे मान लेना चाहिये कि इसमें जैसे अदृश्य का हाथ था जिसकी प्रेरणा से इस साल वसन्त में रोज़गार के लिये मुझे एक यात्रा करनी पड़ी जिसमें कि मुझे एक ऐसी घाटी पार करनी पड़ी जहां मैं पहले कभी नहीं पहुंचा था । मेरे मस्तिष्क में यह बात अकस्मात झलक उठी कि यही स्थान है जहां से हम लोग अपने कस्बे तक एक ब्रांच लाइन ले जा सकते हैं । मैंने आस

पास की सर्वे एक इंजीनियर से करा ली और यह अन्दाज़न हिसाब है खर्च का । अब ऐसी कोई बात नहीं जो बाधा डाल सके ।

मिमेज़ बर्निक—[जो और ब्रियों के साथ अब भी बगमदे के दरवाज़े पर है] लेकिन प्यारे, कारस्ते, यह विचार भी कि तुम हम लोगों से यह सब छिपाओगे...

बर्निक—प्यारी बेत्ती, मैं जानता था कि परिस्थिति को तुम ठीक ठीक समझ न सकोगी । और इसके अतिरिक्त आज के पहले यह बात मैंने किसी भी जीव से नहीं कही । लेकिन अब वह मुहूर्त आ गया है और अब हमें खुलकर और शक्ति भर काम करना चाहिये । हाँ, अगर इसके लिये मुझे अपना सब कुछ भी खतरे में डालना पड़े, तो भी अब यह काम कर डालना है ।

रुमेल—और हम लोग आपका साथ देंगे, बर्निक ! आप हम लोगों का विश्वास करें ।

रारलुन्त—तो आप वास्तव में हम लोगों को यह वचन देते हैं कि इस उपक्रम से इतना लाभ होगा ?

बर्निक—हाँ, निस्सन्देह । सोचिये अपने सारे समाज की दशा को ऊपर उठा देने में इस से कितनी सहायता मिलेगी ! उन बड़े बड़े जंगलों का विचार कीजिये जहाँ हम लोगों की अबाध गति हो जायेगी । उन महँगे खनिज पदार्थों का विचार कीजिए जिनकी खानों को काम में लाना सम्भव हो जायगा । और नदी के एक के बाद एक जलप्रपात ! हमारा रोज़गार और हमारी उत्पादक शक्ति कितनी बढ़ जायेगी !

रारलुन्त—बाहरी दुनिया की नीचता को यहाँ आने का सरल रास्ता मिल जायगा, इसका डर आपको नहीं है ?

बर्निक—नहीं, इस बारे में अपना संशय दूर कर डालिये

मिस्टर रारलुन्त । आज कल हमारे छोटे रोजागार का छत्ता ऐसे नैतिक आधार पर स्थित है, ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये—हम सबने इसके लिए उद्योग किया है, अगर मैं कह सकूँ और हम लोग अपनी अपनी शक्ति भर यह करते ही रहेंगे । आप मिस्टर रारलुन्त अपनी दैवी विभूतियों का परिचय देते रहेंगे हमारे स्कूल में और घरों में । हम अनुभवी कारबारी आदमी समाज के आधार रहेंगे, इसकी भलाई के उपकरणों को अधिक से अधिक विस्तार देकर । और हमारी महिलाएं—हाँ, देवियों पास चली आओ, आप लोग यह सुनना चाहेंगी—हमारी नारियाँ—मेरा मतलब है हमारी स्त्रियाँ और लड़कियाँ—तुम महिलाओ शान्त भाव से दया और दान के सेवा कार्य में लगी रहोगी, और अपने सगे सम्बन्धियों को सहायता और सुख पहुँचाती रहोगी जैसे कि प्यारी बेत्ती और मर्था मुझे और ओलाफ को... [चारों ओर देख कर] आज ओलाफ कहाँ है ?

मिसेज वर्निक—छुट्टी के दिन उसे घर रख लेना असम्भव है ।

वर्निक—सन्देह नहीं वह समुद्र के किनारे फिर पहुँच गया है । देखना वहाँ कुछ हानि उठाकर तब वह मानेगा ।

हिल्मा—वाह ! प्रकृति की शक्तियों के साथ थोड़ा सा खेल लेना...

मिसेज रुम्मेल—मिस्टर वर्निक, आपका परिवार-प्रेम सराहनीय है ।

वर्निक—परिवार ही समाज का आधार है । अच्छा परिवार, सज्जन और विश्वासपात्र मित्र, परिवार की छोटी किन्तु शान्त परिधि जहाँ अशान्त की छाया नहीं पड़ती—[क्राप दाहिनी ओर से भीतर आता है, अक़बार और पत्र लिये हुए ।]

क्राप—विदेशी डाक है मिस्टर बर्निक और न्यूयार्क का एक तार ।

बर्निक—[तार लेकर] अरे—“इण्डियन गर्ल” के मालिकों के यहाँ से...

रुम्मेल्—डाक आगई ? ओ, तब क्षमा करें मुझे ।

विजलान्त—मुझे भी !

सान्स्तात—सलाम मिस्टर बर्निक !

बर्निक—सलाम, याद रहे हम लोगों को एक सभा करना है आज शाम को पांच बजे ।

तीनों व्यक्ति—हाँ, निस्सन्देह । [दाहिनी ओर से सब निकल जाते हैं]

बर्निक—[जोकि तार पढ़ चुका है] यह सब ओर से अमेरिकन है । बिल्कुल चोट पहुँचाने वाला ।

मिसेज़ बर्निक—प्यारे कारस्ते, क्या है यह ?

बर्निक—यह देखो क्राप, पढ़ो तो ।

क्राप—[पढ़ता है] “ कम से कम मरम्मत करो । ‘इण्डियन गर्ल’ ज्योंही चलने के लायक हो जाय भेज दो, साल का उपयोगी समय । ” मुझे कहना पड़ता है कि...

रारलुन्त—देखते हो इन बड़े बड़े, प्रसिद्ध समाजों की दशा, इनका व्यवहार ?

बर्निक—ठीक कहते हो, मनुष्य की ज़िन्दगी का ख्याल एक क्षण के लिये भी नहीं—जहाँ फ़ायदा उठाने की बात आ जाती है । [क्राप से] ‘इण्डियन गर्ल’ चार पांच दिन के भीतर समुद्र में चल सकता है ?

क्राफ—हाँ, अगर मिस्टर विजलान्त इस बीच में “ पाम ट्री ” का काम बन्द कर देना स्वीकार कर लें ।

बर्निक—हूँ ! वे नहीं मानेंगे । कृपा कर पत्रों को पढ़ जाओ । और सुनो, तुमने ओलाफ को समुद्र के किनारे देखा था ?

क्राफ—नहीं मिस्टर बर्निक । [बर्निक के कमरे में चला जाता है ।]

बर्निक—[तार को फिर देखते हुए] इन भलेमानुसों को आठ आदमियों की जान जोखिम में डालने की जरा भी परवाह नहीं है ।

हिल्मा—अजी खतरे का सामना करना सच्चे नाविक का काम है । अपने और अगाध सागर के बीच केवल एक पतले तख्ते को देख कर हृदय में कैसा साहस भर जाता होगा !

बर्निक—क्या हमारे समाज में भी कोई ऐसा जहाज का मालिक है जो ऐसी बात से सहमत हो सके ? कोई ऐसा नहीं कर सकता—कोई भी नहीं । [ओलाफ को घर में आता हुआ देखकर] वाह, ईश्वर की कृपा, यह आ रहा है सकुशल और सुरक्षित । [ओलाफ मछली बछाने की वंती लिए बगीचे से दौड़ता हुआ बरामदे में आता है ।]

ओलाफ—हिल्मा मामा, मैं वहाँ गया था, स्टीमर देखा ।

बर्निक—तुम किनारे पर फिर गये थे ?

ओलाफ—मैं थोड़ी दूर तक नाव में गया था । लेकिन देखिये तो हिल्मा मामा, एक सर्कस की कम्पनी किनारे उतरी है । घोड़े हैं, और जानवर हैं और बहुत से आदमी हैं ।

मिसेज़ रुम्मेल्—नहीं, क्या हमारे यहाँ सर्कस सचमुच होगा ?

रारलुन्त—हमारे यहाँ ? मुझे तो यह देखने की कोई भी इच्छा नहीं है ।

मिसेज़ रुम्मेल—नहीं, मेरा मतलब यह नहीं था कि हम लोगों के लिए, लेकिन ..

दीना—मैं तो सर्कस देखना बहुत पसन्द करूंगी ।

ओलाफ—मैं भी ।

हिल्मा—तुम बेवकूफ हो । यह भी कोई देखने की चीज़ है ? केवल चालाकी । हाँ, वह देखने योग्य दृश्य होता होगा जब अमेरिका के जंगलों में लोग जंगली घोड़ों को काबू में करके उन्हें सरपट दौड़ाते हैं । लेकिन इन छोटे कस्बों में ..

ओलाफ—[मर्था का कपड़ा खींचता हुआ] देखो, मर्था बूआ ! वह देखो आ रहे हैं ।

मिसेज़ हाल्ट—हे ईश्वर ! आ तो रहे हैं ।

मिसेज़ लीज—छीः कैसे भयंकर जीव हैं !

[बहुत से आदमी और बहुत सा सामान सड़क से जाता हुआ देख पड़ता है]

मिसेज़ रुम्मेल—ये ढोंगियों के गरोह हैं । उस स्त्री को देखो भूरे लिवास में मिसेज़ हाल्ट ! वह जिसके कन्धे पर बेग है ।

मिसेज़ हाल्ट—हाँ, देखो वह उसे अपने ऊपर लादे है । मैं अनुमान करती हूँ, मैनेजर की स्त्री है ।

मिसेज़ रुम्मेल—और वह देखो—मैनेजर है, कोई सन्देह नहीं । डाकू जैसा मालूम पड़ता है । उसकी ओर न देखो, हिल्मा !

मिसेज़ हाल्ट—तुम भी नहीं, नेत्ता ।

ओलाफ—माँ, मैनेजर हम लोगों को सलाम कर रहा है ।

बर्निक—क्या ?

मिसेज़ बर्निक—क्या कह रहे हो, बच्चा !

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, अरे वह स्त्री भी हम लोगों को सलाम कर रही है ।

बर्निक—यह तो बहुत सूखा सलाम है ।

मर्था—[अकस्मात् बोल उठती है] अरे !

मिसेज़ बर्निक—क्या है मर्था ?

मर्था—कुछ नहीं, कुछ नहीं, अकस्मात् मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे...

ओलाफ—[प्रसन्नता से उड़लता हुआ] देखो, देखो, और सब वे हैं, घोड़ों और जानवरों के साथ । और वे अमेरिकावाले भी हैं, ' इण्डियन गर्ल ' के सभी मल्लाह...[ढोल और कई तरह का बाजा और गाना सुनाई पड़ता है ।]

हिल्मा—[अपने कानों में उंगली डाल कर] उफ़ ! उफ़ ! उफ़ !

रारलुन्त—महिलाओ, हम लोगों को सामने से ज़रा हट जाना चाहिए । ऐसी बातों से हम लोगों को कुछ नहीं करना है । चलिये फिर अपने काम पर चलें ।

मिसेज़ बर्निक—पर्दा गिरा देना आप पसन्द करेंगे ?

रारलुन्त—हाँ, मैं भी ठीक यही चाहता था ।

[स्त्रियाँ सिलाई की मेज़ पर बैठती हैं, रारलुन्त बरामदे का दरवाजा बन्द करता है और दरवाजे पर और खिड़कियों पर पर्दा डाल देता है । कमरे में अँधेरा हो जाता है ।]

ओलाफ—[पर्दे के बाहर झाँक कर] माँ, मैनेजर की स्त्री फक्वारे के पास खड़ी होकर अपना मुँह धो रही है ।

मिसेज़ बर्निक—क्या, बीच बाजार में ?

मिसेज़ रुम्मेल—और दिन दोपहर को !

हिल्मा—खैर मुझे तो कहना पड़ेगा कि अगर मुझे रेगिस्तान में चलना पड़ता और मुझे एक कुआँ मिल जाता तो मुझे विश्वास है मैं यह विचार करने न बैठता कि यह...उफ़ ! यह भयावह बाज़ा !

रारलुन्त—तब तो यही अवसर है पुलिस के बाधा देने का ।

बर्निक—नहीं, नहीं, विदेशियों पर कठोर नहीं होना चाहिये । इन लोगों में सुरुचि के भाव सचमुच बहुत गहराई तक नहीं हैं जो मर्यादा की सीमा में रखते हैं । मान लो उनका व्यवहार भद्देपन का होता है तो हम लोगों को क्या ? भाग्य से उथल पुथल को यह लहर जो सत्य और नियम के ऊपर से होकर निकल जाना चाहती है, हमारे समाज में अभी नहीं आ सकी है । लेकिन यह क्या ? [लोना हेस्सल दार्ई और के दरवाजे से तेज़ी के साथ भीतर आती है ।]

स्त्रियाँ—[धीरे से डरी हुई आवाज़ में] सर्कस को स्त्री ! मैनेजर की स्त्री !

मिसेज़ बर्निक—हे ईश्वर, यह क्या ?

मर्था—[उछल पड़ती है] ओह...

लोना—कैसी हो बेत्ती प्यारी ? कैसी हो मर्था ? सब कुशल है, जीजा ?

मिसेज़ बर्निक—[चिल्ला कर] लोना !

बर्निक—[पीछे हटते हुए] निश्चय ही ...

मिसेज़ हाल्त—हे ईश्वर ! हम लोगों पर कृपा हो ।

मिसेज़ रुम्मेल—यह सम्भव नहीं ।

हिल्मा—अरे, ओफ़ !

मिसेज़ बर्निक—लोना ! क्या सचमुच तुम हो ?

लोना—हाँ सचमुच ? तबियत चाहे तो मेरे गले से लग सकती हो ।

हिल्मा—ओफ़ !...ओफ़ !...

मिसेज़ बर्निक—और यहाँ इस तरह से लौटना...

बर्निक—और इस रूप में प्रकट होने की इच्छा...

लोना—प्रकट होना ? प्रकट होना किस रूप में ?

बर्निक—मेरा मतलब है सर्कस में ।

लोना—अरे, अरे, जीजा पागल हो गये हो क्या ? तुम समझते हो कि मैं सर्कस वालों में हूँ ? नहीं । इसमें सन्देह नहीं कि मैंने बहुत से काम किए हैं, लेकिन...

मिसेज़ रुम्मेल—हूँ ... ऊँ ...

लोना—लेकिन सर्कस की घुड़दौड़ का प्रयत्न मैंने कभी नहीं किया ।

बर्निक—तब तुम सर्कस के साथ नहीं हो ?

मिसेज़ बर्निक—ईश्वर को धन्यवाद है ।

लोना—नहीं । हम लोग और भले आदमियों की तरह इसी जहाज़ से आए हैं । हाँ, दूसरे दर्जे से आये, हैं, लेकिन हम लोगों को इसकी आदत है ।

मिसेज़ बर्निक—“हम लोग” तुमने कहा ?

बर्निक—[एक कदम आगे बढ़ कर] ‘हम लोग’ से तुम्हारा मतलब किनसे था ?

लोना—मैं और बच्चा ।

स्त्रियाँ—[उद्वेग से] बच्चा ?

हिल्मा—क्या ?

रारलुन्त—तो मैं जरूर कहूँगा कि ..

मिसेज़ बर्निक—तुम्हारा मतलब क्या है लोना ?

लोना—मेरा मतलब जान से है; मेरा कोई दूसरा बच्चा नहीं है—जहाँ तक मुझे पता है—तुम्हारे जान के सिवाय ।

मिसेज़ बर्निक—जान ?

मिसेज़ रुम्मेल—[दबी हुई ज़बान में मिसेज़ लीज़ से] भागा हुआ भाई ।

बर्निक—[संकोच से] जान तुम्हारे साथ है ?

लोना—हाँ, है । मैं उसके बिना, निश्चित है, नहीं आती । इतने हैरान क्यों देख पड़ते हो ? और तुम यहाँ अँधेरे में बैठी सफेद चीज़ें क्या सी रही हो । परिवार में कोई ग़मी तो नहीं हुई ?

रारलुन्त—श्रीमती जी ! इस समय आप ' पतित नारी सहायक संघ ' में हैं ।

लोना—[अर्ध खर में अगने ही से] क्या ? ये सुन्दर शान्त आकृति को महिलायें क्या पतित हो सकती हैं ?

मिसेज़ रुम्मेल—खैर, वास्तव में...

लोना—ओह ! मैं समझी । और यह तो जरूर मिसेज़ रुम्मेल हैं । और वह मिसेज़ हाल्ट भी बैठी हैं । पिछली बार जब हम मिली थीं तब से हम तीनों कुछ बूढ़ी ही हुई हैं । लेकिन देखो भले मानसो " पतित नारी सहायक संघ " का काम एक दिन और रहने दो, इससे उनकी कोई बड़ी हानि नहीं होगी । इस तरह के आनन्द का अवसर...

रारलुन्त—घर आना सदैव आनन्द का ही अवसर नहीं होता ।

लोना—वास्तव में ? खैर पादरी साहब आप अपनी बाइबिल कैसे पढ़ते हैं ?

रारलुन्त—मैं पादरी नहीं हूँ ।

लोना—तब आप हो जायेंगे । लेकिन वाह ! आपका यह सदाचार द्योतक वस्त्र कुछ बेढब महक रहा है जैसे कफ़न । मैं यह बतला दूँ कि मुझे खुली हवा में रहने की आदत है ।

बर्निक—[अपना ललाट पोंछते हुए] हाँ, यहाँ सचमुच हवा की कमी है ।

लोना—ज़रा ठहरिये । हम लोग ज़रा इस अंधेरे से तो निकलें । [पद एक ओर खींच देती है] बच्चा के आने के समय यहाँ दिन का प्रकाश होना चाहिये । बच्चा अभी नहा-धो कर आ रहा है ।

हिल्मा—ओफ़ !

लोना—[बरामदे का दरवाज़ा और बिडकियाँ खोलती हुई] वह होटल में स्नान कर रहा होगा । जहाज़ पर बड़ा गन्दा हो गया था ।

हिल्मा—उफ़ !... उफ़ !...

लोना—उफ़ ! क्या यह 'हिल्मा' की ओर संकेत करती है और दूसरों से पूछती है] हिल्मा नहीं है ? क्या यह अब भी 'उफ़ उफ़' करता हुआ यहाँ मक्खो मार रहा है ?

हिल्मा—[“उफ़” कहता हुआ] मैं मक्खी नहीं मारता—मेरे स्वास्थ्य की दशा मुझे यहाँ रक्खे है ।

रारलुन्त—तब, देवियो मैं नहीं समझता...

लोना—[जिसने ओलाफ को देख लिया है] यह तुम्हारा बच्चा है बेत्ती ? आओ वाबू एक मिट्टी तो दो । या तुम अपनी भद्दी बुढ़ी मौसी से डरते हो ?

रारलुन्त—[अपनी किताब बगल में दबा कर] मैं समझता हूँ हममें से कोई भी अब कुछ और अधिक काम करना नहीं चाहता—किसी की इच्छा नहीं है । मैं समझता हूँ अब हम लोग कल मिलेंगे ।

लोना—[जब कि दूसरे उठ उठकर छुट्टी लेते हैं] हाँ, कल ठीक रहेगा । मैं यहीं हूँगी ।

रारलुन्त—आप ? क्षमा कीजिये मिस हेस्सल, हमारे समाज में आप क्या करेंगी ?

लोना—पादरी साहब ! मैं इसमें साफ और ताज़ी हवा लादूँगी ।

दूसरा अंक

[दृश्य—वही कमरा । मिसेज़ बर्निक मेज़ पर अकेली बैठ कर सिलाई कर रही हैं । बर्निक हैट और दस्ताने पहने दाईं ओर से भीतर आता है—उसके हाथ में छड़ी है ।]

मिसेज़ बर्निक—बड़ी जल्दी आगये, कारस्ते ?

बर्निक—हाँ, एक आदमी को मैंने मिलने के लिए बुलाया है ।

मिसेज़ बर्निक—[हिचकिचा कर] हाँ, शायद जान यहाँ फिर आ रहा है ।

बर्निक—मैंने 'एक आदमी' कहा था । और स्त्रियों को आज क्या हो गया ?

मिसेज़ बर्निक—मिसेज़ रुम्मेल और हिल्दा को आने का समय नहीं मिला ।

बर्निक—ओ ! क्या उन्होंने कोई बहाना किया ?

मिसेज़ बर्निक—हाँ, उन्होंने कहलाया है कि उन्हें घर पर ही बड़ा काम है ।

बर्निक—स्वभावतः, और सब भी नहीं आ रही हैं ।

मिसेज़ बर्निक—हाँ, आज किसी बात से वे रुक गई हैं ।

बर्निक—मैं यह पहले ही जानता था । ओलाफ़ कहाँ है ?

मिसेज़ बर्निक—मैंने उसे दोना के साथ थोड़ी दूर बाहर जाने दिया है ।

बर्निक—हूँ। वह बड़ी चंचल है। देखा तुमने कल वह जान के साथ कैसी घुलमिल रही थी।

मिसेज बर्निक—लेकिन प्यारे कारस्ते, तुम जानते हो दीना इस सम्बन्ध की कोई भी बात नहीं जानती।

बर्निक—लेकिन किसी भी हालत में जान के पास तो इतनी समझ होनी चाहिये थी कि उसकी ओर बहुत ध्यान न देता। मैं उसके चेहरे से समझ सकता था, विजलान्त क्या सोच रहा था।

मिसेज बर्निक—[सिलाई का कगडा अपनी जाँघ पर रखती हुई] कारस्ते। कुछ अनुमान कर सकते हो उसके यहाँ आने का अभिप्राय क्या होगा ?

बर्निक—सुनो, उसका वहाँ एक खेत है, और मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि उसमें लाभ नहीं हो रहा है। उसने कल यह कहा था कि उन दोनों को मजबूर होकर 'सेकिंड क्लास' में सफर करना पड़ा।

मिसेज बर्निक—हाँ मुझे भी डर है कोई ऐसी ही बात जरूर होगी। लेकिन लोना का भी उसके साथ आना—जरा सोचो तो वह तुम्हारा इतना भयंकर अपमान करने के बाद भी

बर्निक—आह उस पुराने इतिहास को न याद करो।

मिसेज बर्निक—इस समय मैं उसको भुला कैसे सकूँगी ? जो भी हो, वह मेरा तो भाई है। फिर भी उसके लिये मैं परेशान नहीं हूँ, लेकिन तुम्हारी कठिनाइयों का ख्याल करके जो इस कारण से उठ खड़ी होगी, कारस्ते, मुझे तो बड़ा डर है कि

बर्निक—डर ? किस बात का ?

मिसेज बर्निक—क्या यह सम्भव नहीं कि तुम्हारी माँ का रुपया चुरा लेने के अभियोग में वे उसे जेलखाने में डाल दे ?

बर्निक—कैसी मूर्खता की बात करती हो ? कौन साबित कर सकता है कि रुपया चोरी गया था ?

मिसेज बर्निक—दुर्भाग्य से सारा कस्बा जानता है। तुम्हें याद है तुमने खुद कहा ..

बर्निक—मैंने कुछ नहीं कहा। कस्बा इस बारे में कुछ नहीं जानता। सारी बात गप्प छोड़कर और कुछ नहीं थी।

मिसेज बर्निक—तुम कितने उदार हो कारस्टें !

बर्निक—कृपा कर अब उन बातों की याद न कराया करो। तुमको पता नहीं उन बातों को उठाकर तुम मुझे कितनी तकलीफ देती हो। [इयर-उपर टहलता है और तब छड़ी एक ओर दूर फेंक देता है।] और अब उनका वापिस आना, ठीक इसी समय जब कि मेरे लिये यह विशेष रूप से आवश्यक है कि मैं सब ओर से दृढ़ रहूँ, नगरवासियों और अखबारों में मेरा सम्मान बना रहे ! हमारे लेखक यहाँ के बारे में रिपोर्ट दूसरे अखबारों में भी भेजेंगे। मैं उनका स्वागत अच्छी तरह से करूँ या बुरी तरह से, इस सबकी आलोचना होगी, चारों ओर चर्चा होगी। वे उन पुरानी कहानियों को ले उड़ेंगे—जैसा कि तुम करती हो। हमारे जैसे समाज में—[मेज पर अपने दस्ताने फेंक देता है] और यहाँ कोई भी जीव ऐसा नहीं जिससे मैं यह सब कह सकूँ और जिससे सहायता पा सकूँ।

मिसेज बर्निक—कोई भी नहीं, कारस्टें ?

बर्निक—नहीं, यहाँ कौन है ? और ठीक इसी समय उनका मेरे यहां आना ! निस्सन्देह किसी न किसी रूप में वे कोई बदनामी पैदा कर देंगे। विशेष कर लोना ऐसे लोगों से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध होना हर हालत में अभिशाप है।

मिसेज़ बर्निक—मेरे तो यह बस की बात नहीं है...

बर्निक—क्या बस की बात नहीं है ? उनका तुम्हारे कुटुम्बी होना ? यह तो सच है ।

मिसेज़ बर्निक—और मैंने उन्हें बुलाया भी नहीं ।

बर्निक—हाँ, ठीक है, और कहो “ मैंने उन्हें नहीं बुलाया, मैंने उन्हें पत्र नहीं लिखा, मैंने उनके सिर का बाल पकड़कर उन्हें नहीं खींचा । ” यह सब मुझे भली भाँति याद हो गया है ।

मिसेज़ बर्निक—[रोती हुई] तुम्हें इतना कठोर नहीं होना चाहिये ..

बर्निक—हाँ ठीक है, रोओ, जिसमें कि पड़ोसियों को यह मसाला भी मिले । यह बेहूदगी छोड़ो, बेत्ती । जाओ, बाहर बैठो, शायद कोई भीतर आ जाय । मैं नहीं समझता कि तुम यह चाहती हो कि लोग इस घर की मालकिन को लाल आँखें किये देखें ! यह एक अच्छी बात होगी अगर इस बात के बारे में...वह देखो कोई आ रहा है । [दरवाजे पर खटखटाने की आवाज़ होती है ।] चले आओ [मिसेज़ बर्निक सिलाई का सामान लेकर बगोचे में चली जाती है । दाईं ओर से आउन का प्रवेश]

आउन—नमस्कार, मिस्टर बर्निक !

बर्निक—नमस्कार । शायद आप जानते होंगे मैंने आपको किस लिये बुलाया है ?

आउन—कल मिस्टर क्राप ने मुझसे कहा था कि आप इस बात से नाराज़ हैं...

बर्निक—मैं कारखाने के सारे प्रबन्ध से नाराज़ हूँ आउन ! काम काफ़ी जल्दी नहीं हो रहा है । “ पाम ट्री ” को अब तक समुद्र पर चलते होना चाहिये था, इसके बहुत पहले ।

मिस्टर विजलान्त रोज़ इसकी शिकायत कर जाते हैं। उनके ऐसे आदमी के साथ साभेदारी बड़ा मुश्किल काम है।

आउन—“ पाम ट्री ” परसों समुद्र में जा सकता है।

बर्निक—खैर, लेकिन अमेरिकन जहाज़ ‘ इण्डियन गर्ल ’ के बारे में क्या हो रहा है, जो कि यहाँ पांच सप्ताह से पड़ा है और जो...

आउन—अमेरिकन जहाज़ ? मैं तो समझता था कि सबसे पहले हम लोगों को जी तोड़ मेहनत कर आपका ही जहाज़ ठीक कर देना है।

बर्निक—मैंने आपको यह समझने का कोई कारण नहीं दिया। आपको जहाँ तक सम्भव था अमेरिकन जहाज़ के काम के साथ भी बढ़ते जाना चाहिये था, लेकिन आपने यह नहीं किया।

आउन—उसका पेंदा बिल्कुल सड़ गया है मिस्टर बर्निक ! जितना ही हम लोग चकती जोड़ते हैं, उतना ही और निकलता जाता है।

बर्निक—यह कोई कारण नहीं है। क्राप ने सभी बातें मुझे बतला दी हैं। जो नई मशीनें दी गई हैं उनसे काम लेना आप को नहीं आता, या आप शायद उनसे काम लेना चाहते ही नहीं।

आउन—मिस्टर बर्निक ! मैं पचास से ऊपर पहुँच चुका और लड़कपन से ही मुझे पुराने तरीके से काम करने की आदत है।

बर्निक—आजकल उस तरह से काम हम लोग नहीं करा सकते। ऐसा मत सोच लो आउन कि मैं मुनाफ़े के लिये ऐसा कह रहा हूँ। मुझे उसकी ज़रूरत नहीं है भाग्य से, लेकिन मैं भी समाज के बन्धन में हूँ, कारबार का भी खयाल करना होगा

जिसमें सबके ऊपर मैं हूँ, विकास में भी मुझे अगुआ होना पड़ेगा नहीं तो उन्नति होगी ही नहीं ।

आउन—मैं भी विकास का स्वागत करता हूँ मिस्टर बर्निक !

बर्निक—हाँ, अपनी ही संकीर्ण परिधि में, केवल मज्जदूरों के लिये । मैं खूब जानता हूँ तुम कितने भयंकर आन्दोलनकारी हो । आप व्याख्यान देते हैं, लोगों में जोश पैदा करते हैं, लेकिन विकास का जब कोई निश्चित उदाहरण सामने आता है, जैसे हमारी नई मशीनें, आप उनका उपयोग करना नहीं चाहते, आप डरने लगते हैं ।

आउन—हाँ मैं वास्तव में डरता हूँ मिस्टर बर्निक । मुझे डर है उन लोगों के लिये जिनके मुँह की रोटी छिन जायगी इन मशीनों से । जनाव, समाज की आप जो चिन्ता करते हैं, उसके बारे में बातें करने का तो आपको बड़ा शौक है, लेकिन मैं तो सोचता हूँ कि समाज का भी कुछ कर्तव्य है । विज्ञान और पूँजीवाद मज्जदूरों के भीतर इन आविष्कारों को घुसाने का साहस क्यों कर रहे हैं, जब तक कि समाज एक पीढ़ी को इनके उपयोग के योग्य बना नहीं देता ?

बर्निक—तुम बहुत पढ़ते और सोचते हो, आउन ! लेकिन इससे तुम्हारा कोई लाभ नहीं होता, इसीलिये तुम अपनी स्थिति से असन्तुष्ट हो जाते हो

आउन—ऐसी बात नहीं है मि० बर्निक ! लेकिन मैं यह देखना सहन नहीं कर सकता कि एक एक कर के अच्छे मज्जदूर कारखाने से निकाल दिये जायँ—इन मशीनों के कारण भूखों मरने के लिये ।

बर्निक—हूँ, जब छापने की कला का आविष्कार हुआ था तो बहुत से कलम घसीटने वाले भूखों मरने लगे थे ।

आउन—अगर आप उन दिनों में कलम घसीटने वाले रहे होते तो क्या आप छापने की कला को इतना पसन्द करते ?

बर्निक—मैंने आपको यहाँ बहस करने के लिये नहीं बुलाया । मैंने आपको यह कहने के लिये बुलाया था कि “इण्डियन गर्ल ” परसों तक समुद्र में छोड़ने लायक होजाय ।

आउन—लेकिन मिस्टर बर्निक...

बर्निक—कह रहा हूँ परसों, सुना आपने ? उसी समय जिस समय कि हमारा अपना जहाज़, एक घंटे भी पीछे नहीं । जल्दी कराने के लिये कारण है । आज का अखबार देखा है ? तब पता होगा इन अमेरिकन मल्लाहों की बदमाशी का । ये बदमाश सारे कस्बे को ऊपर से नीचे उलट रहे हैं । कोई भी रात नहीं जाती जब कि गली में या सड़क पर कोई न कोई बदमाशी न होती हो । कौन-कौन सी बातें कही जायँ ?

आउन—हाँ सचमुच ये बड़े पाजी हैं ।

बर्निक—इस सारी बदमाशी की ज़िम्मेदारी किसके ऊपर है ? मेरे ऊपर है । हाँ मुझी को इसके लिये परेशान होना है । ये अखबार वाले सौ तरह की खुराफात पैदा कर रहे हैं—इसलिये कि हम लोग अपनी सारी ताकत ‘पाम ट्री’ में लगा रहे हैं । मैं, जिसका उद्देश्य है लोगों के सामने आदर्श उपस्थित करने का, इतना सह रहा हूँ । मैं यह सहन नहीं कर सकता । मुझे अपनी नेकनामी इस तरह बिगाड़ने की चाह नहीं है ।

आउन—आपका नाम इतना क्या इससे और भी अधिक सह सकने के लिये काफी है जनाव ।

बर्निक—इस समय नहीं । इस समय तो मुझे लोगों की अधिक से अधिक सहानुभूति और विश्वास की जरूरत है ।

मुझे एक बड़ा काम करना है, जो कि शायद आपने सुना हो । लेकिन अगर यह हो कि लोगों का जो मुझ पर विश्वास है उसे ये बदमाश मिटा दें तो मुझे बड़ी कठिनाई में पड़ना पड़े । इसी लिये मैं किसी भी हालत में अखबारों की शिकायत को रोकना चाहता हूँ और इसी लिये मैं दिन निश्चित कर देता हूँ परसों, जितना समय मैं आपको दे सकता हूँ उसकी अन्तिम सीमा ।

आउन—मिस्टर बर्निक ! इस तरह तो आप आज दोपहर की ही सीमा निश्चित कर सकते हैं ।

बर्निक—आप का मतलब है कि मैं कोई असम्भव बात कह रहा हूँ ?

आउन—हाँ, जितने आदमी इस समय कारखाने में हैं, उन्हें देखते हुए असम्भव ही है ।

बर्निक—अच्छी बात है, तब हमें कोई दूसरा उपाय करना होगा ।

आउन—तो क्या आप अपने और भी पुराने आदमियों को अलग करना चाहते हैं ?

बर्निक—नहीं, मैं यह नहीं सोचता ।

आउन—क्योंकि मैं समझता हूँ कि इससे आपके खिलाफ बात फैलेगी अखबारों में और कस्बे के और लोगों में भी ।

बर्निक—सम्भव है, इसलिये हम लोग यह नहीं करेंगे । लेकिन अगर परसों तक 'इण्डियन गर्ल' समुद्र में चलने के लायक नहीं हो जाता, तो मैं आप को अलग कर दूँगा ।

आउन—[विस्मय से] मुझको ? [हँसता है] आप दिल्ली कर रहे हैं मिस्टर बर्निक !

वर्निक—अगर मैं आपकी जगह पर होता तो मैं ऐसा न समझता ।

आउन—मुझे भी अलग करने की बात आप सोच सकते हैं ? आपका मतलब यह है ? मुझे, जिसके बाप और दादा आपके कारखाने में ज़िन्दगी भर काम करते रहे, जैसा कि मैंने खुद भी किया है ?

वर्निक—कौन मुझे यह करने के लिये मजबूर कर रहा है ?

आउन—आप जो चाहते हैं असम्भव है मिस्टर वर्निक !

वर्निक—अजी जहाँ तबियत है वहाँ रास्ता भी है । हाँ या नहीं ? मुझे स्पष्ट और निश्चित जवाब दीजिये या अपने को इसी समय से अलग समझिये ।

आउन—[एक कदम उसकी ओर बढ़कर] मिस्टर वर्निक ! कभी आपने सोचा है किसी पुराने मजदूर को अलग करने का क्या मतलब होता है ? आप समझते हैं वह कोई दूसरी नौकरी ढूँढ़ लेगा । हाँ, वह ढूँढ़ सकेगा, लेकिन क्या इतने ही से यह बात ख़तम हो जाती है ? एक बार आप वहाँ जाइये, एक मजदूर के घर में जो कि अलग कर दिया गया हो, जिस दिन शाम को वह अपने घर आये, अपने साथ अपने सारे औज़ार लेकर ..

वर्निक—तुम समझते हो कि मैं तुम्हें खुशी से अलग कर रहा हूँ ? क्या मैं सदैव तुम्हारे लिये भलामानुस मालिक नहीं रहा हूँ ?

आउन—यह तो और भी बुरा है मिस्टर वर्निक । इसीलिये मेरे घर वाले आपको दोष नहीं देंगे, वे मुझसे भी कुछ नहीं कहेंगे क्योंकि उनको हिम्मत नहीं होगी, लेकिन जब मेरा ख़याल उधर नहीं रहेगा वे मेरी ओर देखेंगे और सोचेंगे कि मैं इसी लायक रहा हूँगा । देखा आपने ? यही, यही मैं नहीं सह सकूँगा । मेरी

क्या हस्ती, मैं खूब जानता हूँ, लेकिन अपने घर में मेरा आसन सब से ऊँचा रहा है। मेरा दरिद्र घर एक छोटा सा समाज है, मिस्टर वर्निक, एक छोटा सा समाज जो मुझपर निर्भर रहा है, क्योंकि मेरी स्त्री का मुझ पर विश्वास रहा है—मेरे बच्चों का मुझ पर विश्वास रहा है। और अब यह सब ढह जायगा।

वर्निक—तिस पर भी अगर और कोई उपाय नहीं है तो अधिक के लिए थोड़े को गिरना चाहिये; सब किसी की भलाई के लिये व्यक्ति का वलिदान हो जाना चाहिये। मैं आपको कोई दूसरा जवाब नहीं दे सकता; और वही, दुनिया में उसके अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता नहीं। आउन, आप हठी आदमी हैं—आप मेरा विरोध कर रहे हैं, इसलिये नहीं कि आप और कुछ कर नहीं सकते, बल्कि इसलिये कि हाथ के काम के ऊपर आप मशीन की प्रधानता नहीं देखना चाहते।

आउन—और आप हिलेंगे नहीं मिस्टर वर्निक ! क्योंकि आप समझते हैं कि मुझे निकाल कर आप अखबारों को अपनी नेकनीयती का हर हालत में सबूत दे देंगे।

वर्निक—अच्छी बात है, ऐसा ही हो ? मैंने आप से कह दिया, मेरे लिये इसका क्या मतलब है—या तो अखबारों को अपने ऊपर चढ़ाई करने देना, या उनको अपनी ओर कर लेना, ऐसे मौके पर जब कि मैं एक ऐसा काम करने जा रहा हूँ जिससे सब किसी की भलाई होगी। कहो, तब मैं इस समय जो कर रहा हूँ उसे छोड़ कर और कुछ कर सकता हूँ ? प्रश्न तो यह है कि या तो आप के घर का गुज़र हो जैसा कि आप कह रहे हैं या सैकड़ों नये घर बसने न दिये जायँ—सैकड़ों घर जो कि कभी बनेंगे नहीं, जिनमें कि कभी आग नहीं जलेगी, जब तक कि मैं उस स्कीम में सफलता न पाऊँ जिसकी आज कल मैं कोशिश

कर रहा हूँ। इसीलिये मैंने आप को निश्चय करने के लिये कह दिया है।

आउन—खैर, अगर ऐसी बातें हैं तो मुझे अब कुछ नहीं कहना है।

वर्निक—हूँ, भाई आउन यह सोचकर मुझे बड़ा दुःख हो रहा है कि हम लोग अलग हो रहे हैं।

आउन—हम लोग अलग नहीं हो रहे हैं मिस्टर वर्निक।

वर्निक—यह कैसे ?

आउन—मेरे ऐसे मामूली आदमी को भी कुछ बचाना है, जिसके लिये वह मजबूर है।

वर्निक—विल्कुल ठीक, विल्कुल ठीक, तब मैं समझता हूँ आप यह इक़रार कर सकते हैं

आउन—परसों 'इण्डियन गर्ल' समुद्र में चलने के लायक हो जायगा। [सिर झुका कर दाहिना ओर से निकल जाता है।]

वर्निक—वाह, इस हठी आदमी से अच्छा काम निकाला। यह अच्छा संयोग है। [हिल्मा सिगार पीते हुए बगीचे के दरवाज़े से आता है।]

हिल्मा—[बरामदे की सीढ़ियों पर पहुँच कर] नमस्कार बेत्ती, नमस्कार कारस्ते'।

मिसेज़ वर्निक—नमस्कार।

हिल्मा—ओ, मालूम हो रहा है तुम रोती रही हो, तो मैं समझता हूँ तुम भी यह सब जानती हो।

मिसेज़ वर्निक—क्या सब ?

हिल्मा—जो बदनामी कि ख़ूब फैल रही है ! ओफ़ !

वर्निक—तुम्हारा मतलब ?

हिल्मा—[कमरे में प्रवेश करते हुए] किस लिये ? यह कि हमारे अमेरिका से आये दोनों दोस्त दीना दोर्क को साथ लेकर सड़कों पर खूब धूम मचा रहे हैं ।

मिसेज़ वर्निक—[उसके पीछे कमरे में आती हुई] हिल्मा, यह हो सकता है ?

हिल्मा—हाँ, दुर्भाग्य से यह बिल्कुल सच है । लोना के पास इतनी समझ भी नहीं थी कि वह मुझे भी अपने पास बुला रही थी, लेकिन मैंने ऐसा दिखलाया जैसे मैंने सुना ही नहीं ।

वर्निक—और इसमें शक नहीं, ऐसा हो नहीं सकता कि लोगों ने यह सब न देखा हो ।

हिल्मा—हाँ, आप यह कह सकते हैं । लोग सन्न होकर खड़े हो जाते थे और उनकी ओर देखने लगते थे । सारे कस्बे में यह बात आधी सी फैल गई । हर एक घर में लोग खिड़कियों के पास खड़े थे इस जुलूस को उधर से निकलने के समय देखने के लिये, चिक की आड़ से, पर्दे की आड़ से... उफ़, ओह ! क्षमा करना बेत्ती ' उफ़ ' कहने के लिये, लेकिन इसका मेरे स्वास्थ्य पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा है । अगर यही होता रहा, तो मैं तो यहाँ से कहीं चले जाने का विचार करूंगा ।

मिसेज़ वर्निक—लेकिन तुम्हें जान से कहना चाहिये था, उसे समझाना चाहिये था कि...

हिल्मा—खुली सड़क पर ? क्षमा करो, पर यह तो मैं नहीं कर सकता । मैं तो यह भी नहीं सोच सकता था कि वह पाजी कभी भी कस्बे में मुँह दिखाने की हिम्मत करेगा । खैर, देखा जायेगा अगर अखबार वाले उसे दुरुस्त नहीं कर देते । क्षमा करना, बेत्ती ! लेकिन हाँ...

बर्निक—अखबार वाले आप कह रहे हैं ? क्या ऐसी कोई बात आपको कहीं मिली है ?

हिल्मा—ऐसी बातें चारों ओर उड़ रही हैं । जब यहाँ से मैं शाम को निकला, ढुब चला गया, क्योंकि तबीयत कुछ उदास मालूम हो रही थी । मेरे जाते ही जो एकाएक शान्ति छा गई, इससे मुझे पता चल गया कि उसी अमेरिकन जोड़ी की बात-चीत चल रही थी । तब वह वेशर्म अखबारों का सम्वाददाता हैमर आया और उसने मेरे धनी चचेरे भाई के लौटने पर मुझे ज़ोरों से बधाई दी ।

बर्निक—धनी ?

हिल्मा—यह उसके शब्द थे । इसमें शक नहीं कि मैं उसको ऊपर नीचे कई बार देखता रह गया, जिसका कि वह पात्र था और उसे पता चल गया कि मुझे जान त्वांसे के धनी होने की कोई बात नहीं मालूम है । “सचमुच” उसने कहा “यह तो बड़ी सीधी सी बात है । लोग अमेरिका कुछ लेकर जाते हैं जिसके बल पर कोई काम वहाँ प्रारम्भ कर सकें और मैं समझता हूँ वहाँ आपके चचेरे भाई बिल्कुल खाली हाथ तो नहीं गये होंगे । ”

बर्निक—हूँ, तो अब आप कृपाकर...

मिसेज़ बर्निक—[घबराकर] देखते हो कारस्तें...

हिल्मा—खैर, उनके कारण रात भर मुझे नींद नहीं आई । और यहाँ वह सड़कों पर घूम रहा है जैसे कोई बात ही न हो । वह अपनी भलाई के लिये हमेशा के लिये छिप क्यों नहीं जाता ? सचमुच कुछ लोगों को मौत भी नहीं आती ।

मिसेज़ बर्निक—प्रिय हिल्मा ! क्या कह रहे हो ?

हिल्मा—कुछ नहीं, लेकिन यहां तो यह आदमी रेलवे की

दुर्घटना से भी बाल बाल बच जाता है और कैलीफोर्निया के रीछों से और काले पैर वाले हबशियों से लड़ता है लेकिन इसे कहीं खरोंच भी नहीं आती। ओह ! ये आ रहे हैं।

वर्निक—[सड़क की ओर देखते हुए] ओलाफ भी उनके साथ है।

हिल्मा—है तो। वे हर एक आदमी को बतला देना चाहते हैं कि उनका सम्बन्ध कस्बे के सब से बड़े घराने से है। वह देखिये, वह कमीनों का गुट जो उस डाक्टर की दूकान की ओर से आकर उनकी ओर देख रहा है, व्यंग कर रहा है। मेरा शरीर तो यह सब नहीं सह सकेगा। ऐसी परिस्थिति में मनुष्य आदर्श का भण्डा कैसे ऊपर रख सकता है ? मैं...

वर्निक—वे यहीं आ रहे हैं। सुनो बेत्ती ! यह मेरी विशेष इच्छा है कि तुम उन सब का स्वागत जहाँ तक सम्भव हो सके स्नेह के साथ करना।

मिसेज़ वर्निक—ओह, क्या मैं ऐसा कर सकती हूँ, कारस्ते ?

वर्निक—अवश्य, अवश्य, और तुम भी हिल्मा ! ऐसी आशा है वे यहाँ अधिक दिन नहीं ठहरेंगे। और जब हम लोग एकान्त में भी हों तब भी पिछली बातों का कोई जिक्र न होना चाहिए। हमें उनके दिल को किसी भी तरह चोट नहीं पहुँचानी चाहिये।

मिसेज़ वर्निक—तुम कितने महान हो कारस्ते !

वर्निक—अरे ! यह न कहो।

मिसेज़ वर्निक—लेकिन मुझे धन्यवाद तो देने दो। और मुझे मेरे उतावलेपन के लिए क्षमा करो। मैं जानती हूँ कि तुमने जो कुछ कहा था उसके लिए तुम्हारे पास कारण था...

वर्निक—कृपया अब इस बारे में कुछ न कहो जी।

हिल्मा—ऊफ़ !

[जान त्वांसे और दीना बगीचे की ओर से आते हैं । उन दोनों के पीछे पीछे चल रहे हैं ओलाक़ और लोना]

लोना—सप्रेम अभिवादन ।

जान—हम लोग पुरानी जगहों को एक बार फिर देखने के लिये गये थे कारस्तेन !

बर्निक—मालूम है । बहुत परिवर्तन हो गया है न ?

लोना—सर्वत्र महाशय बर्निक की कीर्ति । सभी जगह अच्छे और उपयोगी काम । क़स्बे के लिये आपने जो दिल बहलाव की जगहें बनवायी हैं, वहाँ तक हम लोग गये थे ।

बर्निक—वहाँ तक गये थे ?

लोना—“ कारस्तेन बर्निक का दान ” जैसा कि फाटक पर लिखा है । यहाँ की सभी चीज़ें आप ही की देन हैं ।

जान—बड़े बड़े जहाज भी आप के पास हैं । अभी मैं अपने पुराने सहपाठी से मिला था “पाम ट्री” के कैप्टेन से ।

लोना—और आपने नये स्कूल के लिये मकान भी बनवाया है । और सुना है कि गैस और पानी की कल के लिए भी क़स्बा आपका ही कृतज्ञ है ।

बर्निक—जिस समाज में मनुष्य रहे उसकी भलाई के लिये उके काम करना ही चाहिये ।

लोना—जीजा ! यह सुन्दर भावना है । लेकिन साथ ही साथ लोग आपकी प्रशंसा भी कितनी कर रहे हैं, यह देखना भी बड़े आनन्द की बात है । मैं समझती हूँ मेरे स्वभाव में अभिमान नहीं है, लेकिन फिर भी एक या दो आदमियों से जिन से

बातें हुई, मैं यह कहना रोक नहीं सकी कि हम लोग आपके सम्बन्धी हैं ।

हिल्मा—उफ़ ..

लोना—इसके लिये तुम 'उफ़' कह रहे हो ?

हिल्मा—नहीं, मैंने 'हूँ' कहा था ।

लोना—तुम अनाड़ी लड़के चाहो तो यह भी कह सकते हो ।
लेकिन आज सिर्फ़ तुम्हीं लोग हो ?

वर्निक—हाँ, सिर्फ़ हमी लोग हैं ।

लोना—हाँ, तुम्हारे सदाचार संघ के सदस्यों की एक जोड़ी मुझे बाज़ार में मिली थी । उन्होंने ऐसा दिखलाना चाहा जैसे कि वे कार्य में बहुत व्यस्त हों । अभी तक हम लोगों को खुल कर बातें करने का मौक़ा नहीं मिला । कल तो आपकी तीन मुखिया यहाँ थीं और वह पादरी...

हिल्मा—स्कूल के अध्यापक ।

लोना—मैं तो उसे पादरी कहती हूँ । लेकिन यह तो कहो मेरे इधर पन्द्रह वर्ष के काम के बारे में, कैसा रहा ? यह अब भद्र नहीं हो गया है ? कौन इस पागल को पहचान सकता है जो कि घर से भाग गया था ?

हिल्मा—हूँ ।

जान—लोना ! मेरे बारे में बहुत शेख़ी न बघारो ।

लोना—मैं तुम से कह सकती हूँ कि इसके लिये मुझे बड़ा गर्व है । सच कहती हूँ केवल इसी बात में मैंने अपने जीवन में गर्व अनुभव किया है, लेकिन यह मुझे जीने के लिये एक तरह का अधिकार प्रदान करता है । जब मैं सोचती हूँ जान ! कि

हम दोनों ने वहाँ बिना किसी साधन के खाली हाथ कैसे शुरू किया, कुछ भी नहीं, अपनी नंगी चार मुट्टियों के साथ...

हिल्मा—हाथ ।

लोना—मैं मुट्ठी कह रही हूँ और वे गन्दी मुट्ठियाँ थीं ।

हिल्मा—उफ़ ।

लोना—और खाली भी ।

हिल्मा—खाली ? तो फिर मुझे कहना होगा...

लोना—तुम्हें क्या कहना होगा ?

बर्निक—उहँ !

हिल्मा—मुझे कहना होगा...उफ़.. [बगीचे से बाहर निकल जाता है ।]

लोना—क्या हो गया है इस आदमी को ?

बर्निक—ओह, उसका कोई ख्याल न करो, उसका स्नायु जाल इस समय उलट पलट गया है । बगीचे को देखना नहीं चाहती ? अभी वहाँ नहीं गई हो, और मैं एक घंटा इस समय दे भी सकता हूँ ।

लोना—सहर्ष । मैं कह दूँ तुमसे कि मैंने इस बगीचे में तुम्हें न मालूम कितनी बार कल्पना में देखा है ।

मिसेज़ बर्निक—तुम देखोगी हम लोगों ने उसमें बहुत सी बातें बदल भी दी हैं ।

[बर्निक, मिसेज़ बर्निक और लोना बगीचे में चले जाते हैं, जहाँ कि वे इस दृश्य में रह रह कर देख पड़ते हैं ।]

ओलाफ़—[बरामदे के दरवाजे पर आकर] हिल्मा मामा !

जानते हो जान मामा ने मुझसे क्या कहा ? उन्होंने कहा कि क्या मैं उनके साथ अमेरिका जाना चाहूंगा ?

हिल्मा—तुम ? तुम गधे, जो कि हमेशा उस डोरी में बँधे रहते हो जो तुम्हारी मां के हाथ में रहती है ?

ओलाफ़—लेकिन मैं ऐसा बहुत दिन नहीं रहूँगा । तुम देखोगे जब मैं बड़ा हो जाऊँगा...

हिल्मा—ओ, लचकती छड़ी, जिस चरित्र बल की जरूरत है, उसकी ओर तुम्हारा कोई ठीक झुकाव नहीं देख पड़ता ।

[वे बगीचे में चले जाते हैं । दीना इस बीच में अगना हैट उतार कर दांये दरवाजे पर खड़ी है और अगने कपड़ों की धूल झाड़ रही है ।]

जान—[दीना से] टहलने से तुम में कुछ जान आ गई है ।

दीना—बड़ा सुन्दर टहलना रहा । इतना अच्छा टहलना कभी नहीं मिला था ।

जान—तुम बराबर सबेरे टहलने नहीं जातीं ?

दीना—हाँ, जाती तो हूँ लेकिन केवल ओलाफ़ के साथ ।

जान—समझा, यहाँ रहने की अपेक्षा बगीचे में नहीं चली जाओगी ?

दीना—नहीं, मैं यहीं रहूँगी ।

जान—मैं भी यहीं रहूँगा । तो क्या हम लोग इसे एक सम-झौता समझेंगे, आजही की तरह रोज़ सबेरे घूमने जाना ?

दीना—नहीं, मिस्टर त्वांसे ! यह न करना ।

जान—क्या न करना ? तुमने प्रतिज्ञा की है, तुम्हे मालूम है ?

दीना—हाँ, लेकिन फिर विचार करने पर, आपको मेरे साथ बाहर नहीं जाना चाहिये ।

जान—लेकिन । क्यों नहीं ?

दीना—सच है, आप विदेशी हैं, आप नहीं समझ सकते ।
लेकिन मैं कह दूँ ?

जान—अच्छा ।

दीना—नहीं, मैं इस बारे में कुछ नहीं कहना चाहती ।

जान—लेकिन तुम्हें जरूर कहना होगा, तुम मुझसे जो कुछ
चाहो कह सकती हो ।

दीना—अच्छा, मुझे आप से कह देना । चाहिये कि मैं यहाँ
की और लड़कियों की तरह नहीं हूँ । कोई बात है इसमें, कोई
न कोई बात मेरे बारे में । इसी लिये आप को मेरे साथ नहीं घूमना
चाहिए ।

जान—लेकिन मैं तो यह कुछ समझ नहीं सका । तुमने कोई
गलती तो नहीं की ?

दीना—नहीं, मैंने तो नहीं, लेकिन...नहीं अब इस बारे में
मैं कुछ नहीं कह सकती । निश्चय है दूसरों से आप बहुत कुछ
सुन लेंगे ।

जान—हूँ !

दीना—लेकिन एक बात और है जो मैं आपसे जान लेना
चाहती हूँ ।

जान—क्या है वह ?

दीना—अमेरिका में अपने लिये जगह बना लेना आसान है
मैं अनुमान करती हूँ ।

जान—नहीं, हमेशा आसान तो नहीं है । शुरू में तो बड़ी
तकलीफ पड़ती है और बड़ा काम करना पड़ता है ।

दीना—मैं यह करने को तैयार रहूँगी ।

जान—तुम ?

दीना—मैं अब काम कर सकती हूँ, मैं मजबूत हूँ और स्वस्थ भी और बुआ मर्था ने मुझे बहुत कुछ सिखला भी दिया है ।

जान—अच्छा, तो इसे रहने दो, हम लोगों के साथ अमेरिका चलो ।

दीना—ओह ! तो आप मेरा मजाक बना रहे हैं । आपने यही ओलाफ से भी कहा । लेकिन मैं यह जानना चाहती थी कि क्या वहाँ के आदमी भी इतने अधिक—इतने अधिक सदाचारी हैं ।

जान—सदाचारी ?

दीना—हाँ, मेरा मतलब है कि क्या वे इतने...इतने ठीक और इतने सुसंस्कृत हैं जैसे कि यहाँ के लोग ?

जान—अजी किसी भी हालत में वे इतने बुरे नहीं हैं जितना कि यहाँ के लोग कहा करते हैं । इस बात के लिये तुम्हें डरना नहीं चाहिये ।

दीना—आपने मुझे समझा नहीं । मैं यही सुनना चाहती हूँ कि वे इतने ठीक और इतने सदाचारी नहीं हैं ।

जान—नहीं ? तब तुम उन्हें कैसा होना पसन्द करोगी ?

दीना—मैं उन्हें स्वाभाविक होना पसन्द करूँगी ।

जान—तब मुझे विश्वास है वे वैसे ही हैं ।

दीना—क्यों कि उस हालत में अगर मैं वहाँ जाऊँ तो मैं सुख से रह सकूँगी ।

जान—तुम सुख से रहोगी, निश्चय है, और इसी लिये तुम्हें हम लोगों के साथ अवश्य चलना चाहिये ।

दीना—नहीं, मैं आपके साथ नहीं चलना चाहती । मैं अकेले जाऊँगी । मैं अपने जीवन का कुछ बनाऊँगी, मैं बढ़ती रहूँगी...

बर्निक—[लोना और अपनी स्त्री से बगीचे की सोड़ी पर बातें करते हुए] थोड़ी देर ठहरो—मैं ला दूँगा बेत्ती ! प्यारी, तुम्हें सर्दी लग जायगी । [कमरे में आता है और अपनी स्त्री का शाल खोजने लगता है ।]

मिसेज़ बर्निक—[बाहर से] तुम भी बाहर आओ, जान ! हम लोग बाहर जा रहे हैं ।

बर्निक—नहीं, मैं चाहता हूँ जान यहीं रहे । इधर सुनो दीना, मेरी स्त्री का शाल लेकर उन लोगों के साथ जाओ । जान मेरे साथ यहाँ रहेंगे बेत्ती प्यारी ! मैं जानना चाहता हूँ कि ये वहाँ कैसे रह रहे हैं ।

मिसेज़ बर्निक—अच्छी बात है । फिर तुम भी हम लोगों के पीछे आओगे न ? समझे न कहाँ मिलेंगे ? [मिसेज़ बर्निक, लोना और दीना बाईं ओर से बगीचे के बाहर निकल जाती हैं । बर्निक थोड़ी देर उनकी ओर देखता रहता है और तब बाईं ओर के दरवाज़े तक जाकर उसे बन्द करता है । इसके बाद जान के पास पहुँच कर उसके दोनों हाथ पकड़ लेता है और प्रेम से उन्हें हिलाने लगता है ।]

बर्निक—जान, अब हम लोग अकेले हैं...अब तुम मुझे धन्यवाद देने दो ।

जान—क्या व्यर्थ की बातें करते हो ?

बर्निक—मेरा घर बार, मेरा सारा आराम और चैन, यहाँ तक कि नागरिक की दृष्टि से मेरी हैसियत, यह सब तुम्हारी कृपा है । इसके लिये मैं तुम्हारा ऋणी हूँ ।

जान—अच्छा तो मुझे इसकी खुशी है कारस्तेन ! तो उस भूठे अपवाद से कुछ भलाई हो गई ?

वर्निक—[उसके हाथ फिर पकड़ कर] लेकिन फिर भी मुझे धन्यवाद तो देने दो । तुमने तो मेरे लिये जो किया दस हजार में एक भी वैसा न कर सका होता ।

जान—व्यर्थ की बातें ! क्या हम दोनों अल्पवयस्क और विचारहीन नहीं थे ? किसी न किसी को तो कलंक लेना था । तुम जानते हो...

वर्निक—लेकिन अपराधी को कलंक उठाना चाहिये था ।

जान—चुप रहो । उस समय निरपराध इसके लिये सबसे उपयुक्त हो उठा । याद करो, मेरे लिये कोई बन्धन नहीं था । मैं निस्सहाय था । आफिस के भ्रमों से छुट्टी पाने के लिये वह सौभाग्य का अवसर था । दूसरी ओर तुम्हारी बूढ़ी मां अभी जी रही थी, और इसके अतिरिक्त छिपे तौर पर बेत्ती से तुम्हारा संबंध भी तै हो गया था, जो तुमको हृदय से प्रेम करती थी । यह अगर उसे मालूम होजाता तो तुम्हारे और उसके बीच क्या होता ?

वर्निक—यह तो सच है लेकिन तब भी...

जान—और क्या बेत्ती के लिये ही तुमने मिसेज़ दोर्फ से अपना सम्बन्ध नहीं तोड़ लिया ? उस दिन शाम को तुम उसके पास सब मामले का खातमा करने ही को तो गए थे ।

वर्निक—हाँ, उस अभागी शाम को जब वह पियकड़ घर आया । हाँ जान, बेत्ती के लिये, लेकिन साथ ही साथ यह तुम्हारी महानता थी, अपने को बदनाम हो जाने देना और निकल भागना ।

जान—प्यारे कारस्तेन ! अपनी कृतज्ञता को विश्राम करने दो ।

हम लोगों में यही तै हुआ था। तुम्हारी रक्षा करनी थी और तुम मेरे मित्र थे। मैं तुमसे कहूँ—उस मित्रता का मुझे असाधारण गर्व था। यहां मैं कीचड़ में फँसी छड़ी की तरह अपने को घसीट रहा था, जब तुम अपने प्रसिद्ध देशाटन से लौटे। तुम्हारा चारों ओर शोर था, तुम लन्दन और पेरिस देख कर लौटे थे। और तुमने मुझे अपना साथी बनाया, मैं जो कि तुमसे चार वर्ष छोटा था। यह सच है कि इसका कारण यह था कि तुम बेत्ती से प्रेम करते थे, मैं अब यह समझता हूँ। लेकिन मुझे इसका गर्व था। किसे न होता ? उसके लिये कौन खुशी से बलिदान न करता ? विशेषतः जब कि इसका फल होता कस्बे में एक महीने की चर्चा और मुझे विस्तृत संसार में प्रवेश करने की स्वतंत्रता।

बर्निक—प्यारे जान ! मुझे स्पष्ट होना चाहिये और कहना चाहिये कि वह बात कस्बे में अब भी नहीं भूली।

जान—अब तक नहीं ? खैर मुझसे क्या मतलब, जब मैं एक बार फिर वहाँ लौट कर अपने काम पर चला जाऊँगा ?

बर्निक—तो तुम लौट जाना चाहते हो ?

जान—अवश्य।

बर्निक—लेकिन जल्दी तो नहीं, मैं समझता हूँ !

जान—जितना जल्दी हो सके। केवल लोना के मनबहलाव के लिये मैं यहाँ आया—जानते हो न ?

बर्निक—सचमुच ? कैसे ?

जान—लोना अब लड़की नहीं है और बहुत दिनों से वह घर के लिए घबराने लगी। लेकिन वह कभी यह बात मानेगी नहीं। [मुस्कराता है] मेरे ऐसे अस्थिर व्यक्ति को वह अकेला कैसे छोड़ सकती थी, जो कि जब उन्नीस का भी नहीं हुआ था तभी बदनामी कमा चुका था ?

बर्निक—खैर, तब ?

जान—कारस्तेन ! मैं अब एक ऐसी बात स्वीकार करने जा रहा हूँ जिस की मुझे लज्जा है ।

बर्निक—क्या तुमने उसे असली बात बता दी ?

जान—हाँ, यह मेरी गलती थी, लेकिन मैं और कुछ कर ही नहीं सकता था । तुम्हें पता नहीं लोना ने मेरे लिये क्या क्या किया है । उसके साथ तुम कभी न रह सकते, लेकिन वह मेरे लिये तो मां रही है । पहले साल जब हम लोग वहां गये, जब सभी बातें हम लोगों के प्रतिकूल होती रहीं, तुम जानते नहीं उसने कितना परिश्रम किया । और जब मैं बहुत दिनों के लिये बीमार पड़ गया, और कुछ कमा नहीं सका और उसे रोक भी नहीं सका, वह मंच पर गाने का काम करने लगी । उसने व्याख्यान दिये जिन्हें सुन कर लोग हँसते थे और उसने एक किताब लिखी जिसे देख देख कर वह हँस भी लेती है और रो भी लेती है । यह सब किया उसने मुझे जीवित रखने के लिए । मैं कैसे अवहेलना कर सकता था जब वह जिसने मेरे लिये यह सब किया था रोज़ कमजोर होती जा रही थी ? नहीं कारस्तेन ! मैं अवहेलना नहीं कर सका । और इस लिये मैंने कहा “तुम एक बार देश हो आओ लोना—मेरे लिये न डरो, मैं ऐसा अस्थिर नहीं हूँ जैसा तुम समझती हो । ” और इसका परिणाम यह हुआ कि मुझे उसे सारी बात बतला देना पड़ी ।

बर्निक—और उस पर इसका क्या असर पड़ा ?

जान—उसने सोचा, जो कि सच भी था, कि जब मैं जानता हूँ कि मैं निर्दोष हूँ, तब उसके साथ यहाँ आने में मेरे लिये कोई बाधा नहीं है । लेकिन परेशान न होना । लोना कुछ

नहीं कहेगी और मैं तो अपना मुह बन्द ही रखूँगा जैसा कि मैं बराबर करता रहा हूँ ।

बर्निक—हां, हां, मुझे इसका विश्वास है ।

जान—हाथ मिलाओ । और अब हम लोग उस बीती बात की चर्चा नहीं करेंगे । भाग्य से यही एक अनुचित बात है, जिसके लिये कि हम दोनों में से कोई न कोई अपराधी है । मुझे विश्वास है कि हम दोनों में से किसी ने और कोई अनुचित कार्य नहीं किया है । जो दो चार दिन मैं यहाँ रहूँ चैन से रहना चाहता हूँ । तुम नहीं जानते आज सबेरे का हम लोगों का घूमना कितना मजे का रहा । मैंने तो इस बात की कल्पना भी न की थी कि जो बच्ची रंग मंच पर इधर उधर भागी फिरती थी, वह अब ऐसी...लेकिन प्यारे भाई, यह तो कहो उसके मां बाप पीछे क्या हुए ?

बर्निक - आह ! प्रिय बन्धु ! मैंने तुम्हारे निकल भागने के साथ ही तुम्हें जो लिखा था उससे अधिक कुछ नहीं बता सकता । क्यों, मेरे दो पत्र तुम्हें मिले थे न ?

जान—हाँ, दोनों मेरे पास हैं । तो उस पियक्कड़ ने उसे अस-हाय छोड़ दिया ?

बर्निक—और खुद नशा करते करते मर गया ।

जान—और वह भी थोड़े ही दिनों पीछे मर गई ?

बर्निक—वह मानिनी थी, उसने न कोई भेद खोला और न कभी कुछ मांगा ।

जान—खैर, जो भी हो, तुमने दीना को अपने घर में रख कर अच्छा किया ।

बर्निक—मैं भी यही समझता हूँ । लेकिन वास्तव में मर्था ने यह सब किया ।

जान—अच्छा मर्था ने ? लेकिन आज है कहाँ वह ?

बर्निक—वह ? जब उसे स्कूल की चिन्ता नहीं रहती है तब वह बीमारों की देख रेख में लगी रहती है ।

जान—तो मर्था ने उसकी ओर ध्यान दिया ?

बर्निक—हाँ, जानते हो मर्था को सदा से पढ़ाने का शौक रहा है, इसीलिये उसने बोर्ड के स्कूल में नौकरी कर ली । यह उसके लिये हास्यास्पद बात थी ।

जान—मुझे तो जैसे वह कल बड़ी परेशान देख पड़ी । मुझे आशंका है उसका स्वास्थ्य इसके लिये ठीक नहीं है ।

बर्निक—जहाँ तक उसके स्वास्थ्य की बात है, वह तो बिल्कुल ठीक है । लेकिन मेरे लिये यह बुराई की बात है । इसका मतलब यह होता है कि मैं, उसका भाई, उसकी सहायता करना नहीं चाहता ।

जान—उसकी सहायता करना ? मैंने तो समझा था कि उसके पास अपना काफी रुपया है ।

बर्निक—एक पैसा भी नहीं । निस्सन्देह तुम जानते हो कि जिस समय तुम गये थे हमारी मां कितनी बुरी हालत में थी । कुछ समय तक तो मेरी सहायता से वह काम चलाती गई, लेकिन स्वभावतः मैं उस स्थिति को अधिक समय तक सहन नहीं कर सकता था । इसलिये मैंने उसके साथ अपने को भी फर्म में शामिल कर लिया, लेकिन तब भी हालत नहीं सुधरी । इसलिये सारा कारबार मुझे अपने कन्धे पर उठाना पड़ा और जब हम लोगों ने हिसाब किया, तो साफ़ मालूम हो गया कि मेरी मां का

हिस्सा उसमें कुछ भी नहीं बचा था । और जब मां थोड़े दिन बाद मर गई तो साफ है कि मर्था के पास एक पैसा भी नहीं था ।

जान—अभागिनी मर्था !

बर्निक—अभागिनी ? क्यों ? आप यह तो नहीं समझते कि मैं उसे किसी चीज़ की तकलीफ़ होने देता हूँ ? नहीं, मैं साहस के साथ कह सकता हूँ कि मैं उदार भाई हूँ । हम लोगों के साथ वह घर में रहती है । उसका वेतन इतना काफी हो जाता है कि उसके कपड़ों का काम चल सके । और उसे चाहिये क्या ?

जान—हूँ, अमेरिका में हम लोगों के विचार इस तरह के नहीं हैं ।

बर्निक—नहीं, मैं साहस से कह सकता हूँ कि उस क्रान्तिकारी समाज में जैसा कि आपको वहां मिला है, ऐसे विचार नहीं हैं । लेकिन हमारी संकीर्ण परिधि में, ईश्वर को धन्यवाद है, जिसमें तंगदिली को अभी जगह नहीं मिली है, अब तक किसी न किसी हालत में स्त्रियां अपनी साधारण और विनम्र स्थिति से संतुष्ट हैं । और वास्तव में तो मर्था का स्वयं दोष है, मेरा मतलब यह कि उसकी सहायता स्वयं होगई होती पहले ही से, अगर वह चाहती ।

जान—तुम्हारा मतलब यह है कि अगर उसने शादी कर ली होती ?

बर्निक—हाँ, और शादी भी अच्छी हुई होती । उसको कई अच्छे से अच्छे अवसर मिले, आश्चर्य की बात तो यह है, यद्यपि तुम समझते हो कि वह दरिद्र लड़की है, अब जवान भी नहीं, और इसके अतिरिक्त बिल्कुल साधारण व्यक्ति है ।

जान—साधारण ?

बर्निक—अरे, इसके लिये मैं उसे दोष नहीं देता। और मैं स्वयं भी उसका विवाह कर लेना बहुत पसन्द न करता। मैं तुम्हें बता दूँ, ऐसे बड़े घर में उस जैसे धैर्यवान व्यक्ति की जरूरत रहती है—किसी ऐसे व्यक्ति की जिसपर किसी ऐसे-वैसे मौके पर विश्वास किया जा सके।

जान—हाँ, लेकिन उसका समय कैसा कटता है ?

बर्निक—वह कैसे ? अजी उसके लिये बहुत से काम हैं... तबियत लगने के लिये, उसके लिये बेत्ती है, ओलाफ है, मैं हूँ। लोगों को सबसे पहले अपनी ही चिन्ता नहीं करनी चाहिये... और स्त्री को तो और भी नहीं। हम सभी लोगों के लिये अपना समाज है, छोटा या बड़ा, जिसके लिये परिश्रम किया जाय। प्रत्येक अवसर पर यह मेरा सिद्धान्त रहता है। [काप की ओर संकेत करता है जो कि दाईं ओर से भीतर आया है।] इसका एक ठीक उदाहरण यह है, विल्कुल सामने और स्पष्ट। तुम समझते हो कि मैं अपने ही भंभटों में बेतरह फँसा हूँ इस समय। विल्कुल नहीं। [काप से उत्सुकता से] कहो ?

काप—[धीरे से उमे कागजों का पुलिन्दा दिखलाते हुए] सभी हिस्से विक चुके।

बर्निक—वाह ! क्या खूब ! जान ! इस समय तो मुझे जमा करो। [धीरे से उसका हाथ पकड़कर] धन्यवाद जान ! धन्यवाद और विश्वास करो कि जो कुछ मैं तुम्हारे लिये कर सकूँगा...क्यों शायद तुम समझते होगे। चलो काप। [दोनों बर्निक के कमरे में चले जाते हैं।]

जान—[थोड़ी देर उनकी ओर देखता हुआ] हूँ ! [बगीचे में जाना चाहता है, उसी समय दाहिनी ओर से मर्था प्रवेश करती है, छोटी सी रोकती लिए हुए] मर्था !

मर्था—ऐं ! जान ! तुम हो ?

जान—इतने सबेरे बाहर...

मर्था—हाँ, थोड़ी देर ठहरो ! और सब भी आरहे हैं अभी ।
[बाईं ओर के दरवाजे की ओर जाती है ।]

जान—मर्था ! तुम हमेशा इतनी परेशान रहती हो ?

मर्था—मैं ?

जान—कल जैसे तुम मुझसे छुटकारा पाना चाहती थीं । इस कारण मैं तुमसे कुछ भी नहीं कह सका । हम दोनों पुराने खेल-कूद के साथी हैं ।

मर्था - हाँ, जान ! न मालूम कितने वर्ष पहले ।

जान—हे ईश्वर ! अभी तो पन्द्रह वर्ष बीते हैं, न तो ज्यादा न कम । तुम समझती हो मैं बहुत बदल गया ?

मर्था—तुम ? हाँ तुम भी बदल गये हो, गो कि...

जान—क्या मतलब ?

मर्था—कुछ नहीं ।

जान—मुझसे फिर मिलने में शायद तुम्हें कोई प्रसन्नता नहीं है ?

मर्था—मैंने बहुत दिन तक प्रतीक्षा की है जान ! बहुत दिन तक । लेकिन अब...

जान—प्रतीक्षा ? मेरे आने की ?

मर्था—हाँ ।

जान—और तुमने यही क्यों सोचा कि मैं आऊँगा ?

मर्था—तुमने जो गलती की है, उसका प्रायश्चित्त करने के लिये ।

जान—मैंने ?

मर्था—भूल गये कि तुम्हारे ही कारण एक खो लज्जा और अभाव के मारे मरी ? भूल गये कि तुम्हारे ही कारण एक लड़की के सब से सुन्दर वर्ष ग्लानि में बीते ?

जान—और ऐसी बात तुम मुझमें कह सकती हो मर्था ? क्या तुम्हारे भाई ने कभी...

मर्था—कभी क्या ?

जान—क्या उसने...ओ ! मेरा मतलब यह है कि उमने मेरे पत्र में कभी दो शब्द नहीं कहे ?

मर्था—जान, तुम कारस्तेन के उच्च सिद्धान्तों को जानते हो ।

जान—हूँ ! ठीक है, मैं अपने पुराने मित्र कारस्तेन के महान सिद्धान्तों को जानता हूँ । लेकिन वास्तव में यह...खैर, खैर, अभी मेरी उनसे बातें हो रही थीं । मुझे तो वे बहुत बदल गये से मालूम होते हैं ।

मर्था—यह तुम कैसे कह सकते हो ? मैं खूब जानती हूँ कारस्तेन बराबर आदर्श व्यक्ति रहे हैं ।

जान—हाँ, मेरे कहने का मतलब यह तो नहीं था । खैर, जाने दो । अब मैं ममभक्ता हूँ कि तुम मुझे जिस रूप में देखती रही हो उसके अनुसार तुम एक धूर्त के लौटने की प्रतीक्षा कर रही थीं ?

मर्था—सुनो, मैंने तुम्हें किस रूप में देखा है । [बगीचे की ओर संकेत करती है] उस लड़की को देख रहे हो जो घास पर ओलाफ के साथ खेल रही है ? वह दीना है । तुम्हें याद है वह बेहूदगी का पत्र जो तुमने भागते समय मुझे लिखा था ? तुमने मुझे तुम पर विश्वास रखने को लिखा था । मैंने तुममें विश्वास किया है जान ! जो जो भयंकर बातें तुम्हारे बारे में यहाँ तुम्हारे चले जाने के

बाद फैली थीं—गलत रास्ते पर चले जाने से, विचारहीनता से या पहले ही सोच न लेने से होगई होंगी ।

जान—तुम्हारा मतलब क्या है ?

मर्था—तुम मेरा मतलब अच्छी तरह समझते हों । इससे अधिक एक शब्द की भी आवश्यकता नहीं । लेकिन खैर तुम्हें बाहर जाना जरूरी था और एक नई ज़िन्दगी शुरू करनी थी । यहाँ के अपने जिन कर्तव्यों को तुमने कभी याद नहीं किया, या जिनको पूरा करने के लायक तुम थे नहीं, उनको मैंने पूरा किया है तुम्हारी खातिर । मैं यह इसलिये कह देती हूँ कि तुम्हें कभी इस बात के लिये अपने पर दोष न हो । मैं उस उत्पीड़ित लड़की की माँ बनी हूँ । जहाँ तक मुझसे हो सका है मैंने उसका पालन किया है ।

जान—और इसके लिए तुमने अपना सारा जीवन बर्बाद कर दिया है ।

मर्था—वह बर्बाद नहीं हुआ, लेकिन तुम बहुत देर करके आये जान !

जान—मर्था, अगर मैं तुम से कह सकता । खैर, किसी भी दशा में अपनी अटूट मित्रता के लिये मुझे धन्यवाद देने दो ।

मर्था—[दुःख से मुस्करा कर] हूँ ! क्यों अब तो हम लोगों ने एक दूसरे को समझ लिया जान ! चुप रहो, कोई आ रहा है । विदा, अब मैं नहीं ठहर सकती । [बाईं ओर के दरवाजे से निकल जाती है । लोना मिसेज़ बर्निक के साथ बगोचे से आती है ।]

मिसेज़ बर्निक—लेकिन, लोना ! कैसी बात सोच रही हो ?

लोना—नहीं, न रोको । तुमसे कह देती हूँ । अवश्य .. और जरूर उससे कहूँगी ।

मिसेज़ बर्निक—लेकिन यह कितनी बड़ी बदनामी होगी ?
अरे जान ! अभी यहीं हो ?

लोना—बाहर जाओ, बाबू ! यहाँ भीतर न बैठो । बगीचे में
जाओ और दीना से कुछ बातें तो करो ।

जान—मैं अभी यही सोच रहा था ।

मिसेज़ बर्निक—लेकिन ..

लोना—इधर तो देखो । जान ! तुमने कभी ध्यान से दीना
को देखा है ?

जान—मैं समझता हूँ

लोना—बाबू, उसे किसी मतलब से देखो ! वह तुम्हारी कोई
होगी ।

मिसेज़ बर्निक—लेकिन लोना...

जान—मेरी कोई ?

लोना—हाँ, हाँ, देखो तो । जाओ जल्दी ।

जान—अरे ! मुझ पर किसी तरह का दबाव डालने की
ज़रूरत नहीं है । [बगीचे में चला जाता है ।]

मिसेज़ बर्निक—लोना ! तुम मुझे चक्कर में डाल देती हो ।
तुम शायद इस बात को गम्भीरता से नहीं कह रही हो ?

लोना—क्यों नहीं ? क्या वह सुन्दर, मधुर और ईमान-
दार नहीं है ? जान के लिये वह योग्य स्त्री है । वह वही है
जिसकी उसे वहाँ ज़रूरत है ! यह रिश्ते की बहिन की जगह
पर एक परिवर्तन का काम करेगी ।

मिसेज़ बर्निक—दीना ? दीना दोर्क ? लेकिन सोचो...

लोना—मैं सब से पहले और सब से अधिक उस लड़के के

सुख की बात सोचती हूँ । क्योंकि उसकी सहायता तो मुझे करनी ही है । इन चीजों की उसे कोई जानकारी नहीं है । युवती के लिये या स्त्री के लिए उसके पास आँखें नहीं रही हैं ।

मिसेज़ बर्निक—जान के पास ? वास्तव में मैं सोचती हूँ कि हम लोगों को इसके खिलाफ काफी बुरे उदाहरण मिले हैं ।

लोना—आह ! उन बेहूदी बातों को भाड़ में जाने दो । कारस्तेन कहाँ है ? मैं उससे बातें करूंगी ।

मिसेज़ बर्निक—लोना ! कह देती हूँ तुम्हें यह नहीं करना चाहिये ।

लोना—मैं करूंगी । अगर लड़का उस पर मोहित हो जाता है और वह उस पर, तब तो उनकी अच्छी जोड़ी बनेगी । कारस्तेन इतना चालाक है कि कोई न कोई रास्ता इसे पूरा करने के लिये वह निकाल लेगा ।

मिसेज़ बर्निक—और तुम समझती हो कि ये अमेरिकन गन्दी बातें यहाँ चल सकेंगी ?

लोना—चुप बेत्ती !

मिसेज़ बर्निक—तुम समझती हो कि कारस्तेन ऐसा आदमी, ऐसे कठोर नैतिक सिद्धांतों वाला आदमी.....

लोना—अजी, उसके नैतिक सिद्धांत इतने भयानक नहीं हैं ।

मिसेज़ बर्निक—तुम क्या कहने की धृष्टता कर रही हो ?

लोना—मुझे धृष्ट होकर कहना है कि कारस्तेन किसी भी दूसरे आदमी से बढ़ कर, कोई विशेष नैतिक विचार वाला नहीं है ।

मिसेज़ बर्निक—तो तुम अब भी उससे उतनी ही गहरी घृणा रखती हो । लेकिन अगर तुम उस बातको भूल नहीं सकी तो फिर

यहाँ किस लिए आई हो ? मैं नहीं समझती तुम्हें उसकी ओर देखने की हिम्मत कैसे होती है, जब तुमने उन दिनों उसका इतना घोर और लज्जास्पद अपमान किया था ।

लोना—हाँ बेत्ती, उस समय मैं बिल्कुल आपे से बाहर हो गई थी ।

मिसेज बर्निक—और यह सोचो कि उसने तुम्हें कितनी महानता के साथ क्षमा कर दिया है, जिसने कि कोई अपराध नहीं किया । यह उसकी गलती नहीं थी, कि तुमने अपने दिल में आशा का पहाड़ खड़ा किया । लेकिन तब से तुमने मुझसे भी घृणा की है । [रोने लगती है] तुम सदैव मेरे सौभाग्य से ईर्ष्या करती रही हो । और अब यहाँ यह सब मेरे सिर पर लादने के लिये आई हो, सारे कस्बे को बताने के लिये कि कैसे सम्बन्धियों के बीच में मैंने कारस्तेन को पटक दिया है । हाँ, यह सब मेरे ऊपर पड़ता है, और यही तुम चाहती हो । ओह ! यह लज्जाजनक बात है ! [रोती हुई बाई ओर के दरवाजे से बाहर निकल जाती है ।]

लोना—[उसकी ओर देखती हुई] अभागिनी बेत्ती ! [बर्निक का अपने कमरे से प्रवेश । क्राप से कुछ कहने के लिये अपने दरवाजे पर खड़ा हो जाता है ।]

बर्निक—हां, क्राप यह बहुत अच्छी बात रहेगी । गरीबों के भोजन के फंड में २० पाउन्ड चन्दा भेज दो । (घूम कर) लोना ! क्या तुम अकेली हो ? क्या बेत्ती नहीं आ रही है ?

लोना—नहीं । क्या तुम चाहते हो कि मैं उसे बुला लूं ?

बर्निक—नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं । आह ! लोना ! तुम नहीं जानती तुमसे क्षमा मांगने और तुमसे सभी बातें साफ साफ कह देने के लिये मैं कितना उत्सुक रहा हूँ ।

लोना—सुनो कारस्टेन ! हम लोगों को भावुक नहीं होना चाहिये । यह हम लोगों को शोभा नहीं देता ।

बर्निक—मेरी भी सुनो लोना ! मैं खूब जानता हूँ कि तुम्हारी धारणा मेरे प्रतिकूल है, क्योंकि तुमने दीना की माँ सम्बन्धी वह सारी बात सुनी है । लेकिन मैं तुमसे शपथ लेकर कहता हूँ कि वह सब एक तरह का उन्माद था । वास्तव में तो मैं सचाई और ईमानदारी के साथ, कभी तुम्हारा प्रेमी था ।

लोना—तुम क्या समझते हो ? मैं घर क्यों आई हूँ ?

बर्निक—तुम्हारे मन में जो हो, मैं तुमसे तब तक कुछ भी न करने के लिये प्रार्थना करता हूँ जब तक कि मैं अपने को मुक्त नहीं कर लेता । मैं वह कर सकता हूँ लोना ! किसी भी हालत में मैं अपने को अक्षम्य नहीं समझता !

लोना—अब तुम डर गये हो । कभी तुम मुझसे प्रेम करते थे, कह रहे हो । हाँ, तुमने यह अपने पत्रों में प्रायः कहा है, और शायद एक तरह से यह सच भी था, जब तक कि तुम महान और विस्तृत स्वतन्त्र संसार में थे, बाहर, जिसने कि तुमको महानता और स्वतंत्रता के साथ सोचने का साहस दिया था । शायद तुमको मेरे भीतर यहाँ देश के और लोगों की बनिस्वत कुछ अधिक चरित्र बल और स्वतन्त्रता की झलक मिली थी । और जब हम दोनों इस बात को अपने तक छिपाये रहे, तुम यह भी जानते थे कि कोई तुम्हारी कुरुचि का मजाक नहीं उड़ा सकता ।

बर्निक—लोना ! तुम कैसे सोचती हो ?

लोना—लेकिन जब तुम लौट कर घर आये, जब तुमने मेरे विरुद्ध सब ओर बातें सुनीं, जब तुमने देखा कि लोग मेरी जिन बातों को वे बेवकूफी समझते थे उनकी कैसी दिल्लगी उड़ाने थे...

वर्निक—तुम उस समय लोगों के विचार का कोई ख्याल नहीं करती थीं ।

लोना—विशेषतः उन ढोंगियों को चिढ़ाने के लिये जो कस्बे के हर मोड़ पर भिला करते थे । और तब, जब तुम उस मायाविनी युवती अभिनेत्री से मिले...

वर्निक—यह तो लड़कपन का खेल था...और कुछ नहीं, मैं तुमसे शपथ लेकर कहता हूँ कि जितनी कानाफूसी हुई इधर उधर, उसका दशमांश भी सच नहीं था ।

लोना—हो सकता है । लेकिन तब जब बेत्ती घर आई—सुन्दर युवती, हर एक जिसके मोह में पड़ जाता था, और यह मालूम हो गया कि उसे उसकी चाची की सारी सम्पत्ति मिलेगी और यह कि मुझे कुछ नहीं मिलेगा ।

वर्निक—यही तो असल बात है लोना ! और अब तुम्हें सच बात मालूम हो जायगी, बिना इधर-उधर भटकने के, तब मैं बेत्ती को प्रेम नहीं करता था । मैंने तुमसे सम्बन्ध किसी नये आकर्षण के लिये नहीं तोड़ दिया । यह तो केवल रुपये के लिये हुआ । मुझे उसकी जरूरत थी ।

लोना—और तुम्हारा मुँह मुझसे यह कहने का होता है ?

वर्निक—हाँ, सुनो लोना !

लोना—और इतने पर भी तुमने मुझे लिखा कि बेत्ती की ओर प्रेम वासना ने तुम्हें बेकाबू कर लिया है । मेरी महानता को जगाया तुमने, मुझसे भिच्चा मांगी, बेत्ती को खातिर अपना जबान बन्द रखने के लिये, जो कुछ भी हम दोनों के बीच में हुआ था उसके बारे में ।

वर्निक—मुझे यह करना पड़ा ।

लोना—अब ईश्वर की शपथ मुझे इस बात का कुछ भी पश्चात्ताप नहीं है कि मैं उस समय आपके से बाहर हो उठी थी ।

बर्निक—मेरी उस समय क्या दशा थी मैं तुमसे साफ़ साफ़ कह दूँ । मेरी माँ तुम्हें मालूम है रोज़गार की मालिक थी, लेकिन कोई भी व्यवसाय करने की शक्ति उसमें नहीं थी । मैं पेरिस से घर जल्दी बुलाया गया । परिस्थिति नाज़ुक थी, और लोगों ने मेरा विश्वास किया कि मैं सब कुछ ठीक कर दूँगा । मुझे मिला क्या ? मुझे मिला—और तुम्हें इसे बिल्कुल गुप्त रखना होगा—एक परिवार सर्वनाश के किनारे । हाँ उसी दशा में जैसे कि सर्वनाश के किनारे, एक पुराना प्रतिष्ठित कर्म जिसमें हमारी तीन पीढ़ियाँ बीत चुकी थीं । मैं अपने घर का एकलौता लड़का, सिवा इसके क्या करता कि कोई न कोई उपाय इसे बचाने के लिये निकालता ?

लोना—और इसलिये तुमने एक स्त्री का बलिदान कर बर्निक का घराना बचाया ।

बर्निक—तुम खूब जानती हो कि बेत्ती मुझे प्रेम करती थी ।

लोना—लेकिन मेरे बारे में ?

बर्निक—विश्वास करो लोना ! तुम मेरे साथ कभी सुखी न रहतीं ।

लोना—क्या तुमने मेरे सुख का विचार कर के मेरा बलिदान किया ?

बर्निक—तो क्या तुम समझती हो कि मैंने केवल स्वार्थ के लिये यह सब किया ? अगर मैं अकेला खड़ा हुआ होता तो मैं फिर प्रारम्भ से चलता—प्रसन्नता और साहस के साथ । लेकिन तुम नहीं समझती कि किसी व्यवसायी आदमी की जिन्दगी,

उसकी एक के बाद एक जिम्मेदारियाँ उस व्यवसाय के साथ बँधी रहती हैं, जो उसे पूर्वजों से मिलता है। तुम यह नहीं सोचती कि सैकड़ों की उन्नति या अवनति, हजारों की, उसी पर निर्भर रहती है। तुम इस तथ्य का विचार नहीं करोगी कि उस समाज की, जिसमें हम तुम दोनों पैदा हुए थे, कितनी भारी हानि होती अगर बर्निक का घराना चौपट हो जाता तो ?

लोना—तो समाज के लिये तुमने इन पन्द्रह वर्षों से असत्य के आधार पर अपनी स्थिति कायम रखी है ?

बर्निक—असत्य के आधार पर ?

लोना—बेत्ती उन सब बातों के बारे में क्या जानती है, जो तुम्हारे और उसके संयोग की तह में हैं ?

बर्निक—तो तुम चाहती हो कि बेमतलब इन सब बातों को खोल कर मैं उसके हृदय को चोट पहुँचाऊँ ?

लोना—बेमतलब तुम कहते हो। खैर, खैर, तुम व्यवसायी मनुष्य हो, तुम जानते होगे क्या बेमतलब है और क्या नहीं है। लेकिन सुनो कारस्तेन ! मैं अब स्पष्ट सत्य कहने जा रही हूँ। कहो तुम सचमुच सुखी हो ?

बर्निक—मेरे पारिवारिक जीवन से तुम्हारा मतलब है ?

लोना—जी हाँ।

बर्निक—मैं सुखी हूँ, लोना ! तुम्हारा त्याग मेरे लिये व्यर्थ नहीं प्रमाणित हुआ है। मैं ईमानदारी के साथ कहता हूँ कि मैं प्रत्येक वर्ष अधिकाधिक सुखी होता गया हूँ। बेत्ती सीधी और आज्ञाकारिणी है, और अगर मैं तुमसे कहता कि किस तरह इन वर्षों में, मेरे ही रास्ते पर उसने अपने चरित्र को भुंकाना सीखा है...

लोना—हूँ !

बर्निक—शुरू में तो प्रेम के बारे में उसके बड़े भावुक विचार थे । वह इस बात को वर्दाशत नहीं कर सकती थी कि धीरे धीरे प्रेम शान्त साहचर्य के रूप में परिवर्तित हो जायेगा ।

लोना—लेकिन अब उसने इस बात को वर्दाशत कर लिया है ?

बर्निक—बिल्कुल । जैसा कि तुम अनुमान कर सकती हो, मेरे नित्य के संसर्ग का उसके चरित्र को बनाने में कम भाग नहीं रहा है । हर एक को, अगर उसे अपने समाज के योग्य बनकर रहना होता, अपने मनोवेगों को अपनी शक्ति के अनुसार झुकाना पड़ता है । और बेत्ती अपनी जगह पर धीरे धीरे यह समझ गई है, और इसीलिये हमारा घर हमारे अन्य नागरिक भाइयों के लिये आदर्श हो गया है ।

लोना—लेकिन तुम्हारे नागरिक भाई उस असत्य के बारे में कुछ नहीं जानते ।

बर्निक—असत्य ?

लोना—हाँ, वह असत्य जिसे तुमने पन्द्रह वर्षों तक दबा रक्खा है ।

बर्निक—तुम्हारे कहने का मतलब कि...

लोना—मैं इसे असत्य कहती हूँ—तीन ओर असत्य कहती हूँ—पहले मेरे प्रति, फिर बेत्ती के प्रति और फिर जान के प्रति ।

बर्निक—बेत्ती ने मुझे कभी इस सम्बन्ध में कुछ कहने के लिये नहीं कहा ।

लोना—क्योंकि उसे कुछ पता नहीं ।

बर्निक—और तुम उसकी खातिर कहने को नहीं कहोगी ।

लोना—नहीं, मैं लोगो की कदुक्तियों को सहन करने को व्यवस्था कर लूँगी, मेरे कन्धे मजबूत हैं।

बर्निक—और जान भी मुझसे इसकी सफाई नहीं चाहता, उसने मुझसे प्रतिज्ञा की है।

लोना—लेकिन तुम्हारा अपने प्रति क्या कर्तव्य है, कारस्तेन ? तुम्हें अपने भीतर किसी ऐसी भावना का अनुभव नहीं होता जो तुम्हें प्रेरित करे इस असत्य से अपने को बचा लेने के लिये ?

बर्निक—तो क्या तुम चाहती हो कि मैं स्वयं अपनी इच्छा से अपने परिवार के सुख का वलिदान कर दूँगा और साथ ही साथ संसार में मेरी जो स्थिति है, उसका भी ?

लोना—यह सच है तुमने अपने काम से बड़ा लाभ उठाया है, अपने लिये भी और दूसरो के लिये भी। कस्बे में तुम सबसे धनी और प्रभावशाली व्यक्ति हो। यहाँ कोई भी किसी बात में तुम्हारी इच्छा के प्रतिकूल जाने का साहस नहीं करता, क्योंकि तुम कालिमा या त्रुटिहीन समझे जाते हो, तुम्हारा परिवार आदर्श परिवार समझा जाता है और तुम्हारा चरित्र आदर्श चरित्र। लेकिन तुम्हारी इस सारी महानता की और इसके साथ ही तुम्हारी स्थिति धाखे के दलदल पर है। कोई समय आ सकता है कि एक शब्द कहा जाय, और तुम्हारे साथ तुम्हारी महानता उसी दलदल में फँस जाय, अगर तुम अवसर रहते अपने को नहीं बचा लेते।

बर्निक—तुम्हारे यहाँ आने का उद्देश्य क्या है ?

लोना—कारस्तेन ! मैं चाहती हूँ तुम्हारी सहायता करना, तुम्हारे पैरो के नीचे दृढ़ भूमि लाने में।

बर्निक—प्रतिहिंसा ! तुम बदला चुकाना चाहती हो। मुझे

इसका सन्देह हुआ था । लेकिन तुम सफल नहीं होगी । यहाँ एक ही आदमी ऐसा है जो प्रामाणिक ढंग से बोल सकता है और वह चुप रहेगा ।

लोना—तुम्हारा मतलब जान से है ?

बर्निक—हाँ जान । अगर कोई दूसरा मुझे दोषी कहेगा, तो मैं सब कुछ अस्वीकार कर जाऊँगा । अगर कोई मुझे कुचलना चाहेगा तो, मैं अपनी जिन्दगी के लिये युद्ध करूँगा । लेकिन मैं कहता हूँ इसमें तुम्हें सफलता नहीं होगी । जो मुझे नीचे गिरा सकता है, वह कुछ नहीं कहेगा । और वह बाहर भी चला जा रहा है । [रुमेल और विजलान्त दाहिनी ओर से आते हैं ।]

रुमेल—नमस्कार, भाई बर्निक, नमस्कार । हम लोगों के साथ व्यवसाय-संघ तक तुम्हें चलना होगा । वहाँ एक सभा है रेलवे की योजना के बारे में, तुम्हें मालूम होगा ।

बर्निक—मैं नहीं जा सकता । मेरे लिये तो इस समय असम्भव है ।

विजलान्त—आपको जरूर चलना होगा, मिस्टर बर्निक !

रुमेल—बर्निक जरूर चलिये । हमारा विरोध चल रहा है । हैमर और दूसरे वे सब जो समुद्र के किनारे रेलवे लाइन चाहते हैं, कह रहे हैं कि इस नई योजना की आड़ में व्यक्तिगत स्वार्थ है ।

बर्निक—खैर, तो उन्हें समझा दीजियेगा ।

विजलान्त—हम लोगों के समझाने का कोई फल नहीं होगा, बर्निक !

रुमेल—नहीं, नहीं, आपको अवश्य चलना है—स्वयं । स्वभावतः कोई भी ऐसी दुरंगी का सन्देह आपके लिये करने का साहस नहीं करेगा ।

लोना—मैं भी समझती हूँ, कोई नहीं।

बर्निक—मुझसे नहीं हो सकता। मैंने आपसे कह दिया, मेरी तबियत अच्छी नहीं है। या कम से कम ठहरो, मैं अपने को सम्हाल लूँ। [रारलुन्त दाहिनी ओर से भीतर आता है।]

रारलुन्त—तुम्हारी कीजिये मिस्टर बर्निक ! लेकिन मैं तो बेहद परेशान हो गया हूँ।

बर्निक—क्यों, क्या बात है ?

रारलुन्त—मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ मिस्टर बर्निक ! क्या इसमें आपकी अनुमति है कि एक सयानी लड़की, जिसे कि आपके घर में आश्रय मिला है, खुली सड़क पर ऐसे आदमी के साथ घूम रही है जो...

लोना—कौन आदमी पादरी साहब ?

रारलुन्त—ऐसे आदमी के साथ ज़िमके साथ से वह बहुत दूर रक्खी जानी चाहिये।

लोना—हाँ ! हाँ !

रारलुन्त—आपकी अनुमति है, मिस्टर बर्निक ?

बर्निक—[अपना हँट और दस्ताने खोजते हुए] मुझे इस सम्बन्ध में कुछ नहीं मालूम। तुम्हारी कीजिये, मैं बड़ी जल्दी में हूँ। मुझे व्यवसाय-संघ पहुंचना है।

[हिस्मा बगीचे की ओर से आता है, और बाईं ओर के आखिरी दरवाजे तक जाता है।]

हिस्मा—बेत्ती ! बेत्ती ! इधर सुनना।

मिसेज़ बर्निक—[दरवाजे पर आकर] क्या है ?

हिल्मा—तुम्हे बगीचे में जाना चाहिये और किसी विशेष व्यक्ति और दीना दोर्फ में जो छेड़छाड़ चल रही है उसका अन्त करना चाहिए । उनकी बातें सुनते सुनते मेरा नाकों दम हो गया ।

लोना—सचमुच ? और वह विशेष व्यक्ति कहता क्या रहा है ?

हिल्मा—ओह ! केवल यह कि वह चाहता है कि वह उसके साथ अमेरिका चली जाय । ओफ़ !

रारलुन्त—यह सम्भव है ?

मिसेज़ बर्निक—कह क्या रहे हो ?

लोना—लेकिन यह तो बड़ी अच्छी बात होगी ।

मिसेज़ बर्निक—असम्भव ! तुमने ठीक सुना न होगा ।

हिल्मा—तब तुम खुद उनसे पूछ लो । यह जोड़ी आ रही है । कृपाकर मुझे इसमें न घसीटना ।

बर्निक—[रुमेल और विजलान्त से] मैं अभी आप लोगों के पीछे ही क्षण भर में चल दूँगा । [रुमेल और विजलान्त दाहिनी ओर से निकल जाते हैं । जान और दीना बगीचे की ओर से आते हैं ।]

जान—वाह लोना ! यह हम लोगों के साथ चलेगी ।

मिसेज़ बर्निक—लेकिन जान ! तुम्हारा दिमाग तो नहीं बिगड़ गया है ?

रारलुन्त—मैं अपने कानों का विश्वास करूँ ? ऐसी भयंकर बात ? बहकाने की किस कला से आपने...

जान—सुनिये भी इधर, जनाब । आप कह क्या रहे हैं ?

रारलुन्त—तुम बोलो दीना ! तुम यह करना चाहती हो, अपनी ही मर्जी से ?

दीना—मुझे यहाँ से दूर निकल जाना चाहिये ।

रारलुन्त—लेकिन इनके साथ ! इनके साथ !

दीना—क्या आप यहाँ किसी और दूसरे को बतला सकने हैं, जोकि मुझे अपने साथ ले जाने का साहस करे ?

रारलुन्त—तब तुम्हें जान लेना होगा कि यह कौन है ।

जान—चुप रहो ।

बर्निक—अब एक शब्द भी नहीं ।

रारलुन्त—अगर मैं नहीं बोलता तो मैं उस समाज की सेवा के अयोग्य हूँ, जिसके नैतिक जीवन का मैं अभिभावक बनाया गया हूँ, और इस लड़की के प्रति बड़े अन्याय का आचरण कर रहा हूँ, जिसके पालन पोषण में मेरा काफी हाथ रहा है और जो मेरे लिये...

जान—समझ लो तुम क्या कर रहे हो ।

रारलुन्त—वह जानेगी । यह वही पुरुष है जो तुम्हारी माँ की सारी मुसीबत का और लज्जा का कारण था ।

बर्निक—मिस्टर रारलुन्त !

दीना—यह [जान से] यह सच है ?

जान—कारस्तेन ! तुम जवाब दो ।

बर्निक—अब एक शब्द भी नहीं । आज इस बारे में हम लोगों को दूसरा शब्द न कहना पड़े ।

दीना—तब यह सच है ?

रारलुन्त—हाँ सच है । और इतना ही नहीं, यह व्यक्ति, जिसका तुम विश्वास करने जा रही थीं, घर से खाली हाथ नहीं

भागा । पूछो इससे बुढ़ी मिसेज़ बर्निक के कैश बाक्स की बात ।
मि० बर्निक उस मामले के गवाह हैं ।

लोना—मूठा है ।

बर्निक—ओह !

मिसेज़ बर्निक—हे ईश्वर ! हे ईश्वर !

जान—[गरलुन्त पर घंसा तान कर झपटते हुए] और तुम्हारी
इतनी हिम्मत

लोना—[उसे पकड़ती हुई] उसे मारो न जान !

रारलुन्त—यह ठीक है । मारो मुझे ! लेकिन सत्य तो प्रकट
होगा ही और यह सत्य है, मिस्टर बर्निक ने इसे मान लिया है
और सारा क़स्बा यह जानता है । अब दीना ! तुमने जाना इसे ?
[थोड़ी देर सन्नाटा]

जान—[धीरे से बर्निक की बाँह पकड़ कर] कारस्तेन !
कारस्तेन ! तुमने क्या किया ?

मिसेज़ बर्निक—[रोती हुई] हाय ! कारस्तेन ! तुम्हें यह
अपमान मेरे कारण सहना पड़ा है !

मान्स्तात—[दाहिनी ओर से तेजी से आकर और दरवाजे का
हैन्डिल पकड़ कर बुलाते हुए] अब आपको अवश्य आना चाहिये
मिस्टर बर्निक ! सारी रेलवे का भविष्य अब कच्चे सूत पर लटक
रहा है ।

बर्निक—[खोया हुआ सा] क्या है ? मुझे क्या करना...

लोना - [गंभीरता से और ज़ोर देकर] तुम्हें जाना है और
समाज का स्तम्भ होना है, जीजा !

सान्स्तात—हाँ, जल्दी आइये । हमें आपके नैतिक बल की सारी विभूति अपनी ओर चाहिये ।

जान—[बर्निक को एक ओर कर] कारस्तेन ! इसके बारे में हम लोग कल बातें करेंगे ।

[बगीचे से होकर बाहर निकल जाता है । बर्निक घबराया हुआ सान्स्तात के साथ दाहिनी ओर में बाहर निकल जाता है]

तीसरा अङ्क

[वही कमरा । बर्निक हाथ में बेंत लिये, भोषण क्रोध में बाड़ें
और मे दरवाजा अधखुला छोड़कर प्रवेश करता है ।]

बर्निक—[अपनी स्त्री से कहता है जो कि दूसरे कमरे में है] सुनती हो ? मैंने उसे आज खूब ठीक कर दिया है । मैं नहीं समझता कि वह इस मार को भूलेगा । क्या कहती हो ? और मैं कहता हूँ कि तुम बेवकूफ मां हो । तुम उसके लिये बहाना करती हो, और उसकी कोई भी बदमाशी मामूली बात समझती हो, बदमाशी नहीं । तब तुम इसे क्या कहोगी—रात को घर से निकल जाना, मछली मारने की नाव में चढ़ जाना, और देर तक दिन में भी बाहर रहना और जब मैं स्वयं इतना परेशान हूँ मुझे भयंकर रूप में चिन्तित कर देना ? और इस पर भी वह बेईमान लड़का मुझे धमकाता है कि वह कहीं भाग जायेगा ! अच्छा उसे भागने दो । तुम ? नहीं उसका क्या होता है इसके लिये तुम अपने को बेचैन क्यों बनाओगी ? मैं तो समझता हूँ कि अगर वह मर जाता तो भी... सचमुच ? मुझे दुनिया में कुछ कर जाना है और मुझे निस्सन्तान होने की इच्छा नहीं है । अब विरोध न करना बेत्ती ! जैसा कहता हूँ वैसाही होगा । वह घर में बन्द किया गया है । [सुनता है] चुप, किसीको कुछ पता न चले । [क्राप दाहिनी ओर से आता है ।]

क्राप—क्षण भर समय न दे सकेंगे, मिस्टर बर्निक ?

बर्निक—[बेंत फेंकते हुए] जरूर, जरूर, कारखाने से आते हो ?

क्राफ—हाँ ।

बर्निक—“पाम ट्री” तो ठीक है, मैं समझता हूँ ?

क्राफ—“पाम ट्री” कल समुद्र में जा सकेगा, लेकिन...

बर्निक—तब “इण्डियन गर्ल” की बात है ? मुझे सन्देह था कि वह हठी मनुष्य...

क्राफ—“इण्डियन गर्ल” भी कल चलाया जा सकेगा । लेकिन मुझे निश्चय है वह दूर तक न जा सकेगा ।

बर्निक—तुम्हारा मतलब क्या है ?

क्राफ—क्षमा कीजिये, महाशय । वह दरवाजा खुला है । मैं समझता हूँ दूसरे कमरे में कोई है ।

बर्निक—[दरवाजा बन्द करते हुए] अच्छा, अब । लेकिन वह क्या बात है जो किसी दूसरे को नहीं सुननी चाहिये ?

क्राफ—यही कि मेरा विश्वास है कि आउन की मन्शा है “इण्डियन गर्ल” को डूब जाने देना, जहाज पर के हर एक माई के लाल के साथ ..

बर्निक—हे ईश्वर ! यह तुम कैसे सोच रहे हो ?

क्राफ—मैं किसी भी दूसरी तरह नहीं सोच सकता साहब !

बर्निक—खैर जितने थोड़े में तुम कह सको...

क्राफ—अच्छी बात । आप जानते हैं जब से नई मशीनें और नये अनुभवहीन आदमी आये तब से कारखाने में कितना धीरे धीरे काम हुआ है ?

बर्निक—हाँ, हाँ ।

क्राफ—लेकिन आज सबेरे जब मैं वहाँ गया, तब देखता क्या

हूँ कि अमेरिकन जहाज़ की मरम्मत आँधी को चाल से हुई है।
पैदे का वह बड़ा छेद, सड़ी हुई चकती, आप को मालूम है ?

बर्निक—हाँ, हाँ, क्या हुआ उसका ?

क्राप—बिल्कुल मरम्मत कर दिया गया था—कम से कम
दीखता तो ऐसा ही था—किसी तरह भर दिया गया था, और
जैसे बिल्कुल नया सा मालूम हो रहा था। मैंने सुना है कि आउन
स्वयं लालटेन की रोशनी में उस पर रात भर काम करता रहा है।

बर्निक—हाँ, हाँ, तब ?

क्राप—मेरे मन में बात आगई। मजदूर जलपान करने
निकल गये थे। मुझे जहाज़ को चारों ओर से देख लेने का मौका
मिल गया, भीतर और बाहर दोनों ओर, मुझे कोई भी नहीं देख
सका। मुझे सचाई मालूम हो गई। बड़ा सन्देहग्रस्त मामला है
मिस्टर बर्निक !

बर्निक—मैं इसका विश्वास नहीं कर सकता क्राप ! मैं नहीं
कर सकता, और आउन के बारे में मैं ऐसी बात का विश्वास
नहीं करूँगा।

क्राप—मुझे बड़ा खेद है, लेकिन यह तो स्पष्ट सत्य है। कोई
बड़ी सन्देह की बात हो रही है। कोई भी नया तख्ता नहीं लगा,
जहाँ तक कि मैं देख सका, केवल ऊपर से भर दिया गया है,
उसके ऊपर पाल का कपड़ा सटा दिया गया है और ऐसी ही
चीजें...जबरदस्त बेईमानी। “इण्डियन गर्ल” न्यूयार्क नहीं पहुँच
सकेगा। फूटे हुए बर्तन की तरह वह समुद्र में चला जायेगा।

बर्निक—यह तो बड़ा भयंकर है ! लेकिन इसमें उसका
उद्देश्य क्या हो सकता है ? कुछ समझ सकते हो ?

क्राप—शायद वह मशीनों की बदनामी करना चाहता है, प्रतिहिंसा चाहता है, आप को बाध्य करना चाहता है पुराने मजदूरों को फिर बुलाने के लिये ।

बर्निक—और इसके लिये वह जहाज के सभी आदमियों का प्राण लेना चाहता है ?

क्राप—उसने उस दिन कहा था “इण्डियन गर्ल” मे आदमी नहीं है बल्कि जंगली जानवर है ।

बर्निक—हाँ, लेकिन इसके अलावा, उसे इसकी चिन्ता नहीं है कि कितने रूपयों का नुकसान होगा ?

क्राप—आउन पंजी की ओर सहानुभूति से नहीं देखता मिस्टर बर्निक ।

बर्निक—यह बिल्कुल ठीक है, वह आन्दोलनकारी है और अशान्ति पैदा करने वाला, लेकिन ऐसी नीचता । इधर देखो क्राप, एक बार तुम और इस बात का पता लगालो । दूसरे किसी से इस बारे में एक शब्द भी नहीं । अगर किसी को भी इस बारे में कुछ मालूम हुआ तो सारी बदनामी हमारे कारखाने की होगी ।

क्राप—ठीक है लेकिन

बर्निक—जब मजदूर खाने चले जायेंगे, तब तुम फिर वहाँ जाने का प्रबंध कर लेना । इस बारे में मुझे निश्चित बात मालूम हो जानी चाहिये ।

क्राप—मालूम हो जायगी साहब । लेकिन क्षमा करें, इसके बाद आप क्या करेंगे ?

बर्निक—इसकी रिपोर्ट करेंगे, सीधे तरीके पर । ऐसे बड़े जुर्म में हम लोग अपने को तो डालेंगे नहीं । मेरी अन्तरात्मा तो

ऐसी बात के लिये तैयार नहीं होगी। और विशेषतः इसका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ेगा, साधारण जनता पर भी, अखबारों पर भी—अगर यह दिखाई देगा कि मैं अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को ताक पर रखकर, न्याय होने देना चाहता हूँ।

क्राफ—बिल्कुल ठीक मिस्टर बर्निक !

बर्निक—लेकिन सब से पहले मुझे निश्चित रूप में मालूम हो जाना चाहिये। और इस बीच एक शब्द भी बाहर न हो।

क्राफ—एक शब्द भी नहीं साहब। और आपको निश्चय भी हो जायेगा।

[बगोचे से होकर सड़क पर निकल जाता है।]

बर्निक—[कुछ ज़ोर से] दिल दहलाने वाला ! लेकिन नहीं, असम्भव है, कल्पना नहीं की जा सकती। [वह जैसे ही अपने कमरे में जाना चाहता है हिल्मा दाहिनी ओर से प्रवेश करता है।]

हिल्मा—नमस्कार, कारस्तेन ! कल व्यवसाय-संघ में तुम्हारी जीत पर बधाई।

बर्निक—धन्यवाद !

हिल्मा—यह महान विजय थी, मैंने सुना, बुद्धिमत्तापूर्ण सार्वजनिक भावना की स्वार्थ और मिथ्या सन्देह पर, जैसे कि किसी फ्रेञ्च सेना का हवशियों की सेना में घुसकर उसे तितर बितर कर देना रहा हो। विस्मय की बात है कि यहाँ इतनी अप्रिय बात हो जाने पर भी आप वहाँ...

बर्निक—हाँ, हाँ बिल्कुल ठीक।

हिल्मा—लेकिन अन्तिम युद्ध अभी बाकी है।

बर्निक—रेलवे के सम्बन्ध में तुम्हारा मतलब है न ?

हिल्मा—हाँ, मैं अनुमान करता हूँ कि हैमर जो आपत्ति खड़ी कर रहा है आपको मालूम है ।

बर्निक—[उसुकता से] नहीं, क्या है ?

हिल्मा—जो चर्चा इधर उधर चल रही है उसमें वह पड़ गया है. और इस सम्बन्ध में एक लेख तैयार कर रहा है ।

बर्निक—क्या चर्चा ?

हिल्मा—ब्राञ्च लाइन के किनारे जो बहुत बड़ी सम्पत्ति खरीदी जा रही है उसके बारे में ।

बर्निक—क्या ? इस तरह की कोई बात फैल रही है ?

हिल्मा—सारे कस्बे में फैल गई है । मैंने कुछ में सुना जब वहाँ गया था । लोग कह रहे हैं कि हमारे किसी वकील ने कमीशन पर चुपके से सब खरीद लिया है—सारा जंगल, सारी खान की ज़मीन और सारे भरने...

बर्निक—यह नहीं बतलाया उन्होंने कि किस की ओर से ?

हिल्मा—कुछ में तो वे सोच रहे थे कि यह किसी कम्पनी का काम है, जिसका सम्बन्ध इस कस्बे से नहीं है, उसे आपकी स्कीम का पता चल गया और जल्दी करके खरीद लिया जब तक कि इन चीज़ों का दाम बढ़ने न पाया था । यह बदमाशी नहीं है ? ओफ़ ?

बर्निक—बदमाशी ?

हिल्मा—हाँ, हमारे पेट में बाहर वालों का हाथ डालना, और एक हमारे स्थानीय वकील का ऐसी बातों के लिये अपने को आगे बढ़ाना । और अब तो सारा लाभ बाहर वालों का होगा ।

बर्निक—लेकिन खैर, यह तो अभी गप्प है ।

हिल्मा—इस बीच में लोगों का इस पर विश्वास हो गया है, और कल या परसों मुझे कोई शक नहीं है। मैं सभी बात तथ्य रूप में सामने रख देगा। कस्बे में तो इसी समय इस सम्बन्ध में बड़ी बेचैनी है। बहुत से लोग कह रहे थे कि अगर यह बात सच हो तो वे अपना नाम हिस्सेदारों की लिस्ट से हटा लेंगे।

बर्निक—असम्भव !

हिल्मा—सचमुच ? क्यों ये लालची आपका साथ देने के लिये इतने इच्छुक थे इस आयोजन में ? आप नहीं समझते कि उन्होंने भी अपने लिए मुनाफा समझा था ?

बर्निक—यह असम्भव है। मुझे इसमें सन्देह नहीं, हमारे इस छोटे समाज में इतनी अधिक सार्वजनिक भावना है...

हिल्मा—हमारे समाज में ? क्योंकि आप घोर आशावादी हैं, और इसलिये आप औरों की तुलना भी अपने ही से करते हैं। लेकिन मैं, जिसने कि साधारण रूप में कुछ देखा और अनुभव किया है, यहाँ एक भी ऐसा प्राणी नहीं देखता, हम लोगों को छोड़कर, एक प्राणी भी नहीं जो कि आदर्श का झण्डा लिये रहे। [बरामदे में जाता है] अरे ! वे देख पड़ रहे हैं।

बर्निक—कौन देख पड़ रहे हैं ?

हिल्मा—हमारे अमेरिका वाले मित्र। [दाहिनी ओर बाहर की ओर देखता है] और वह कौन है जिसके साथ घूम रहे हैं ? ऐसा मालूम होता है, “इण्डियन गर्ल” का कैप्टन तो नहीं है ? ओह !

बर्निक—उससे वे क्या चाहते होंगे ?

हिल्मा—वही तो उनके लिये ठीक साथी है। देखने से मालूम होता है जैसे वह गुलाम बेचने का रोजगार करता रहा हो या

समुद्री डाकू हो। और कौन जानता है दूसरे दोनों इधर कई वर्षों तक क्या करते रहे होंगे ?

बर्निक—सुनो, उनके बारे में ऐसी बातें सोचना घोर अन्याय है।

हिस्मा—हाँ, आप आशावादी हैं। लेकिन ये फिर हम लोगों पर चढ़े चले आ रहे हैं। इसलिये जब तक मौका है मैं तो भाग जाऊँगा। [बाईं ओर के दरवाजे की ओर जाता है, दाहिनी ओर के दरवाजे से लोना आती है।]

लोना—एँ ! हिस्मा ! मेरे कारण भागे जा रहें हो क्या ?

हिस्मा—बिल्कुल नहीं, मैं जल्दी में हूँ। मुझे बेत्ती से कुछ कहना है।

[बाईं ओर के आखिरी कमरे में चला जाता है।]

बर्निक—[थोड़ी देर चुप रह कर] हाँ तो लोना ?

लोना—कहो।

बर्निक—आज मेरे बारे में क्या सोच रहो हो ?

लोना—वही जो कल। कम या ज्यादा वही असत्य।

बर्निक—इस सम्बन्ध में मैं तुम्हें और बतला दूँ। जान कहौं है ?

लोना—आ रहा है। उसे पहले एक आदमी से मिलना है।

बर्निक—कल तुमने जो सुना उसके बाद तुम समझ सकती हो कि अगर कहीं असल बात खुल गई तो फिर मेरी ज़िन्दगी चौपट है।

लोना—मैं यह समझती हूँ।

बर्निक—खैर यह बात विवेक में आ सकती है कि मैं उस अपराध का अपराधी नहीं था जिसकी यहाँ इतनी चर्चा थी।

लोना—हाँ, यह विवेक में आ सकता है लेकिन चोर था कौन ?

बर्निक—कोई भी चोर नहीं था। रुपया चोरी तो गया ही नहीं, एक पैसा भी नहीं।

लोना—यह कैसे ?

बर्निक—कह तो रहा हूँ, एक पैसा भी नहीं।

लोना—लेकिन चारों ओर की वह कानाफूसी ? यह लज्जास्पद बात कैसे फैली कि जान...

बर्निक—लोना मैं समझता हूँ कि तुमसे मैं कह सकता हूँ जो कि और किसी से नहीं कह सकता, तुमसे मैं कुछ भी नहीं छिपाऊंगा। यह खबर फैलाने में किसी अंश तक मेरा ही दोष था।

लोना—तुम्हारा ? तुम उस आदमी के प्रति ऐसा कर सके जिस ने तुम्हारे लिये...

बर्निक—उस समय कैसी दशा थी बिना इसे समझे मुझे दोषी न ठहराओ। इसके बारे में मैंने तुमसे कहा था। मैं घर आया और मैंने देखा कि मेरी मा इधर उधर अनेक खतरनाक व्यवसायों में पँसी है। हमारे लिये सारे चिन्ह दुर्भाग्य के थे। ऐसा मालूम हुआ कि हम लोगों पर दुर्भाग्य की वर्षा हो रही है, और हमारा परिवार सर्वनाश के किनारे पहुँच चुका है। मैं कुछ तो निराश हो गया और कुछ विचिप्त। लोना ! केवल अपने इन विचारों को दबाने के लिये ही मैं उस चक्र में पड़ गया था, जिसका अन्त जान के निकल भागने से हुआ।

लोना—हूँ !

बर्निक—तुम खूब अनुमान कर सकती हो कि किस तरह से तुम दोनों के चले जाने के बाद हर तरह की खबरें उड़ीं। लोग

कहने लगे कि यह उसका पहला ही जुर्म नहीं था, और यह कि दोर्फ को बहुत सा रुपया मिल गया था, चुप रहने के लिये और निकल भागने के लिये। दूसरे लोग कहने लगे कि रुपया उसकी स्त्री को मिला है। उसी समय यह स्पष्ट था कि हमारा फर्म अपने उत्तरदायित्व को सम्हालने में कठिनाई का अनुभव कर रहा था। इससे बढ़ कर और स्वाभाविक क्या था कि वे बदनामी उड़ाने वाले इन दोनों बातों को मिला देते ? और चूंकि कि वह स्त्री यहां रह गई दरिद्रता से जिन्दगी बिताती हुई, लोगों ने कहा कि जान रुपया अपने साथ अमेरिका लेगया, और हर बार जब यह भूठी खबर उड़ी रुपये की रकम बराबर बढ़ती गई।

लोना—और तुम कारस्तेन ?

बर्निक—मैंने इस भूठी खबर का सहारा लिया जैसे कि डूबता हुआ आदमी तिनके का सहारा लेता है।

लोना—तुमने इसके फैलाने में और सहायता की ?

बर्निक—मैंने इस का खण्डन नहीं किया। हमारे महाजन दबाने लगे, और मेरा काम था किसी तरह उनको शान्त करना। नतीजा यह हुआ कि लोगों को हमारे फर्म की विश्वसनीयता में जो सन्देह हुआ था, उसका अन्त हो गया। लोग कहने लगे कि यह दुर्भाग्य का चन्द्रोज्ञा धक्का हम लोगों पर पड़ा है। जरूरत केवल इस बात की थी कि महाजन हमलोगों को बहुत तंग न करें, केवल हम लोगों को मौका दें और फिर सभी महाजन अपना पूरा पूरा हिसाब पा जायेंगे।

लोना—और सभी महाजन पूरा पूरा पा गये ?

बर्निक—हाँ लोना ! उस भूठी खबर ने हमारे फर्म की रक्षा की, और मुझे वह आदमी बना दिया जो कि मैं इस समय हूँ।

लोना—इसका मतलब यह कि एक असत्य ने तुम्हें वह आदमी बना दिया जो कि तुम इस समय हो ।

बर्निक—उस समय इसने किसकी हानि की ? कभी लौट कर न आने की तो जान की इच्छा ही थी ।

लोना—तुम पूछते हो इसने किसकी हानि की ? अपने हृदय में देखो और तब मुझसे कहो इसने तुम्हारी ही हानि नहीं की ?

बर्निक—कृपा कर किसी भी पुरुष के हृदय में देखो और तुम बराबर देखोगी, हर एक के भीतर, कम से कम एक काला निशान, जिसे कि उसे छिपा कर रखना है ।

लोना—और तुम लोग अपने को समाज के स्तम्भ कहते हो ?

बर्निक—समाज में कोई दूसरा इससे अच्छा नहीं है ।

लोना—ऐसे समाज को ऊपर उठाने या न उठाने का क्या महत्व हो सकता है ? इसका निर्माण हुआ कैसे है ? दिखावटीपन और भूठ और कुछ नहीं । तुम हो इस कस्बे के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति, आराम और अमीरी में, शक्ति और सम्मान में, तुम जिसने कि एक निरपराध आदमी को भीषण अपराध में बदनाम कर रक्खा है ।

बर्निक—तो क्या तुम समझती हो कि उसके साथ मैंने जो अपराध किया है, उसका गहरा विचार मेरे हृदय में नहीं है ? और तुम समझती हो कि इसके लिये मैं उसे बदला देने के लिये तैयार नहीं हूँ ?

लोना—कैसे ? सच्ची बात को प्रकट कर के ?

बर्निक—इस पर जोर देने को तुम्हारा हृदय कहता है ?

लोना—ऐसे अपराध का बदला और क्या हो सकेगा ?

बर्निक—मेरे पास धन है लोना ! जान जितना चाहे मांगे ।

लोना—हाँ, उसे धन देने को कहो, और तब तुम सुनोगे वह क्या कहता है ।

वर्निक—तुम्हें मालूम है उसकी मंशा क्या है ?

लोना—नहीं, कल से तो वह गूंगा हो गया है । वह ऐसा दीखता है, जैसे इसने उसे एकाएक बूढ़ा बना दिया है ।

वर्निक—मैं उससे पूछूंगा ।

लोना—वह यह आ रहा है । [दाहिनी ओर से जान आता है]

वर्निक—[उसकी ओर बढ़ते हुए] जान !

जान—[उसे अलग हटते हुए] पहले मेरी सुनो । कल सबेरे मैंने तुम्हें वचन दिया था कि मैं अपनी जबान बन्द रखूंगा ।

वर्निक—तुमने वचन दिया था ।

जान—लेकिन तब मुझे मालूम नहीं था कि...

वर्निक—जान ! परिस्थिति बतलाने के लिये मुझे दो शब्द कहने दो ।

जान—यह अनावश्यक है । मैं परिस्थिति खूब समझता हूँ । कारखाना उस समय खतरे की हालत में था, मैं दूर चला गया था और मेरा असहाय नाम और सम्मान तुम्हारी दया पर निर्भर था । खैर, तुमने जो किया उसके लिये मैं तुम्हें बहुत दोष नहीं देता, हम अभी लड़के और विचारहीन थे उन दिनों । लेकिन अब मुझे सत्य की जरूरत है । और अब तुम्हें कहना पड़ेगा ।

वर्निक—और चूंकि मुझे नैतिक महत्व के लिये अपनी सभी नेकनामी की जरूरत है, इस समय, इसलिये मैं नहीं कह सकता ।

जान—मेरे बारे में झूठी खबरें जो तुमने उड़ाईं उनकी मैं बहुत चिन्ता नहीं करता। वह दूसरी बात है जिसका अपराध कि तुम्हें स्वीकार करना पड़ेगा। मैं दीना को अपनी स्त्री बनाऊँगा, और यहाँ—यहीं तुम्हारे कस्बे में, मैं बस जाना और उसके साथ रहना चाहता हूँ।

लोना—तुम यही करना चाहते हो ?

वर्निक—दीना के साथ ? दीना तुम्हारी स्त्री ? इसी कस्बे में ?

जान—हां यहीं, और किसी जगह नहीं। मैं यहाँ रहना चाहता हूँ इन सभी झूठों और बदमाशों को ललकारने के लिये। लेकिन पहले इसके कि मैं उसे अपने वश में कर सकूँ, तुम्हें मुझे मुक्त करना होगा।

वर्निक—तुमने यह नहीं सोचा है कि अगर मैं एक बात मान लूँगा तो इसका लाजिमी मतलब यह होगा कि दूसरी बात की जिम्मेदारी भी मुझी पर है। तुम कहोगे कि हम लोग बहीखाते से दिखला सकते हैं कि कोई भी बेईमानी कभी हुई ही नहीं। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता। हमारा बहीखाता उन दिनों ठीक ठीक नहीं लिखा जाता था। और अगर मैं कर भी सकूँ तो इसका लाभ क्या होगा ? किसी भी हालत में क्या मुझ पर उंगली नहीं उठेगी ? क्या यह न कहा जायगा कि मैंने झूठ से अपनी रक्षा की, और पन्द्रह वर्षों तक उसी झूठ के पीछे चलता रहा, उसके सारे फल उठाये, उसे मिटाने के लिये एक उंगली भी नहीं उठाई ? तुम हमारे समाज को अच्छी तरह नहीं जानते, नहीं तो तुम समझ जाते कि इसका मतलब मेरा सर्वनाश होगा।

जान—मैं तुमसे केवल यही कह सकता हूँ कि मैं मिसेज दोर्क की लड़की को अपनी स्त्री बनाना चाहता हूँ और इस कस्बे में रहना चाहता हूँ उसके साथ।

बर्निक—[अपने ललाट का पसीना पोंछते हुए] सुनो जान ! और तुम भी लोना ! मैं इस समय जिन परिस्थितियों में हूँ वे असाधारण हैं। मैं ऐसी स्थिति में हूँ कि यदि तुम यह आघात मुझपर करना चाहो, तो तुम केवल मेरा ही नाश नहीं करोगे, बल्कि एक महान भविष्य का भी नाश कर डालोगे, उसकी सारी विभूतियों के साथ, जो कि इस समय समाज के सामने उपस्थित है, वह समाज जिसमें तुम्हारा बचपन बीता था।

जान—और अगर मैं तुम पर यह आघात न करूँ, तो मैं अपने ही हाथ से अपने भविष्य का सारा सुख मिटा दूँगा।

लोना—कहो कारस्टेन !

बर्निक—तब, कह दूँ तुमसे। यह रेलवे के आयोजन से लगा हुआ है और सब बातें इतनी आसान नहीं हैं जितनी कि तुम समझते हो। मैं अनुमान करता हूँ, तुमने सुना होगा कि पारसाल समुद्र किनारे रेलवे लाइन की बात चल रही थी। बहुतेरे प्रभावशाली व्यक्तियों ने इस बात का समर्थन किया—कस्बे के लोग, आस पास के देहात और यहां तक कि समाचारपत्रों ने भी—लेकिन मैंने किसी तरह इस प्रस्ताव को दबा दिया, इस आधार पर कि इससे हमारी स्टीमर लाइन के रोजगार पर धक्का लगता।

लोना—स्टीमर के रोजगार से तुम्हारा कोई सम्बन्ध है ?

बर्निक—हाँ, लेकिन इस बात को लेकर मुझपर सन्देह करने का साहस किसी ने नहीं किया, मेरे प्रतिष्ठित नाम से इस बात में मेरी रक्षा होगई। मैं तो वह हानि सह लेता लेकिन यहां के सभी लोग नहीं सह सकते। इसलिये भीतरी लाइन का निश्चय हुआ। जब यह हुआ उसी समय मैंने निश्चय कर लिया कि कस्बे तक एक ब्राञ्च लाइन लाई जायेगी।

लोना—इसके बारे में तुमने कुछ नहीं कहा, कारस्तेन ?

वर्निक—तुमने बड़ी दूर तक जंगल, खान और भरने खरीद लिए जाने की खबर सुनी है ?

जान—हाँ, शायद किसी बाहरी कम्पनी ने खरीद लिया है ।

वर्निक—इस समय सम्पत्ति की ये चीजें जिस हालत में हैं उनके मालिकों के लिये व्यर्थ हैं जो कि आस पास में इधर-उधर फैले हैं । इस लिये ये बहुत सस्ती विक गई हैं । अगर खरीदने वाला तब तक ठहर गया होता जब तक कि ब्राञ्च लाइन की चर्चा चल जाती, तब तो मालिक बड़ा कड़ा दाम माँगते ।

लोना—खैर तब ?

वर्निक—मैं तुमसे कोई ऐसी बात कहने जा रहा हूँ जिस के कई अर्थ लगाए जा सकते हैं—एक ऐसी बात जिसे हमारे समाज में कोई भी आदमी तभी स्वीकार कर सकता है जब कि उसका विश्वास और सम्मान बहुत अधिक हो, जिस पर कि वह खड़ा हो सके ।

लोना—तब ?

वर्निक—वह मैंने ही खरीदा है ।

लोना—तुमने ?

जान—अपनी ही ताकत से ?

वर्निक—अपनी ही ताकत से ? अगर ब्राञ्च लाइन निकल जाय तो मैं करोड़पती हूँ, और अगर नहीं—बस सर्वनाश ।

लोना—यह तो बड़ा खतरे का काम है, कारस्तेन !

वर्निक—मैंने अपना भाग्य इस खतरे में डाल दिया है ।

लोना—मैं तुम्हारी किस्मत की बात नहीं सोचती हूँ, लेकिन अगर यह मालूम हो जाय कि...

बर्निक—हाँ यही तो इसका मर्म-स्थान है। अपने सम्मान और विश्वास के पद के साथ जो मेरा अब तक रहा है, मैं सब कुछ अपने कंधे पर उठा कर चल सकता हूँ और अपने नागरिक भाइयों से कह सकता हूँ “देखो मैंने यह जोखिम उठाई है समाज की भलाई के लिए।”

लोना—समाज की भलाई के लिए ?

बर्निक—हाँ, और कोई भी प्राणी मेरे उद्देश्य पर सन्देह नहीं करेगा।

लोना—तब कुछ थोड़े लोग/जिनका इससे सम्बन्ध है, अधिक खुल कर काम करते रहे हैं, बिना किसी भी गुप्त उद्देश्य या विचार के।

बर्निक—कौन ?

लोना—क्यों ? रुम्मेल्, सान्स्तात् और विजलान्त।

बर्निक—उनको अपनी ओर करने के लिये मैं ने उन्हें इस रहस्य का पता दे दिया था।

लोना—और वे ?

बर्निक—मुनाफा का पाँचवां हिस्सा, वे अपना हिस्सा मान गये हैं।

लोना—आह ! ये समाज के स्तम्भ !

बर्निक—क्या समाज स्वयं हम लोगों को ऐसी छिपी कारेवाई करने के लिये मजबूर नहीं करता ? अगर यह छिपे छिपे न किया होता तो क्या हुआ होता ? हर एक आदमी इस आयोजन में हाथ बँटाने के लिये कमर कसने लगता, सब कुछ बँट जाता—बुरा इन्तजाम होता और ढह पड़ता। कस्बे में मुझे छोड़ कर कोई

भी दूसरा आदमी इस योग्य नहीं है जो इतना बड़ा काम, जितना बड़ा कि यह होगा, उठाकर पार लगा सके। इस देश में, सब कहीं, बिना किसी अपवाद के, केवल विदेशी जो यहाँ आकर बस गये हैं बड़े बड़े कारबार करने में समर्थ हैं। इसीलिये मेरी अन्तरात्मा इस बात के लिये मुझे क्षमा करती है। केवल मेरे ही हाथों में ये चीजें उन बहुतों के लिये वास्तविक रूप से उपयोगी हो सकती हैं, जिनको कि रोज की रोटी कमाना है।

लोना—मैं समझती हूँ, यह तुम ठीक कह रहे हो कारस्टेन !

जान—मुझे बहुतों से कोई सम्बन्ध नहीं, मेरे जीवन के सुख की बाज़ी लग रहा है।

बर्निक—तुम्हारे जन्मस्थान की भलाई की भी बाज़ी लगी है। अगर ऐसी बातें मालूम हो जायँ जो मेरे पहले के आचरण पर धब्बा लगावें तो मेरे सभी विरोधी मिलकर झपटेंगे। हमारे समाज में जवानी की गलती कभी भुलाई नहीं जाती। वे मेरी सारी बीती हुई जिन्दगी को छान डालेंगे, हजारों मामूली बातें उस समय की बटोर लेंगे और जो प्रकट होगा उसी के अनुसार हर एक का मतलब लगायेंगे। वे झूठी बातों और बदनामी के नीचे मुझे कुचल देंगे। मुझे मजबूर होकर रेलवे स्कीम छोड़नी पड़ेगी और अब अगर मैं इसमें से अपना हाथ निकाल लूँ, तो सब चौपट हो जायेगा, मेरा सर्वनाश हो जायेगा और नागरिक की हैसियत से मेरी जिन्दगी भी ख़तम हो जायेगी।

लोना—जान ! हम लोगों ने जो अभी सुना है उसके बाद तुम्हें यहाँ से ज़रूर चले जाना चाहिये और अपनी ज़बान बन्द कर लेनी चाहिये।

बर्निक—हाँ, हाँ, जान ! तुम्हें ज़रूर...

जान—हाँ, मैं चला जाऊँगा, और अपनी ज़बान भी बन्द करूँगा । लेकिन मैं फिर लौटूँगा और तब मैं कहूँगा ।

बर्निक—वहीं रहे जान ! अपनी ज़बान बन्द रखो और मैं खुशी से तुम्हें साभेदार बना लूँगा ।

जान—अपना रुपया रखे रहे, केवल मेरा नाम और मेरा सम्मान लौटा दो ।

बर्निक—और स्वयं अपना बिगाड़ दूँ ।

जान—तुमको और तुम्हारे समाज को उसके भीतर से निकलना होगा, चाहे जैसे हो । मैं जरूर दीना को प्राप्त करूँगा अपनी स्त्री बनाने के लिये । और इसलिये मैं कल “ इण्डियन गर्ल ” में यात्रा कर देता हूँ ।

बर्निक—“ इण्डियन गर्ल ” में ?

जान—हाँ, कैप्टन ने मुझे ले चलने का वचन दिया है । मैं अमेरिका चला जाऊँगा जैसा कि मैंने कह दिया है । मैं अपना फार्म बेचकर अपनी और सब चीज़ों का प्रबन्ध कर दूँगा । दो महीने में मैं फिर लौट आऊँगा ।

बर्निक—और तब तुम रहस्योद्घाटन करागे ?

जान—तब अपराधी को अपना अपराध अपने सिर पर लेना होगा ।

बर्निक—यह भूल गये हो कि अगर मैं यह करूँ तो जो अपराध मेरा नहीं है उसे भी मुझे अपने सिर पर उठाना होगा ।

जान—वह कौन है जिसने पिछले पन्द्रह वर्ष लाभ उठाया है उस लज्जाजनक अफवाह से ?

बर्निक—तुम मुझे लाचार कर दोगे ? खैर, अगर तुम कुछ

कहोगे तो मैं सब अस्वीकार करूँगा । मैं कहूँगा यह मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र है, तुम मुझे यहाँ बदनाम करने आये हो ।

लोना—शर्म नहीं आती, कारस्तेन ?

बर्निक—मरता क्या न करता ? मैं तुमसे कह रहा हूँ मैं अपनी जिन्दगी के लिये लड़ूँगा । मैं सब अस्वीकार करूँगा, सब ।

जान—मेरे पास तुम्हारे दो पत्र हैं । मुझे वे बाक्स में दूसरे काराजों के साथ मिल गये । आज सबेरे मैंने उन्हें पढ़ा है, बहुत साफ हैं ।

बर्निक—और तुम उन्हें सब किसी को दिखाओगे ?

जान—अगर जरूरत पड़ेगी ।

बर्निक—और तुम यहाँ दो महीने में लौट आओगे ?

जान—मैं ऐसी ही आशा करता हूँ । हवा अनुकूल है, तीन सप्ताह में मैं न्यूयार्क पहुँचूँगा, अगर “इण्डियन गर्ल” डूब नहीं जाता ।

बर्निक—[विस्मय से] अगर डूब नहीं जाता ! “इण्डियन-गर्ल” क्यों डूब जावेगा ?

जान—ठीक है, क्यों डूबेगा ?

बर्निक—[बहुत धीरे से] डूब जायेगा ?

जान—खैर, कारस्तेन ! अब तुम जान गये, तुम्हारे सामने क्या है । तुम्हें अपना रास्ता निकालना होगा । विदा ! मेरी ओर से बेत्ती से सलाम कह देना, गोकि उसने मेरे साथ बहिन का व्यवहार नहीं किया है । लेकिन मर्था से मिल लेना चाहिये । वह दीना से कहेगी; उसे मुझे वचन देना होगा । [बाईं ओर के दरवाजे से बाहर निकल जाता है ।]

बर्निक—[खतः] “इण्डियन गर्ल” ? [जल्दी से] लोना, उसे रोको !

लोना—तुम खुद देखो कारस्तेन ! अब उस पर मेरा कोई प्रभाव नहीं रहा । [जान के पीछे पीछे दूसरे कमरे में चली जाती है ।]

बर्निक—[बेचैन होकर] डूब न जाय ?

[आउन दाहिनी ओर से आता है ।]

आउन—क्षमा कीजिये, लेकिन अगर अवसर हो...

बर्निक—[क्रोध से घूमकर] क्या चाहते हो ?

आउन—यही जानना कि मैं आप से कुछ पूछ सकता हूँ, सरकार ?

बर्निक—जल्दी कहो भी क्या है ?

आउन—मैं पूछना चाहता था कि क्या मैं इसे निश्चित समझूँ, बिल्कुल निश्चित, कि अगर “इण्डियन गर्ल” कल समुद्र में न चल सके तो मुझे कारखाने से अलग होना पड़ेगा ?

बर्निक—इसका क्या मतलब ? जहाज़ तो चलने के लिये तैयार है ?

आउन—हाँ है, लेकिन अगर न होता तो मुझे अलग होना पड़ता ?

बर्निक—ऐसे फ़जूल सवाल पूछने से लाभ क्या ?

आउन—मैं सिर्फ़ जानना चाहता हूँ साहब, बता देंगे मुझे ? मैं निकाल दिया जाऊँगा ?

बर्निक—मैं जो कहता हूँ वह करता हूँ या नहीं ?

आउन—तो कल मैं अपने परिवार में और अपने सम्बन्धियों

में मेरा जो स्थान है उसे खो दिये होता । अपनी जाति के लोगों पर मेरा प्रभाव नष्ट हो गया होता । समाज के गरीब और अभागे लोगों की कोई भी सहायता करने का अवसर सदैव के लिये निकल गया होता ?

बर्निक—आउन इन बातों की बहस तो पहले ही हो गई है ।

आउन—जी हाँ तो “इण्डियन गर्ल” कल यात्रा करेगा ।

[थोड़ी देर के लिये सन्नाटा]

बर्निक—सभी बातों पर अपनी नज़र रखना मेरे लिये असम्भव है । सब बातों की जिम्मेदारी मुझ पर नहीं हो सकती । मैं अनुमान करता हूँ तुम मुझे विश्वास दिला सकोगे कि मरम्मत ठिकाने से हुई है ।

आउन—आपने मुझे बड़ा कम समय दिया मिस्टर बर्निक !

बर्निक—लेकिन मैं समझता हूँ कि मरम्मत के जिम्मेदार तुम हो ।

आउन—हवा अच्छी चल रही है और यह गर्मी का दिन है ।

[थोड़ी देर फिर सन्नाटा]

बर्निक—तुम्हें कुछ और भी कहना है मुझसे ?

आउन—मैं समझता हूँ, नहीं साहब ।

बर्निक तब “इण्डियन गर्ल” समुद्र में चलेगा ?

आउन—कल ?

बर्निक—हाँ ।

आउन—अच्छी बात है । [सिर झुका कर बाहर चला जाता है ।
बर्निक थोड़ी देर तक सन्न होकर खड़ा रहता है, जब जल्दी जल्दी टहलने लगता है दरवाज़े की ओर मानो आउन को बुलाने के लिये : लेकिन ठहर

जाता है असमञ्जस में पड़कर, अपना हाथ दरवाज़े पर रखकर । उसी समय दरवाज़ा बाहर से खुलता है और काप भीतर आता है ।]

काप—[धीरे से] आहा ! वह यहाँ आया था । उसने स्वीकार कर लिया ?

बर्निक—हूँ ! तुमने कुछ पता लगाया ।

काप—उसकी क्या जरूरत है जनाब ? आपको उस आदमी की आखों में पिशाची प्रवृत्ति नहीं देख पड़ी ?

बर्निक—बेहूदा बात ! ऐसी बातें दिखलाई नहीं पड़तीं । मैं जानना चाहता हूँ तुमने कुछ पता लगाया ?

काप—मैं इसका उपाय नहीं कर सका । बड़ी देर हो गई थी । वे किनारे से जहाज़ को पानी में ढकेलना प्रारम्भ कर चुके थे । लेकिन इस काम में उनकी यह जल्दी ही कह रही है कि...

बर्निक—यह कुछ पता नहीं देती । मुआयना हो गया है ? तब...

काप—हाँ, लेकिन...

बर्निक—अब देखो । और निश्चय है कि उन्हें शिकायत की कोई बात नहीं मिली ।

काप—मिस्टर बर्निक, आप खूब जानते हैं कि इस मुआयने का मतलब क्या होता है और वह भी ऐसे कारखाने में जो इतना मशहूर हो जैसा कि हम लोगों का ।

बर्निक—कोई बात नहीं, इससे हम लोगों की ज़िम्मेदारी हट जाती है ।

काप—लेकिन जनाब, क्या आप वास्तव में पता नहीं लगा सके आउन के व्यवहार से कि...

बर्निक—आउन ने मुझे बिल्कुल विश्वास दिलाया है, मैं तुमसे कहूँ ।

क्राप—और मैं आप से कहूँ जनाब कि मुझे हृदय से विश्वास है कि ..

बर्निक—इसका क्या मतलब क्राप ? मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ कि तुम अपनी छुरी इस आदमी पर चलाना चाहते हो । लेकिन अगर तुम उस पर आक्रमण करना चाहते हो तो कोई दूसरा अवसर ढूँढो । तुम जानते हो मेरे लिये यह कितना जरूरी है—या मैं कहूँ कि मालिकों के लिये—कि ‘इण्डियन गर्ल’ कल समुद्र में चल पड़े ?

क्राप—अच्छी बात है, तो फिर यही हो । लेकिन अगर फिर कभी हम इस जहाज़ के बारे में सुनें...हूँ !

[विजलान्त दाहिनी ओर से आता है]

विजलान्त—सलाम, मिस्टर बर्निक । थोड़ा समय आप दे सकेंगे ?

बर्निक—आज्ञा कीजिए, मिस्टर विजलान्त !

विजलान्त—मैं केवल जानना चाहता हूँ अगर आपको भी राय हो कि “पाम ट्री” कल समुद्र में चल निकले ?

बर्निक—अवश्य, मैं तो समझता था कि यह बिल्कुल निश्चित है ।

विजलान्त—कैप्टन मेरे पास अभी आया था और उसने कहा कि तूफान के सिगनल दिखाये जा रहे हैं ।

बर्निक ! —ओ ! तो क्या हमें तूफान की भी शंका करनी चाहिये ?

विजलान्त—कम से कम तेज हवा, लेकिन अनुकूल हवा नहीं, बिल्कुल उल्टी ।

बर्निक—हूँ ! खैर, तब आप क्या कहते हैं ?

विजलान्त—मैं वही कहता हूँ जोकि मैंने कैप्टन से कहा, कि “पाम ट्री” का भाग्य दैवाधीन है । इसके अतिरिक्त अभी वे केवल उत्तरी समुद्र के उस पार जा रहे हैं और इंगलैण्ड में इस समय जहाज के भाड़े की दर काफ़ी चढ़ी हुई है ।

बर्निक—हाँ अगर हमारा जहाज रुका रहेगा तो शायद इससे हम लोगों की हानि होगी ।

विजलान्त—इसके अतिरिक्त वह मजबूत जहाज है, और उसका बोमा भी हो चुका है । “इण्डियन गर्ल” के लिये जरूर ज्यादा खतरा है ।

बर्निक—आपका मतलब क्या है ?

विजलान्त—वह भी कल समुद्र में चल पड़ेगा ।

बर्निक—हाँ, उसके मालिकों ने बड़ी जल्दी की है । और इसके अतिरिक्त ..

विजलान्त—खैर, अगर वह पुराना सड़ा गला ऐसी हिम्मत कर सकता है—और वह भी ऐसे चलाने वालों के बल पर—तो यह हम लोगों के लिये शर्म की बात होगी अगर...

बर्निक—बिल्कुल ठीक । मैं समझता हूँ जहाज के कागजात आपके पास हैं ?

विजलान्त—हाँ यह हैं ।

बर्निक—बड़ी बात हो अगर आप क्राप के साथ मिलकर ठीक कर लें ।

क्राफ—जनाब, आप यहाँ आ जाइए, हम लोग ज़रा सी देर में उन्हें खतम कर लेंगे ।

विजलान्त—धन्यवाद । और यह बात हम लोग अब सर्व-शक्तिमान के हाथों में छोड़ देते हैं । [क्राफ के साथ बर्निक के कमरे में चला जाता है । बगीचे की ओर से रारलुन्त आता है ।]

रारलुन्त—एँ ! दिन में इस समय मिस्टर बर्निक घर पर !

बर्निक—[चिन्ता में डूबा हुआ] आप तो देख ही रहे हैं ।

रारलुन्त—मैं केवल आपकी स्त्री के लिये आया था । मैंने सोचा शायद उन्हे सान्त्वना के दो शब्दों की ज़रूरत हो ।

बर्निक—सम्भवतः उसे है । लेकिन मैं भी आपसे दो शब्द कहना चाहता हूँ ।

रारलुन्त—बड़ी खुशी से मिस्टर बर्निक । लेकिन आपको हो क्या गया है ? आप बिल्कुल पीले और बेचैन मालूम पड़ते हैं ।

बर्निक—सचमुच ? मैं ऐसा मालूम हो रहा हूँ ? खैर आप मेरे ऐसे आदमी से जो उत्तरदायित्व के बोझ से दबा जाता है, और आशा ही क्या कर सकते हैं ? यों तो मेरा कारखाना ही बहुत बड़ा है, उसके बाद यह रेलवे का निकलना । लेकिन कुछ कहिये भी तो रारलुन्त, मैं आपसे एक सवाल पूछूँ ?

रारलुन्त—खुशी से मिस्टर बर्निक ।

बर्निक—यह एक विचार के बारे में है जो मुझे अभी सूझ पड़ा है । मान लीजिये कि मनुष्य को कोई ऐसा काम करना है जिससे लाखों का उपकार होगा, और मान लीजिये कि इसमें उसे एक आदमी की जिन्दगी का बलिदान करना पड़े ?

रारलुन्त—आप का मतलब क्या है, साहब ?

बर्निक—उदाहरण के लिये अगर मनुष्य एक बहुत बड़ा

कारखाना खोलने का विचार कर रहा हो। वह निश्चित रूप से जानता है, क्योंकि उसके सारे अनुभव से उसे यही शिक्षा मिली है, कि जल्दी या देर से कभी न कभी कारखाने के चलाने में कोई जिन्दगी ख़तम होजायगी...

रारलुन्त—हाँ यह बहुत सम्भव है।

बर्निक—या कहिये कि मनुष्य खान खुदवाने के काम में लग जाता है। वह अपने काम में लगाता है परिवारों के पिताओं को और उन लोगों को जो अभी जवान हो रहे हैं। ऐसा अनुमान कर लेना ग़लत नहीं है कि सब के सब सकुशल खान के बाहर नहीं निकल सकेंगे।

रारलुन्त—हाँ, दुर्भाग्यवश बिल्कुल ठीक है यह।

बर्निक—खैर, तो इस स्थिति में मनुष्य पहले ही से जानता है कि जो काम वह शुरू करने जा रहा है, इसमें सन्देह नहीं कि कभी न कभी उसके कारण मनुष्य के जीवन की हानि होगी। लेकिन यह आयोजन तो स्वतः सब की भलाई के लिये हो रहा है, इसमें जितने मनुष्यों की जिन्दगी जायेगी, निस्सन्देह उससे कई सौ गुने लोगों का लाभ होगा।

रारलुन्त—ओ ! हो ! आप रेलवे के बारे में सोच रहे हैं ! कितने लोग दब जायेंगे, और इसी तरह की बातें।

बर्निक—हाँ, बिल्कुल ठीक, मैं रेलवे के बारे में सोच रहा हूँ। और इसके अतिरिक्त रेलवे के आ जाने का मतलब होगा खानों और कारखानों का शुरू होना। लेकिन यह न सोचो कि...

रारलुन्त—भाई बर्निक ! आप हद से अधिक सोच रहे हैं। मैं तो समझता हूँ कि अगर आप यह सब नियति की इच्छा पर छोड़ दें...

बर्निक—हाँ, सच है, नियति...

रारलुन्त—फिर इस बात में आपका कोई अपराध नहीं।
चलिये और आशा के साथ अपनी रेलवे निकालिये।

बर्निक—हाँ, लेकिन अब मैं आपको एक विशेष दृष्टान्त दूंगा।
मान लीजिये कि किसी खतरनाक जगह में बारूद भड़कानी पड़े
और जब तक वह भड़क न उठे लाइन बनाई न जा सके ! मान
लीजिये कि इन्जीनियर को यह बात मालूम हो कि जो मजदूर
उसमें आग लगायेगा उसकी जान जायेगी, लेकिन चूंकि आग तो
लगानी ही है, और यह इन्जीनियर का कर्तव्य है आग लगाने के
लिये मजदूर को भेजना...

रारलुन्त—हूँ !

बर्निक—मैं जानता हूँ आप क्या कहेंगे। यह महान काम
होगा अगर इन्जीनियर खुद दियासलाई लेकर आग लगाने चल
पड़े। लेकिन यह तो होने वाला नहीं, इसलिये इन्जीनियर को
मजदूर भेजना ही होगा...

रारलुन्त—ऐसी बात यहाँ तो कोई भी इन्जीनियर नहीं
करेगा।

बर्निक—बड़े देशों में कोई भी इन्जीनियर यह करने के लिये
दो बार नहीं सोचेगा।

रारलुन्त—बड़े देशों में ? नहीं। मैं इसे समझ सकता हूँ,
उन पतित और आदर्शहीन देशों में...

बर्निक—ओ ! उन समाजों के पक्ष में बहुत कुछ कहा जा
सकता है।

रारलुन्त—आप यह कह सकते हैं ? आप जो स्वयं...

बर्निक—बड़े देशों में मनुष्य को बड़े काम करने के अवसर

मिलते हैं, बड़े उद्देश्य के लिये उसे कुछ बलिदान करने का साहस मिलता है। लेकिन यहां तो मनुष्य मामूली बातों की चिन्ता करने में और सिद्धान्तों को देखने में कुचल जाता है।

रारलुन्त—मनुष्य का जीवन मामूली चिन्ता है ?

बर्निक—जब मनुष्य का वह जीवन हजारों के उपकार में बाधा डालता है।

रारलुन्त—लेकिन आप ऐसी बातों की ओर संकेत करते हैं जो कल्पना के बाहर हैं मिस्टर बर्निक ! आज तो मैं आपको बिल्कुल नहीं समझ पाता। और आप बड़े देशों की बात कहते हैं—मनुष्य के जीवन की उनको क्या चिन्ता है ? इसे भी वे पूंजी समझते हैं, जो खर्च करने के लिये है ही। लेकिन हम लोग सब बातों का विचार दूसरीतरह से नैतिक दृष्टि से करते हैं, मैं आशा करता हूँ। हमारे प्रशंसित जहाज के कारखाने को देखिये। आप किसी भी जहाज के रोजगारी का नाम बता सकते हैं जो थोड़े से लाभ के लिये मनुष्य की जान ले सकता है ? और तब बड़े देशों के उन बेईमानों की ओर देखिये जो लाभ के लिये एक के पीछे दूसरे ऐसे जहाजों में लोगों को भर देते हैं जो समुद्र में चलने लायक नहीं हैं।

बर्निक—मैं ऐसे जहाज के बारे में नहीं कहता।

रारलुन्त—लेकिन मैं कहता हूँ मिस्टर बर्निक !

बर्निक—हां, लेकिन किस लिये ? उनसे इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं। ओह ! ये मामूली, कमजोर चिन्ताएं। अगर इस देश के किसी सेनापति को अपने सिपाहियों को गोलियों के बीच से ले जाना पड़े और उनमें से कुछ मारे जायें तो उसको तो बहुत दिन तक रात को नींद नहीं आयेगी। दूसरे देशों में ऐसा नहीं है। सुनो वह वहां क्या कह रहा है—

रारलुन्त—वह कौन ? वह अमेरिकन ?

बर्निक—हाँ सुनो अमेरिका में कैसे...

रारलुन्त—वह वहां है ? और आपने मुझसे बतलाया भी नहीं ? मैं इसी क्षण...

बर्निक—इस से कोई लाभ नहीं; उसके साथ आप कुछ नहीं कर सकते ।

रारलुन्त—देखा जायगा । आह ! यह आ रहा है । [दूसरे कमरे से जान आता है ।]

जान—[खुले हुए दरवाजे से उसी ओर घूम कर बातें करते हुए]
हाँ, हाँ, दीना ! जैसी तुम्हारी तबियत चाहे, लेकिन साथ ही साथ मैं तुम्हें छोड़ने का भी विचार नहीं कर सकता । मैं लौटूंगा और हम लोगों के बीच की सभी बातें स्वयं ठीक हो जायेंगी ।

रारलुन्त—क्षमा कीजिये, लेकिन इससे आपका क्या मतलब था ? आप करना क्या चाहते हैं ?

जान—मैं चाहता हूँ कि यह...यह जवान लड़की, जिसके सामने आपने मेरा चरित्र कलंकित किया था, मेरी स्त्री बने ।

रारलुन्त—आपकी स्त्री ? और आप वास्तव में यह अनुमान कर सकते हैं कि...

जान—मैं उससे शादी करना चाहता हूँ ।

रारलुन्त—खैर तब आप को सच बात मालूम हो जायेगी ।
[अधखुले दरवाजे की ओर जाता है] मिसेज़ बर्निक, कृपाकर आप यहां आयेंगी गवाह बनने के लिये ? और मर्था और दीना को भी आने दीजिये । (लोना को दरवाजे पर देख कर) आप भी यहां हैं ?

लोना—मैं भी आऊँ ?

रारलुन्त—जैसी आप की इच्छा। जितने ही ज्यादा लोग हों, उतना ही अच्छा।

बर्निक—आप क्या करने जा रहे हैं ? (लोना, मिसेज बर्निक, मर्था, दीना और हिल्मा दूसरे कमरे से आते हैं।)

मिसेज बर्निक—मिस्टर रारलुन्त, मैंने बड़ी कोशिश की लेकिन मैं उन्हें रोक नहीं सकी।

रारलुन्त—मैं उन्हें रोक दूंगा मिसेज बर्निक ! दीना ! तुम मूर्ख लड़की हो लेकिन इसके लिये मैं तुम्हें दोष नहीं देता। तुमको वह नैतिक सहायता नहीं मिली है जो कि तुम्हें रोक सकी होती। मैं अपने को दोष देता हूँ तुमको वह सहायता न देने के लिये।

दीना—आप अब न बोलिये।

मिसेज बर्निक—यह क्या ?

रारलुन्त—अब तो मुझे जरूर बोलना चाहिये दीना ! गो कि तुम्हारे कल के और आज के व्ययहार ने मेरे लिये यह दस गुना मुश्किल कर दिया है। लेकिन और विचारों को हटाना पड़ेगा तुम्हारी रक्षा करने के सामने। तुमको याद होगा मैंने वचन दिया था, तुमको याद होगा तुमने प्रतिज्ञा की थी कि जब मैं कहूँ कि उचित समय आ गया, तब तुम मुझे स्वीकार करोगी। अब मैं अधिक आगा पीछा करने का साहस नहीं कर सकता और इस लिये... [जान की ओर घूमता है] यह जवान लड़की जिसका तुम पीछा कर रहे हो मेरी वाग्दत्ता है।

मिसेज बर्निक—क्या ?

बर्निक—दीना !

जान—वह ? तुम्हारी ?

मर्था—नहीं, नहीं, दीना !

लोना—यह भूठ है ।

जान—दीना ! यह आदमी सच कह रहा है ?

दीना—[थोड़ी देर चुप रह कर] हाँ ।

रारलुन्त—मैं आशा करता हूँ इससे तुम्हारी कलुषित प्रवृत्ति कमजोर होगई होगी । दीना की भलाई के लिये मैं जो करना चाहता हूँ अब खुले तौर पर सब से कह देना चाहता हूँ । मैं आशा करता हूँ कि मेरे इस कार्य का गलत अर्थ न लगाया जायेगा । और अब मिसेज़ बर्निक हम लोगों के लिये अच्छा होगा उसे अलग हटा ले जाना और उसके हृदय को शान्त करने का प्रयत्न करना ।

मिसेज़ बर्निक—हाँ, मेरे साथ आओ । आह ! दीना ! तुम कैसी भाग्यवती हो ! [दीना को बाईं ओर से बाहर ले जाती है, रारलुन्त उन दोनों के पीछे जाता है ।]

मर्था—विदा जान ! [बाहर चली जाती है ।]

हिल्मा—[बरामदे के दरवाजे पर] हूँ ! मुझे कहना होगा ।

लोना—[जो दीना की ओर बराबर देखती रही है—जान से] दिल न तोड़ो, बाबू ! मैं यहाँ रहूँगी और पादरी पर अपनी नज़र रखूँगी । [बाईं ओर से बाहर निकल जाती है ।]

बर्निक—जान ! अब तो तुम “ इण्डियन गर्ल ” में यात्रा नहीं करोगे ?

जान—ज़रूर करूँगा ।

बर्निक—लेकिन तुम लौटोगे नहीं ?

जान—मैं लौट आऊँगा ।

बर्निक—इसके बाद ? इसके बाद तुमको यहाँ क्या करना है ?

जान—तुम सब से बदला चुकाना, तुममें से जितनों को हो सके कुचल डालना । [दाईं ओर से बाहर निकल जाता है—विजलान्त और क्राप बर्निक के कमरे से आते हैं ।]

विजलान्त—कागजात दुरुस्त हो गये मिस्टर बर्निक !

बर्निक—बड़ी बात, बड़ी बात !

क्राप—[धीरे से] और मैं समझता हूँ कि यह निश्चित हो चुका है कि “इण्डियन गर्ल” कल समुद्र में चल पड़ेगा ।

बर्निक—हाँ । [अपने कमरे में चला जाता है । विजलान्त और क्राप दाईं ओर से बाहर निकल जाते हैं । हिल्मा उनके पीछे जाना ही चाहता है कि ओलाफ बाईं ओर के दरवाजे से झँकता है]

ओलाफ—मामा ! हिल्मा मामा !

हिल्मा—ओफ ! तुम हो ? तुम ऊपर क्यों नहीं रहते ? तुम जानते हो तुम घर में बन्द किये गये हो ।

ओलाफ—[एक या दो कदम नजदीक आकर] चुप, हिल्मा मामा ! आप को यह बात मालूम हो गई है ?

हिल्मा—हाँ, मैंने सुना कि आज तुम पीटे गये ।

ओलाफ—[क्रोध से अपने बाप के कमरे की ओर देखकर] अब वह फिर कभी मुझे नहीं पीट सकेंगे । लेकिन आप को मालूम है कि जान मामा कल अमेरिकियों के साथ समुद्र यात्रा करेंगे ?

हिल्मा—इससे तुमसे क्या मतलब ? तुम फिर ऊपर भाग जाओ ।

ओलाफ—शायद मैं भी भैंसे के शिकार के लिये जाऊँगा, आज ही कल मैं मामा !

हिल्मा—व्यर्थ की बात ! तुम्हारे ऐसा डरपोक...

ओलाफ़—हाँ, देखते रहिये । आप को कल कुछ मालूम होगा ।

हिल्मा—गधा ! [बगोचे से बाहर निकल जाता है । ओलाफ़ फिर कमरे में भाग जाता है और दरवाजा बन्द कर लेता है, काप को दाहिनी ओर से आते हुए देख कर ।]

काप—[बर्निक के कमरे के दरवाजे की ओर जा कर और उसे धीरे से खोलता हुआ] क्षमा कीजिये, मैं आप को फिर तङ्ग कर रहा हूँ, मिस्टर बर्निक । लेकिन बड़े जोरों का तूफ़ान चल रहा है । [थोड़ी देर ठहरता है लेकिन कोई जवाब नहीं मिलता ।] तिस पर भी “इण्डियन गर्ल” यात्रा करेगा ? [थोड़ी देर के सन्नाटे के बाद यह जवाब मिलता है ।]

बर्निक—[भीतर से] इतने पर भी “इण्डियन गर्ल” यात्रा करेगा । [काप दरवाजा बन्द करता है और फिर दाहिनी ओर से चला जाता है ।]

— — —

चौथा अङ्क

[वही कमरा । सिलाई करने की मेज निकाल ली गई है । तृफ़ान चला रहा है और बिल्कुल शाम हो गई है । ज्यों ज्यों यह दृश्य बढ़ता जाता है रात होती जाती है । एक नौकर रोशनी जला रहा है । दो दासियाँ फूल, लालटेन और मोमबत्ती ले आ रही हैं जो कि वे मेजों पर रख देती हैं और दीवारों से लगकर खड़ी हो जाती हैं । रुम्मेले अन्धड़ी तरह से कपड़े पहने, दस्ताने और सफेद टाई के साथ कमरे में खड़ा होकर नौकरों को जरूरी बातें बतला रहा है ।]

रुम्मेले—केवल सब मोमबत्तियाँ जैकब ? ऐसा न मालूम हो कि इस मौके के लिए यह सब सजावट हुई है । इसे तो एक प्रकार के अप्रत्याशित विस्मय की तरह होना है, समझे ? और ये सब फूल ? खैर रहने दो उन्हें; शायद ऐसा मालूम होगा कि जैसे यह यहाँ रोज़ रहते हैं । [बर्निक अपने कमरे से आता है ।]

बर्निक—[दरवाजे पर रुकते हुए] इसका क्या मतलब ?

रुम्मेले—आह ! भाई, आप हैं ? [नौकरों से] हाँ, तुम लोग इस समय यहाँ से चले जाओ । [नौकर बाहर चले जाते हैं ।]

बर्निक—लेकिन रुम्मेले ! यह सब हो क्या रहा है ?

रुम्मेले—इसका मतलब यह कि आपके जीवन का सब से महान अवसर आ गया है । नगर के सर्वश्रेष्ठ पुरुष को सम्मानित करने के लिये उसके नागरिक भाइयों का एक जलूस आ रहा है ।

बर्निक—क्या ?

रुम्मेले—जलूस मंडे और बाजे के साथ । जरूरत तो

यहाँ मशालों की भी थी लेकिन इस तूफान में इसका साहस हम लोगों को नहीं हुआ। रोशनी भी होगी—और समाचारपत्रों में ऐसी बातों का छपना सदैव रोचक मालूम होता है।

वर्निक—सुनिये, रुम्मेल ! इसमें मैं कोई भी भाग नहीं लूंगा।

रुम्मेल—लेकिन अब तो यह कहने का समय नहीं रहा—आधे घंटे में तो वे यहां होंगे।

वर्निक—लेकिन इसके बारे में आपने पहले ही क्यों नहीं कहा ?

रुम्मेल—क्योंकि मुझे डर था आप इसका विरोध कर बैठेंगे। लेकिन मैंने आपकी स्त्री से पूछा था। उन्होंने प्रबन्ध करने का भार मुझ पर छोड़ दिया, और वे जल पान की तैयारी कर रही हैं।

वर्निक—[आहट लेकर] यह कैसा शोर है ? वे आ पहुँचे क्या ? मालूम हो रहा है जैसे मुझे गाना सुनाई पड़ रहा है।

रुम्मेल—[बरामदे के दरवाजे को जाते हुए] गाना ? ओ ! वे तो सब अमेरिकन हैं। “इण्डियन गर्ल” चलने की तैयारी कर रहा है।

वर्निक—तैयारी कर रहा है ? आह ! हां। नहीं रुम्मेल, आज की रात तो मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता। मेरो तबियत अच्छी नहीं है।

रुम्मेल—सचमुच आप अच्छे नहीं मालूम हो रहे हैं। लेकिन आपको अपने को सम्हालना होगा जरूर। सान्स्तात, विजलान्त और मैं, हम सब इसे पूरा करा डालना बड़ा जरूरी समझते हैं। हम लोगों को लोकमत

की अधिक से अधिक अभिव्यक्ति के भार के नीचे अपने विरोधियों को कुचल डालना है। खबरें इधर उधर कस्बे में फैल रही हैं। जायदाद खरीदने की बात हम लोगों को कहनी होगी, बहुत दिन तक हम इसे रोक नहीं सकते। अच्छा हो कि आज रात को ही, गान और व्याख्यान के बाद, ग्लासों की रगड़ में,—एक शब्द में, जल्से के मस्त वातावरण में,—समाज के लिये आपने जो जोखिम उठाई है उनसे कह दीजिये। जल्से के इस मौके पर, जैसा कि मैंने अभी कहा, यहाँ की जनता पर आप आश्चर्यजनक प्रभाव डाल सकते हैं। लेकिन वह वातावरण आपको जरूर बनाना होगा, नहीं तो यह बात कही नहीं जा सकेगी।

वर्निक—हाँ, हाँ !

रुमेल—और विशेषतः जब ऐसी नाजुक बात कहनी है। खैर, ईश्वर को धन्यवाद दीजिये वर्निक, आपका इतना नाम है कि वह शक्ति का स्तम्भ होगा। लेकिन सुनिये अब जरूरी प्रबन्ध कर लेना चाहिये। मिस्टर हिल्मा त्वांसे ने आप पर एक कविता बनाई है। उसका प्रारम्भ बड़ी सुन्दरता के साथ इन शब्दों से होता है “ऊँची करो कीर्ति की पताका आज नभ में” और मि० रारलुन्त ने आज व्याख्यान देना स्वीकार किया है। खैर, आपको उसका उत्तर तो देना होगा ही।

वर्निक—आज की रात तो मैं नहीं बोल सकूँगा। आप नहीं कह देंगे ?

रुमेल—असम्भव है, चाहे मुझे कितनी ही इच्छा हो, जैसा कि आप अनुमान कर सकते हैं, उनका व्याख्यान विशेषतः आप को सम्बोधन करके होगा। हाँ सम्भव है उसी सांस में हम लोगों के लिये भी वे एक या दो शब्द कह दें, मैंने इसके बारे में विजलान्त और सान्स्तात से भी कहा है। हम लोगों का विचार है

कि अपने वक्तव्य में आप “समाजहित” के लिये पान का प्रस्ताव करें। सान्स्तात समाज के भिन्न-भिन्न पहलुओं के सामञ्जस्य के विषय में थोड़े से शब्द कहेंगे और तब विजलान्त कहेंगे कि यह नया आयोजन जिन नैतिक सिद्धान्तों के ऊपर हमारा यह समाज स्थित है उनमें अशान्ति नहीं पैदा करेगा और मैं चाहता हूँ, थोड़े सुन्दर शब्दों में महिलाओं की ओर संकेत करना, समाज के लिये जिनका प्रयत्न गोकि ऊपर से साधारण किन्तु वास्तव में बहुत उपयोगी है। लेकिन आप मेरी बात ध्यान से नहीं सुन रहे हैं...

बर्निक—हाँ, वास्तव में मैं सुन रहा हूँ। लेकिन तुम्हारी समझ में बाहर समुद्र बहुत क्षुब्ध होगया है तूफान से ?

रुम्मेल—“पाम ट्री” के बारे में आप इतने क्यों घबरा रहे हैं ? आप को मालूम है उसका अच्छी तरह बीमा हो चुका है।

बर्निक—हाँ, उसका बीमा हो गया है, लेकिन...

रुम्मेल—और अच्छी मरम्मत भी हो चुकी है, असल बात तो यही है।

बर्निक—हूँ ! अगर किसी जहाज के साथ कोई घटना होजाय, तो इसका मतलब यह तो न होगा कि मनुष्य की जिन्दगी खतरे में हो जायगी ? नहीं न ? जहाज और उसका माल डूब जाय, और किसी के कागजात और सन्दूक भी...

रुम्मेल—हे ईश्वर ! सन्दूक और कागजात इतनी महत्वपूर्ण चीज नहीं।

बर्निक—बहुत महत्वपूर्ण नहीं ! नहीं, नहीं मेरा मतलब यह था... चुप, फिर बोली सुनाई पड़ रही है।

रुम्मेल—यह “पाम ट्री” के लोगों की आवाज है।

[दाहिनी ओर से विजलान्त आता है]

विजलान्त—हाँ, वे “पाम ट्री” का रख ठीक कर रहे हैं ।
सलाम, मिस्टर बर्निक !

बर्निक—और आप समुद्र के इतने जानकार, अब भी इसी राय के हैं कि...

विजलान्त—मैं तो तकदीर में विश्वास करता हूँ मिस्टर बर्निक । और मैं तो अभी जहाज़ पर हो आया हूँ और उनको कुछ पर्चे बाँट आया हूँ, जो कि मैं समझता हूँ उनके लिये शुभ होगा ।

[सान्स्तात और क्राप दाहिनी ओर से आते हैं ।]

सान्स्तात—[दरवाजे पर किसी से] खैर अगर वह ठीक ठीक पार हो जाय तो कोई चीज़ भी पार जा सकती है । [भीतर आता है] ओ हो ! नमस्कार, नमस्कार ।

बर्निक—कोई बात है क्राप ?

क्राप—कुछ नहीं, मिस्टर बर्निक ।

सान्स्तात—“इण्डियन गर्ल” के सभी नाविक शराब पिये हैं । वे इसमें से जीते नहीं निकलेंगे । मैं तो इस बात पर अपना नाम दाँव पर रख दूँगा । [दाहिनी ओर से लोना आती है ।]

लोना—अच्छा तो मैं अब उसकी सलाम सब से कह दूँ ।

बर्निक—क्या वह जहाज़ पर पहुँच चुका है ?

लोना—किसी भी हालत में अब तक पहुँच ही गया होगा ।
होटल के बाहर हम एक दूसरे से अलग हुए ।

बर्निक—और वह अपने विचार में बहुत पक्का था ।

लोना—हाँ, जैसे पहाड़ की चट्टान ।

रुम्मेल—[जो कि खिड़की के पास खटपट कर रहा है] ये नये शोक, पर्दे मैं नहीं गिरा सकता ।

लोना—आप उन्हे गिराना चाहते हैं ? मैंने तो समझा था कि इसके बजाय...

रुम्मेल—हाँ, मिस हेस्सल, आप जानती हैं हवा कैसी चल रही है ।

लोना—हाँ, रहिये, मैं आपकी सहायता कर दूँ । [पर्दे का रस्सियाँ पकड़कर] मैं जीजा पर पर्दा गिरा दूँगी, गोकि मैं तो उसे और भी ऊपर उठाना चाहती थी ।

रुम्मेल—हाँ, पीछे वह भी करना । जब बगीचा बढ़ती हुई भीड़ से भर जाय, तब पर्दे उठा दिये जावेंगे और वे विस्मय से एक सुखी परिवार को देखेंगे । नागरिकों का जीवन तो ऐसा होना चाहिये कि वे शीशे के घर में भी रह सकें । [बर्निक अपना मुँह खोलता है, जैसे कुछ कहने जा रहा है, लेकिन जल्दी से घूम कर अपने कमरे में चला जाता है ।]

रुम्मेल—आओ, एक बार आखिरी विचार करलें । तुम भी भीतर चलो क्राप । एक या दो बातों पर अपनी जानकारी से तुम्हें हम लोगों की मदद करनी होगी । [सभी पुराने बर्निक के कमरे में चले जाते हैं । लोना खिड़कियों पर पर्दा गिरा चुकी है, और खुले हुए शीशे के दरवाज़े पर भी यही करने जा रही है कि उसी समय बगीचे की सीढ़ी के ऊपर वाले कमरे से ओलाफ़ कूद पड़ता है—उसके कन्धे पर एक चादर और हाथ में एक बन्डल है ।]

लोना—जीते रहो बच्चे ! नटखट तुमने मुझे डरा दिया !

ओलाफ़—[अपना बन्डल छिपाते हुए] चुप रहो मौसी !

लोना—तुम खिड़की से कूद पड़े ? जा कहाँ रहे हो ?

ओलाफ—चुप ! कुछ मत कहो । मैं जान मामा के पास जाना चाहता हूँ, केवल किनारे । समझ गई ? केवल उनसे विदा होने के लिये । प्रणाम मौसी ! [बगीचे के बाहर निकल जाता है ।]

लोना—नहीं, ठहरो...ओलाफ ! ओलाफ ! [जान यात्रा के लिये तैयार होकर, एक बैग लेकर दाहिनी ओर के दरवाजे से कुछ चिन्तित सा आता है ।]

जान—लोना !

लोना—[घमकर] क्या फिर लौट आये ?

जान—अभी थोड़ा समय और है । मुझे उससे एक बार और मिल लेना चाहिये । हम लोग इस तरह अलग नहीं हो सकते । [बाईं ओर का आखिरी दरवाजा खुलता है—मर्था और दीना ओवरकोट पहने, और दीना एक छोटा यात्रा का बैग लिये आती हैं ।]

दीना—मुझे उसके पास जाने दो, जाने दो मुझे ।

मर्था—हाँ, उसके पास जा सकती हो दीना !

दीना—वह तो यहीं है ।

जान—दीना !

दीना—मुझे अपने साथ ले चलिये ।

जान—क्या ?

लोना—तुम सचमुच चाहती हो ?

दीना—हां, मुझे अपने साथ ले चलो । उस ने मुझे लिखा है कि वह आज रात सबसे घोषणा कर देना चाहता है...

जान—दीना ! तुम उसे प्रेम नहीं करतीं ?

दीना—मैंने उस आदमी को कभी प्रेम नहीं किया । मैं उससे सगाई करने की अपेक्षा समुद्र में डूब जाना अच्छा समझूंगी ।

ओह ! अपने उद्धत व्यवहार से उसने कल मुझे कितना अपमानित किया ! उसने कितना साफ कर दिया कि वह अनुभव कर रहा था कि वह एक पतित और असहाय प्राणी को अपने बराबर उठा रहा था । मैं अब और अधिक असहाय बनना नहीं चाहती । मैं यहां से चली जाना चाहती हूं । मैं आपके साथ चलूँ ?

जान—हाँ, हाँ, हजार बार, हाँ !

दीना—मैं बहुत दिनों तक आपके लिये बोझ नहीं रहूँगी । केवल वहाँ पहुँचा देने में मेरी सहायता कीजिये, और शुरू शुरू में मेरी सहायता कीजिये वहाँ ठिकाने के साथ रहने में...

जान—वाह ! खैर, अन्त में यह अच्छा हुआ ।

लोना—[बानक क दरवाजे की ओर इशारा कर के] चुप ! धीरे, धीरे बोलो ।

जान—दीना ! मैं तुम्हारी देख रेख करूँगा ।

दीना—मैं आपको ऐसा नहीं करने दूँगी । मैं वहाँ खुद अपनी देख रेख करना चाहती हूँ, मुझे विश्वास है मैं कर सकूँगी । केवल मुझे यहां से निकल भागने दीजिये । ओह ये औरतें, आपको मालूम नहीं—आज इन्होंने भी मुझे लिखा है अपने सौभाग्य पर आनन्द मनाने के लिये—मुझपर इस बात का प्रभाव डालते हुए कि उस ने कैसी उदारता दिखाई है । कल और इसके बाद रोज वे यह देखा करतीं कि मैंने अपने को उसके योग्य बना लिया या नहीं । मैं इन सब अच्छाइयों से ऊब गई हूँ और थक गई हूँ ।

जान—यह तो कहो दीना ! क्या केवल इसीलिये तुम मेरे साथ चल रही हो ? मैं तुम्हारे लिये कुछ नहीं हूँ ?

दीना—हाँ जान ! तुम मेरे लिये जो हो दुनिया मे और कोई भी वह नहीं है ।

जान—आह ! दीना !

दीना—यहाँ सब कोई कहता है मुझे तुमसे घृणा करने के लिये, यही मेरा कर्तव्य है । लेकिन मैं नहीं समझ पाती कि यह मेरा कर्तव्य है, और शायद कभी यह समझने के लायक हूँगी भी नहीं ।

लोना—अब, कभी नहीं समझ पाओगी, प्यारी ।

मर्था—नहीं, सचमुच तुम नहीं समझ सकोगी और इसीलिये तुम उसके साथ उसकी स्त्री बन कर जाओगी ।

जान—हाँ, हाँ ।

लोना—क्या ? क्या ? मुझे चुम्बन लेने दो मरथा । तुमसे मुझे इतनी आशा नहीं थी ।

मर्था—नहीं, मैं इसकी आशा स्वयं नहीं करती थी । लेकिन मेरा फिर जाना तो कभी न कभी निश्चित था । ओफ ! आदत और रिवाज के अत्याचार मे हम लोगो को कितना दुःख सहना पड़ता है । इसके विरुद्ध खड़ी हो दीना ! उनकी स्त्री बनो । इन सभी रूढ़ियो को तोड़ दो, मैं यह देखूँ ।

जान—तुम्हारा जवाब क्या है दीना ?

दीना—हाँ, मैं तुम्हारी स्त्री हूँगी ।

जान—दीना !

दीना—लेकिन सब से पहले काम कर के मैं अपने को कुछ बनाना चाहती हूँ जैसा कि तुम ने किया है । मैं कोई ऐसी चीज़ नहीं बनूँगी जो कि ले ली जाय ।

लोना—बिल्कुल ठीक, यही तो तरीका है ।

जान—अच्छी बात है, मैं तब तक रुका रहूँगा और आशा करूँगा ।

लोना—और प्राप्त करना बाबू ! लेकिन अब तुम्हें जहाज पर चले जाना चाहिये ।

जान—हाँ, जहाज पर । आह ! लोना, प्यारी बहिन ! बस, दो शब्द तुमसे । इधर सुनो । [वह उसे दूसरी ओर ले जाकर जल्दी जल्दी बातें करता है ।]

मर्था—दीना ! तुम भाग्यवती लड़की, मैं तुम्हें देखूँ और तुम्हें चूम लूँ, एक बार और, अन्तिम बार ।

दीना—अन्तिम बार नहीं, बुआ ! हम लोग फिर मिलेंगे ।

मर्था—कभी नहीं, मुझे वचन दो दीना, तुम लौटकर फिर कभी नहीं आओगी । [उसके हाथ पकड़ लेती है और उसकी ओर देखने लगती है ।] अब जाओ समुद्र के उस पार अपने आनन्द के लोक में, रानी बिटिया । अपने स्कूल के कमरे में किस तरह मुझे अक्सर वहाँ जाने की इच्छा हो जाती थी । बड़ा सुन्दर होगा... आकाश यहां की अपेक्षा ऊँचा और महान, तुम्हारे सिर के ऊपर उन्मुक्त वायु...

दीना—बुआ मर्था ! किसी दिन तुम भी हम लोगों के साथ चलोगी ।

मर्था—मैं ? कभी नहीं, कभी नहीं । मुझे अब छुट्टी मिल गई, और अब मुझे विश्वास है मैं अपनी ज़िन्दगी जैसी मुझे चाहिये बिता सकूँगी ।

दीना—तुम से अलग रहने की कल्पना मैं नहीं कर सकती ।

मर्था—आह ! दीना ! मनुष्य बहुत कुछ त्याग सकता है ।
[उसको चूम लेती है] लेकिन मुझे आशा है तुम्हें कभी इसका अनुभव नहीं होगा, रानी बेटी । उन्हें सुखी रखने का वचन मुझे दो ।

दीना—मैं वचन कुछ भी नहीं दूँगी । वचन देने को मैं घृणा करती हूँ । जैसा होगा, होगा ।

मर्था—हाँ, हाँ, ठोक है, जो हो वही रहना—अपने प्रति सच्ची और ईमानदार ।

दीना—हाँ, मैं रहूँगी बुद्धि !

लोना—[अपनी जेब में कागज रखते हुए जो जान ने उसे दिया है]
धन्य, धन्य, बाबू ! लेकिन अब तो चले जाओ ।

जान—हाँ, अब समय नहीं है । बिदा लोना ! और तुम्हारे प्रेम के लिये धन्यवाद । मर्था ! बिदा और तुम्हारी सच्ची मित्रता के लिये धन्यवाद ।

मर्था—बिदा जान ! बिदा दीना ! तुम दोनों अपने जीवन भर सुखी रहो । [वह और लोना इन दोनों को पिछले दरवाजे से जल्दी जल्दी निकाल देती हैं—जान और दीना तेज़ी से बगीचे से होकर बाहर निकल जाते हैं । लोना दरवाजा बन्द कर पर्दा गिरा देती है ।]

लोना—अब हम लोग अकेली हैं । मर्था ! तुमने दीना को खोया है और मैंने जान को ।

मर्था—तुमने उन्हें खोया ?

लोना—आह ! आधा तो मैं उसे वहीं खो चुकी थी । वह अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता था, इसीलिये मैंने घर आने की इच्छा का बहाना किया ।

मर्था—यह बात थी ! अब मैं समझी तुम क्यों आईं । लेकिन उन्हें तुम्हारी जरूरत फिर पड़ेगी, लेना !

लोना—बूढ़ी बहिन की उसे अब क्या जरूरत होगी ? पुरुष अपने सुख के लिये बहुतेरे प्रिय बन्धन काट डालते हैं ।

मर्था—कभी कभी होता है ऐसा ।

लोना—लेकिन हम दोनों एक दूसरे में मिल जायेंगी मर्था !

मर्था—मैं तुम्हारे लिये कुछ हो सकती हूँ ?

लोना—और कौन हो सकेगा ? हम दोनों बहिन हैं । क्या हम दोनों ने अपने बच्चे नहीं खो दिये ? अब तो हम अकेली हैं ।

मर्था—हाँ अकेली । और इसलिये तुम्हें यह भी जान लेना चाहिये कि मैं उन्हें संसार की किसी भी दूसरी चीज़ से अधिक प्रेम करती थी ।

लोना—मर्था ! [उसकी बाँह पकड़ कर] यह सच है ?

मर्था—इन्हीं शब्दों के भीतर मेरा सारा अस्तित्व है । मैंने उन्हें प्रेम किया और उनको राह देखती रही । हरसाल गर्मी में मैं उनके घर आने की प्रतीक्षा करती रही । और तब वे आये, लेकिन मेरे लिये उनके पास आखें नहीं थीं ।

लोना—तुम उसे प्रेम करती थीं । और तुम्हीं ने उसका आनन्द भी उसकी मुट्ठी में रख दिया ।

मर्था—मैं उन्हें प्रेम करती थी तो क्या मैं वह न होती जो उनकी मुट्ठी में उनका आनन्द रख देती ? हाँ मैंने उन्हें प्रेम किया है । जब से वे चले गये—मेरी सारी जिन्दगी उन्हीं के लिये रही है । तुम जानना चाहती हो कि किस आधार पर मैंने आशा की थी ? मैं समझती हूँ इसका कुछ कारण था, अवश्य । लेकिन जब

वे लौट आये तो साफ़ मालूम हो गया कि जैसे उनकी स्मृति से सभी बातें निकल गई हैं। उनकी आँखों में मेरे लिये जगह नहीं थी।

लोना—तो दोना ने तुम्हारे प्रकाश को मन्द कर दिया मर्था !

मर्था—और यह वह अच्छा ही कर गई। उस समय जब वह भागे थे, हम दानों एक ही उम्र के थे, लेकिन जब मैंने उन्हें फिर देखा, आह ! वह भयानक क्षण ! मुझे मालूम हुआ कि अब मैं उनसे दस वर्ष बड़ी हूँ। वह तो वहाँ सूर्य के प्रखर प्रकाश में, हर एक सांस के साथ जीवन और स्वास्थ्य की वायु लेते थे, और मैं यहाँ बैठी रह गई कातती-कातती...

लोना—उसके आनन्द का सूत कातती हुई, मर्था !

मर्था—हाँ, मैंने सोने का सूत काता। किसी भी तरह की अनबन नहीं। उनके लिये हम लोग दो बहिनें रहो हैं। रही है कि नहीं, लोना ?

लोना—[उसके गले में अपनी बांह डालती हुई] मर्था !

[बर्निक अपने कमरे से आता है]

बर्निक—[उन लोगों से जो उसके कमरे में ह] हाँ, हाँ, जैसा चाहो ठीक करलो। जब मौका आयेगा मैं इस लायक हो जाऊँगा कि—[दरवाजा बन्द करता है] ओ, तुम यहाँ हो ! इधर सुनो मर्था ! मैं चाहता हूँ अच्छा हो तुम अपने कपड़े बदल डालो, और बेत्ती से कहो कि वह भी यही करे। मैं कोई बड़ी भड़कीली चीज नहीं चाहता, कोई भी घर लायक चीज़, लेकिन साफ़। लेकिन तुम जल्दी करो।

लोना—और सुन्दर प्रसन्नमुख हो मर्था ! तुम्हारी आँखें प्रसन्न देख पड़ें।

बर्निक—ओलाफ भी नीचे आयेगा, मैं उसे अपनी बगल में रखूँगा ।

लोना—हूँ ! ओलाफ...

मर्था—मैं बेत्ती को तुम्हारा सन्देश दे देती हूँ । [बाईं ओर के दरवाजे से निकल जाती है ।]

लोना—अच्छा तो महान अवसर अब बिलकुल निकट है ।

बर्निक—[इधर उधर परेशान टहलते हुए] हाँ, है ।

लोना—मैं समझती हूँ ऐसे अवसर पर मनुष्य गर्व और आनन्द का अनुभव करता होगा ।

बर्निक—[उसकी ओर देखते हुए] हूँ ।

लोना—सुना है सारे कम्बे में रोशनी होगी ।

बर्निक—हाँ, वे कुछ ऐसा चाहते हैं ।

लोना—सभी भिन्न भिन्न दल अपने अपने झंडे लेकर इकट्ठे होंगे । तुम्हारा नाम अग्नि के अक्षरों में जगमगा उठेगा । आज रात को तार देश के कोने कोने में यह ख़बर फैला देंगे, “अपने सुखी परिवार के बीच मिस्टर बर्निक को अपने नागरिक भाइयों से कृतज्ञता स्वरूप समाज के स्तम्भ का सम्मान मिला” ।

बर्निक—हाँ, ऐसा हो । वे बाहर मेरे लिए तालियाँ बजावेंगे और भीड़ मेरे मकान के सामने शोर करेगी, जब तक कि मैं बाहर जाने के लिये और उनके सामने सिर झुका कर उन्हें धन्यवाद देने के लिये बाध्य नहीं हो जाऊँगा ।

लोना—बाध्य होंगे ?

बर्निक—तुम समझती हो कि मुझे उस समय प्रसन्नता होगी ?

लोना—नहीं मैं यह तो नहीं समझती कि तुम बहुत प्रसन्न हो जाओगे ।

बर्निक—लोना, तुम मेरी अवहेलना करती हो ।

लोना—नहीं, कभी तो नहीं ।

बर्निक—और तुम्हें इसका अधिकार भी नहीं है, मेरी अवहेलना करने का अधिकार नहीं है । लोना ! तुम्हें पता न होगा कि इस संकीर्ण और संकुचित समाज में मैं कितना अकेला खड़ा हूँ, जहाँ कि मुझे हर साल अधिक व्यापक जीवन की अपनी महत्वाकांक्षा को दबाना पड़ा है । मेरा काम कई रूपों में भले देख पड़े लेकिन मैंने किया क्या ? छोटे मोटे काम । यहाँ के लोग और कुछ पसन्द नहीं करेंगे । इस समय लोगों के जो विचार हैं या जो राय है अगर मैं उससे एक कदम भी आगे बढ़ जाऊँ तो फिर मेरा प्रभाव मिट जायेगा । जानती हो हम लोग क्या हैं ? हम लोग जो समाज के स्तम्भ कहे जाते हैं ? हम लोग समाज के हाथ की लकड़ी हैं, न इससे ज्यादा न कम ।

लोना—तुम इस बात को केवल अभी क्यों समझने लगे हो ?

बर्निक—क्योंकि इधर मैं बहुत विचार करता रहा हूँ—जब से कि तुम लौटी हो—और आज शाम को मैंने सब से अधिक गंभीर होकर विचार किया है । आह ! लोना, मैं तुम्हें पहले ही क्यों न जान सका—बीते हुए समय में...

लोना—और अगर तुम पहचान सके होते ?

बर्निक—मैंने तुम्हें जाने न दिया होता, और अगर मैं तुम्हें पा गया होता तो आज मैं जिस परिस्थिति में हूँ, उसमें न पड़ा होता ।

लोना—और तुम यह नहीं सोचते कि वह भी तुम्हारे लिए क्या हो सकती थी—वह जिसे तुमने मेरी जगह पर पसन्द किया था ?

बर्निक—मैं हर हालत में जानता हूँ कि मुझे जिस चीज़ को ज़रूरत थी वह मेरे लिये उस तरह की कुछ नहीं रही है ।

लोना—क्योंकि तुमने उसे कभी अपने सुख दुख में शरीक नहीं किया है, क्योंकि तुमने उसे कभी स्पष्टता और सत्यता पूर्वक विचार-विनिमय करने का अवसर नहीं दिया है, क्योंकि तुमने उस व्यक्ति को, जो उसका सगा था, लांछित करके उसे सदा आत्म-ग्लानि का अनुभव कराया है ।

बर्निक—हाँ, हाँ, यह सब भूठ और धोखा के साथ ही चलता है ।

लोना—तो फिर इस भूठ और धोखा से छुट्टी क्यों नहीं ले लेते ?

बर्निक—अब ? अब तो उसका समय नहीं रह गया, लोना ?

लोना—कारस्तेन ! मुझे यह तो बतलाओ कि यह सारा ढोंग और धोखा तुम्हारे किस लाभ का है ?

बर्निक—किसी भी लाभ का नहीं है । मुझे और धूर्तों के इस समाज को किसी न किसी दिन लुप्त हो जाना होगा । लेकिन एक पीढ़ी उठ रही है जो हमारे पीछे चलेगी । मैं जो कुछ कर रहा हूँ अपने लड़के के लिये कर रहा हूँ, मैं उसकी जिन्दगी के लिये मार्ग प्रशस्त कर रहा हूँ । एक समय आयेगा जब समाज के शरीर में सत्य का प्रवेश होगा और उस आधार पर वह अपने पिता की अपेक्षा सुखी स्थिति का निर्माण करेगा ।

लोना—इन सब के भीतर एक असत्य से ? सोचो तो तुम अपने लड़के के लिये कैसी पैतृक सम्पत्ति छोड़ रहे हो ।

बर्निक—[दबाई हुई निराशा के स्वर में] तुम जितना समझती हो यह उससे हजार गुना बुरी है । लेकिन यह निश्चय है कि किसी

न किसी दिन शाप से मुक्ति प्राप्त करनी होगी। तो भी [जोर देकर] यह सब मैं अपने ही सिर पर कैसे ले सका ! खैर, अब तो यह हो ही गया ; अब तो मुझे इसी के साथ चलना होगा। तुम मुझे कुचलने में सफल नहीं हो सकोगी। [हिल्मा तेज़ी से चुब्य होकर दाहिनी ओर से प्रवेश करता है, अपने हाथ में एक खुला हुआ पत्र लिए हुए।]

हिल्मा—लेकिन... यह है... बेत्ती ! बेत्ती !

वर्निक—क्या बात है जी ? वे आ पहुँचे क्या ?

हिल्मा—नहीं, नहीं, लेकिन मुझे किसी से अभी कहना होगा। [दाईं ओर के आखिरी दरवाजे से निकल जाता है।]

लोना—कारस्टेन ! तुम हम लोगों के यहाँ आने के बारे में कहते हो कि हम तुम्हें कुचलने के लिये आए हैं। तो मुझे कहने दो कि यह अभागा युवक जिसे तुम्हारा नैतिक समाज घृणा करता है किस चीज़ से बना है। वह तुम लोगों में किसी के भी बिना अपना काम चला सकता है, क्योंकि वह अब दूर निकल गया है।

वर्निक—लेकिन उसने कहा है कि वह फिर लौटेगा।

लोना—जान अब कभी नहीं लौटेगा। वह हमेशा के लिये चला गया और उसके साथ दीना भी।

वर्निक—कभी नहीं लौटेगा ? और उसके साथ दीना भी ?

लोना—हाँ, उसकी स्त्री होने के लिये। इस तरह वे तुम्हारे सदाचारी समाज के मुँह पर तमांचा मार गए हैं, जैसा कि मैंने एक बार किया था, लेकिन इसका खयाल न करो।

वर्निक—जान चला गया, और दीना भी, “इण्डियन गर्ल” में...

लोना—नहीं, ऐसी बहुमूल्य वस्तु के साथ वह उन पतित नाविकों का विश्वास नहीं कर सकता था। जान और दीना “पाम ट्रो” में हैं।

बर्निक—अहा ! तब यह सब व्यर्थ है... [जल्दी से अपने कमरे के दरवाजे तक जाता है, उसे खोलता है और बुलाता है] क्राप, “इण्डियन गर्ल” को रोको, वह आज रात को समुद्र में चलने न पाये।

क्राप—“इण्डियन गर्ल” तो अब समुद्र में निकल गया है, मिस्टर बर्निक !

बर्निक—[दरवाजा बन्द कर धीरे से बोलते हुए] देर हो गई—और सब फिजूल...

लोना—तुम्हारा मतलब क्या है ?

बर्निक—कुछ नहीं, कुछ नहीं, मुझे अकेला रहने दो।

लोना—हूँ ! इधर देखो कारस्तेन ! जान ने बड़ी उदारता से अपना सम्मान और नाम जो उसने कभी तुम्हें उधार दिया था मुझ पर छोड़ दिया है और अपनी वह नेकनामी भी जो तुमने उससे चुरा ली थी जब कि वह परदेश में था। जान तो अपनी जबान बन्द रखेगा, किन्तु इस सम्बन्ध में मैं जैसा चाहूँगी, करूँगी। देखो, मेरे हाथ में दो पत्र हैं।

बर्निक—तुम्हें वे मिल गये ! और तुम्हारा मंशा है कि अभी आज ही रात को शायद जब जल्दस आता हो...

लोना—मैं यहाँ तुम्हें धोखा देने के लिये नहीं आयी, बल्कि तुम्हारी अन्तरात्मा को जगाने के लिये, जिससे कि तुम अपनी स्वतन्त्र इच्छा शक्ति से बोल सको। मैं उस काम में तो सफल नहीं हो सकी, इसलिये तुम जैसे हो वैसे ही पड़े रहो, अपने

उस जीवन के साथ जिसकी नींव ही झूठ है । देखो मैं तुम्हारे दोनों पत्रों को फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर देती हूँ । इन कलुषित चीजों को ले लो, यह लो । अब तुम्हारे विरुद्ध कोई सबूत नहीं है कारस्तेन ! अब तुम सुरक्षित हो; प्रसन्न भी रहो अगर तुमसे हो सके ।

बर्निक—[बड़े उद्वेग से] लोना ! तुमने यह पहले क्यों नहीं किया ? अब तो इसमें बड़ी देर हो गई । जिन्दगी से तबियत ऊब गई है; आज के बाद मैं जी नहीं सकता ।

लोना—हो क्या गया ?

बर्निक—मत पूछो मुझ से कुछ, लेकिन मुझे जीना तो होगा ही तिस पर भी ! मैं जीता रहूँगा ओलाफ़ के लिये । सब कुछ वह बदलेगा, सब कुछ वह बना लेगा ।

लोना—कारस्तेन ! [हिल्मा तेज़ी से लौटता है ।]

हिल्मा—कोई भी नहीं मिला । सब बाहर हैं, बेत्ती भी ।

बर्निक—तुम्हें हो क्या गया है ?

हिल्मा—मैं आप से कहने का साहस नहीं कर सकता ।

बर्निक—क्या है ? मुझसे कहना होगा ।

हिल्मा—अच्छी बात है, ओलाफ़ “इण्डियन गल” में भाग गया है ।

बर्निक—[घबरा कर पीछे हटते हुए] ओलाफ़... “इण्डियन गल” पर ! नहीं, नहीं !

लोना—हाँ, वह भाग गया है । मैं अब समझी ! मैंने उसे खिड़की से कूदते हुए देखा था ।

बर्निक—[अग्ने कमरे के दरवाजे से हताश होकर पुकारता है]
क्राप ! “इण्डियन गल” को जैसे भी हो सके रोको ।

क्राफ—असम्भव है, साहब ! कैसे आप समझते हैं ?

बर्निक—हम लोगों को उसे रोकना है, ओलाफ उममें चढ़ गया है ।

क्राफ—क्या ?

रुम्मेल—[बर्निक के कमरे में निकल कर] ओलाफ भाग गया ? असम्भव ।

सान्स्तात—[उसके पीछे निकलते हुए] वह उसी समय लौटा दिया जायगा, मिस्टर बर्निक ।

हिल्मा—नहीं नहीं.. उसने मुझे लिखा है... [पत्र दिखलाता है ।] वह लिखता है कि वह अपने को तब तक जहाज के सामान में छिपाए रहेगा, जब तक कि जहाज समुद्र में नहीं पहुँच जाता ।

बर्निक—अब मैं उसे कभी न देखूँगा !

रुम्मेल—कैसी नासमझी की बात करते हो ! एक अच्छा मजबूत जहाज, जिसकी अभी अभी मरम्मत हुई है...

विजलान्त—[जो ओरो के पीछे बर्निक के कमरे से निकल आया है] और वह भी आप ही के कारखाने में मिस्टर बर्निक !

बर्निक—मैं कह तो रहा हूँ... मैं अब उसे कभी न देखूँगा । मैंने उसे खो दिया लोना ! और अब समझ रहा हूँ कि वह कभी वास्तव में मेरा था ही नहीं । [आहत लेकर] यह क्या हो रहा है ?

रुम्मेल—गाना बजाना, जल्दूस आ रहा है ।

बर्निक—मैं इसमें कोई भाग नहीं ले सकता, मैं नहीं लूँगा ।

रुम्मेल—आप सोच क्या रहे हैं ? यह असम्भव है ।

सान्स्तात—असम्भव मिस्टर बर्निक ! सोचिये तो आपकी कौन सी चीज़ बनने बिगड़ने को है ?

बर्निक—अब मुझसे इससे क्या मतलब ? अब मुझे किसके लिये कार्य करना है ?

रुम्मेल—आप ऐसा पूछ सकते हैं ? आपके लिये हम लोग हैं और यह समाज है ।

विजलान्त —सच कहा ।

सान्स्तात्—और निस्सन्देह मिस्टर बर्निक आप यह न भूलें होंगे कि हम... [मर्था बाईं ओर के आग्विगी दरवाजे से आती है । दर पर गाना सुनाई पड़ता है, सड़क पर ।]

मर्था—जल्दूस आता है, लेकिन बेत्ती घर में नहीं है । पता नहीं वह कहाँ...

बर्निक—घर में नहीं ! अब देखो लोना ! मेरे लिये कोई सहारा नहीं, न तो सुख में और न दुःख में ।

रुम्मेल—पदें उठाओ । इधर आओ और मरी मदद करो क्राप ! और आप मिस्टर सान्स्तात ! बड़े दुःख की बात है कि परिवार अब तक इकट्ठा नहीं हो सका, यह तो कार्यक्रम के बिल्कुल उल्टा हुआ । [सभी पदें उठाते हैं । सारी सड़क रोशनी से जगमगा उठती है । मकान के सामने आतिशबाज़ी की चर्खी में ये शब्द देख पड़ते हैं — “ हमारे समाज के स्तम्भ कारस्तेन बर्निक दीर्घजीवी हों ” ।

बर्निक—[कांपते हुए] यह सब हटाओ । मैं इसे देखना नहीं चाहता । अलग करो, अलग करो ।

रुम्मेल—क्षमा कीजिये मिस्टर बर्निक ! लेकिन आप बीमार हो गये हैं क्या ?

मर्था—इन्हें हो क्या गया है, लोना ?

लोना—चुप ! [उसके कान में कुछ कहती है ।]

बर्निक—कह रहा हूँ इन उपहास के शब्दों को हटाओ । देख नहीं रहे हो कि इतनी रोशनी हमारा मजाक उड़ा रही है ?

रुम्मेल—खैर, मुझे वास्तव में मानना पड़ेगा...

बर्निक—ओह ! आप कैसे समझ सकते हैं ? लेकिन मुझे तो यह सब मुर्दे के कमरे में मोमबत्ती की तरह...

रुम्मेल—खैर, मैं तो कहूँगा कि आप एक साधारण सी बात को बहुत बड़ी बना रहे हैं ।

सान्स्तात्—लड़का अटलान्टिक के उस पार तक के सफ़र का मजा लेगा और फिर लौट कर आपके यहाँ आ जायेगा ।

विजलान्त—केवल सर्वशक्तिमान में विश्वास रखिये, मिस्टर बर्निक ।

रुम्मेल—और उस जहाज़ में भी बर्निक ! वह डूब नहीं सकता, मैं जानता हूँ ।

क्राफ—हूँ !

रुम्मेल—वह उन कमज़ोर जहाज़ों जैसा नहीं है जिन्हें लोगों के प्राणों की उपेक्षा कर के, सुनते हैं, बड़े देशों में समुद्र में भेजा जाता है ।

बर्निक—मैं जानता हूँ मेरे बाल पक रहे हैं । [मिसेज़ बर्निक अपने कन्धे पर शाल डाले बगीचे की ओर से आती है ।]

मिसेज़ बर्निक—कारस्तेन ! कारस्तेन ! जानते हो ?

बर्निक—हाँ जानता हूँ लेकिन तुम, तुम जिसे पता नहीं कि क्या हो रहा है, तुम जिसके पास अपने बच्चे के लिये मां की आंखें नहीं हैं...

मिसेज़ बर्निक—मेरी बात भी तो सुनो ।

बर्निक—तुमने उसकी खबरदारी क्यों नहीं की ? अब तो मैंने उसे खो दिया । मुझे उसे लौटा दो अगर तुमसे हो सके ।

मिसेज़ बर्निक—हाँ, मैं लौटा सकती हूँ, मुझे वह मिल गया है ।

बर्निक—तुम्हें वह मिल गया है ?

सब पुरुष—वाह !

हिल्मा—मैंने भी यही सोचा था ।

मर्था—तुमने उसे फिर पा लिया कारस्तेन !

लोना—हाँ अब उसे अपना बनाओ ।

बर्निक—तुम्हें वह मिल गया है, यह सच है ? कहाँ है वह ?

मिसेज़ बर्निक—जब तक तुम उसे क्षमा नहीं कर दोगे, नहीं बताऊंगी ।

बर्निक—क्षमा कर दिया । लेकिन तुम्हें मालूम कैसे हुआ ?

मिसेज़ बर्निक—तुम नहीं जानते कि मां बराबर देखती रहती है । इस बारे में तुम्हें कुछ भी पता देने में मैं बहुत डर गई थी । उसने कल ज़रा सा कह दिया था, और उसके बाद उसका कमरा खाली था, उसका बेग और उसके कपड़े नहीं देख पड़े—

बर्निक—तब ? तब ?

मिसेज़ बर्निक—मैं दौड़ पड़ी और आउन को पकड़ लिया, उसकी नाव में हम लोग चल पड़े । अमेरिकन जहाज़ खुलने ही को था । ईश्वर की कृपा से हम लोग मौके पर पहुँच गये, जहाज़ पर चढ़ गये, खूब खोजा और उसे पकड़ लिया । आह ! कारस्तेन ! उसे दण्ड मत देना ।

बर्निक—बेत्ती !

मिसेज वर्निक—और आउन को भी नहीं ।

वर्निक—आउन ? उसके बारे में तुम क्या जानती हो ?
“ इण्डियन गर्ल ” फिर चल पड़ा क्या ?

मिसेज वर्निक—नहीं, यही तो बात है ।

वर्निक—कहो, कहो ।

मिसेज वर्निक—आउन भी मेरी ही तरह घबरा गया था ।
खोजने में देर होने लगी, रात होगई थी और चलाने वाले विरोध
करने लगे और तब आउन ने तुम्हारे नाम से...

वर्निक—क्या ?

मिसेज वर्निक—कल तक के लिये जहाज का चलाना रुकवा
दिया ।

क्राप—हूँ !

वर्निक—आह । मैं कितना प्रसन्न हूँ ।

मिसेज वर्निक—तुम नाराज नहीं हो ?

वर्निक—मैं कह नहीं सकता मैं कितना खुश हूँ बेत्ती !

रुम्मेल—आप बेशक छोटी सी बात को बहुत बड़ा देते हैं ।

हिल्मा—हाँ जी, जहाँ ज़रा सा भी प्रकृति की शक्तियों से युद्ध
करने का मौका पड़ा...ओफ़ !

क्राप—[खिड़की की ओर जाकर] मिस्टर वर्निक, जल्दूस
आपके बगीचे के दरवाजे से आ रहा है ।

वर्निक—हाँ, अब वे आ सकते हैं ।

रुम्मेल—सारा बगीचा लोगों से भर गया है ।

सान्स्तात—सारी सड़क भरी है ।

रुम्मेल—सारा कस्बा आ गया है बर्निक ! ऐसे मौके पर कोई भी गर्व कर सकता है ।

विजलान्त—इसे सिर झुका कर स्वीकार करना चाहिए, मिस्टर रुम्मेल ।

रुम्मेल—सभी झंडे उठे हैं । क्या सुन्दर जलूस है ! यह कमेटी के सदस्य आ रहे हैं, रारलुन्त को अभ्यक्षता में ।

बर्निक—हाँ, उनको भीतर आने दीजिये ।

रुम्मेल—लेकिन, बर्निक, आप इतनी घबराहट की हालत में ..

बर्निक—खैर, तब ?

रुम्मेल—आप की जगह मैं बोलना चाहता हूँ, अगर आप पसन्द करें ।

बर्निक—नहीं, धन्यवाद है आप को । आज रात को मैं खुद बोलूंगा ।

रुम्मेल—लेकिन आप को ठीक मालूम है आप को क्या कहना है ?

बर्निक—हाँ, अपनी तबियत हल्की कीजिये, रुम्मेल ! मैं अब जानता हूँ क्या कहना है । [गाना जोर से होता है । बगमदे का दरवाजा खुलता है । रारलुन्त भीतर आता है कमेटी के सदस्यों का अगुआ बना हुआ, किराये के नोकरो से घिरा हुआ, जो ढँकी हुई टोकरी लिये हैं । उनके पीछे कस्बे के सभी श्रेणियों के लोग हैं, जितने कि एक कमरे में आ सकते हैं । बहुत बड़ी भीड़ झुंडें हिलाती हुई बगीचे में और सड़क पर देख पड़ती है ।]

रारलुन्त—मिस्टर बर्निक ! मैं देख रहा हूँ कि आप के मुँह के आश्चर्य के भाव से यह प्रकट है कि आप को इस बात का पता न

रहा होगा कि हम अतिथि आप के सुखी परिवार में और आप के शान्त भवन में इस तरह आ पड़ेंगे, जहाँ कि हम लोग देखते हैं आप उत्साही नागरिकों के बीच में घिरे हैं। लेकिन हम लोगों के हृदय ने हम लोगों को बाध्य किया है यहाँ तक आकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिये, यह सच है कि पहली ही बार नहीं, किन्तु इतनी तैयारी के साथ पहली ही बार। जिस महान नैतिक आधार पर आप ने हमारे सामाजिक भवन का निर्माण किया है उसके लिये तो हम लोगों ने आप को न मालूम कितनी बार धन्यवाद दिया है। इस अवसर पर हम लोग अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं विशेषतः उस दूरदर्शी, अथक, स्वार्थहीन, नहीं आत्म-त्यागी नागरिक के प्रति, जिसने कि एक ऐसे आयोजन को अग्रसर किया है जिसके बारे में हम सब लोग विश्वास कर रहे हैं कि उससे समाज की भौतिक समृद्धि को भारी प्रोत्साहन मिलेगा और जो कि हमारे समाज के लिए बड़े हित की बात होगी।

अवाजें—खूब, खूब !

रारलुन्त—महोदय, आप अनेक वर्षों से इधर हम लोगों के भीतर जगमगाते हुए उदाहरण रहे हैं। यह जगह ऐसी नहीं है कि जहाँ मैं आप के पारिवारिक जीवन के विषय में कुछ कहूँ, जो कि हम सब के लिए आदर्श रहा है, और न आप के निष्कलंक चरित्र की प्रशंसा करने का अवसर है। यह बातें मनुष्य के अपने एकान्त घर से सम्बन्ध रखती हैं, इस प्रकार के सार्वजनिक अवसर से नहीं। मुझे यहाँ आप के सार्वजनिक जीवन के विषय में कुछ कहना है, नागरिक की हैसियत से, जो कि हर किसी की आखों के सामने है। आप के कारखाने से सजे हुए जहाज दूर दूर समुद्रों में जाते हैं और अपने साथ हमारा झंडा फहराते रहते हैं। मजदूरों का एक बहुत बड़ा और सुखी समुदाय

आप को पिता की तरह मानता है। नये नये कारबार खोल कर आपने सैकड़ों परिवारों के कल्याण की नींव डाली है। एक शब्द में, आप पूर्ण रूप से हमारे समाज के प्रधान स्तम्भ हैं।

आवाज़ें—वाह ! वाह ! खूब !

रारलुन्त—और महोदय यही निस्स्वार्थ वृत्ति आपके चरित्र को और भी उज्ज्वल बना देती है, और हमारे समाज के लिये इतनी उपयोगी सिद्ध हुई है, शब्द जितना व्यक्त कर सकते हैं उससे कहीं अधिक—और वह भी विशेषतः इस समय। अब आप हम लोगों के लिये तैयार कराना चाहते हैं, जिसका रूखा नाम लेने में मुझे कोई संकोच नहीं है—रेलवे।

आवाज़ें—धन्य ! धन्य !

रारलुन्त—लेकिन ऐसा मालूम हो रहा है जैसे कि यह आयोजन रुकना चाहता है कुछ कठिनाइयों से, जिनकी जड़ में संकीर्ण और स्वार्थमय विचार हैं।

आवाज़ें—वाह ! वाह !

रारलुन्त—क्योंकि यह बात मालूम हुई है कि कुछ लोगों ने जो हमारे समाज के नहीं हैं यहाँ के परिश्रमी नागरिकों के साथ अन्याय किया है और कुछ उपयोगी चीजों को अपने अधिकार में कर लिया है जिनको कि न्यायतः हमारे समाज के लोगों के हाथ में आना चाहिये था।

आवाज़ें—यह ठीक है ! सुनो ! सुनो !

रारलुन्त—यह खेद का विषय स्वभावतः आपको भी मालूम हो गया है, मिस्टर बर्निक। लेकिन इसका कुछ भी प्रभाव आप के आयोजन को लेकर बढ़ने पर नहीं पड़ा है, यह अच्छी तरह

जानते हुए कि एक देश प्रेमी व्यक्ति को केवल अपने स्थानीय स्वार्थों का ही विचार नहीं करना चाहिये ।

आवाज़ें—ओ ! नहीं, नहीं ! ठीक, ठीक !

रारलुन्त—ऐसे ही आदमी के प्रति, उस देशप्रेमी नागरिक के लिये, जिसके चरित्र का हम सब को सम्मान करना चाहिये, हम लोग आज रात अपनी कृतज्ञता प्रकट करने आये हैं । ईश्वर करे आप का आयोजन बढ़कर वास्तविक रूप धारण करे और इस समाज के लिये सदैव कल्याणकर हो । यह सच है कि रेलवे के कारण हम लोगों में बाहरी बुराइयाँ प्रवेश कर सकती हैं, लेकिन इससे हम लोगों को उन्हें भीतर से निकाल बाहर करने का भी साधन मिल रहा है । क्योंकि हम भी इस समय इस प्रकार के बाहरी प्रभावों से मुक्त होने का दावा नहीं कर सकते । लेकिन आज ही की रात, अगर उड़ती बातों का विश्वास करें, तो हम उस प्रकार के कुछ अवाञ्छनीय संसर्गों से मुक्त हो रहे हैं, जितनी आशा की जाती थी उससे पहले ही ।

आवाज़ें—सुनो...सुनो ।

रारलुन्त—मैं इस घटना को अपने नए कार्य के लिए एक शुभ लक्षण मानता हूँ । मेरे इस समय उस का उल्लेख करने का आशय इसी बात पर जोर देना है कि हम जिस घर में खड़े हैं उसमें रिश्तेदारी के बन्धन से भी अधिक सदाचार और नैतिकता को महत्व दिया जाता है ।

आवाज़ें—धन्य, धन्य ! सुनो, सुनो !

बर्निक—[उसी समय] मुझे भी आज्ञा दीजिये...

रारलुन्त—मुझे थोड़े से ही शब्द और कहने हैं, मिस्टर बर्निक ! अपने जन्म स्थान के लिये आपने जो कुछ भी किया है हम सब

लोग जानते हैं कि उसमें आपका कोई अपना स्वार्थ नहीं रहा है। लेकिन तिस पर भी आपको अपने नागरिक भाइयों की कृतज्ञता को अस्वीकार नहीं करना चाहिए, विशेषतः ऐसे महान अवसर पर जब कि समझदारों के कहने के अनुसार, हम लोग एक नये युग के द्वार के पास पहुँच गये हैं।

आवाजें - खूब, खूब ! सुनो, सुनो !

[रारलुन्त नोकारों को इशारा करता है। वे टोकरियाँ लेकर आगे बढ़ते हैं। एक और भाषण चलता है, दूसरी ओर कमेटी के सदस्य

विभिन्न वस्तुओं को निकाल कर उपहार देते हैं।]

रारलुन्त—इसलिये मिस्टर बर्निक ! हम लोग खुशी से आप को यह चाँदी का काफ़ी का सैट उपहार देते हैं। यह आपकी मेज़ पर शोभा दे जब भविष्य में, पहले कई बार की भांति हम लोगों को आपको उदार छत के नीचे इकट्ठा होने का आनन्द प्राप्त हो।

आप लोगों से भी महाशयो, जिन्होंने इतनी उदारता से हमारे समाज के नेता का अनुमोदन किया है, हम लोग प्रार्थना करते हैं इन साधारण चीज़ों को स्वीकार करने के लिये। यह चाँदी का ग्लास आपके लिये है, मिस्टर रुम्मेल ! कई बार आपने ग्लासों की रगड़ में अपने नागरिक भाइयों के हित की रक्षा की है, सुन्दर से सुन्दर शब्दों में। ईश्वर करे आपको वैसेही अवसर बराबर मिलते रहें, इस ग्लास का उठाकर खाली करने के, किसी देश हितैषी भोज में। आपको मिस्टर सान्स्तात ! मैं यह आपके नागरिक भाइयों के चित्रों का अलबम उपहार देता हूँ। आपकी उदारता के फल-स्वरूप समाज की सभी श्रेणियों में आपके मित्र मौजूद हैं। और आपको मिस्टर विजलान्त ! मैं उपहार देता हूँ पारिवारिक प्रेम की यह पुस्तक, सुन्दर छपी और मँदी हुई, आपकी पढ़ने

को मेज़ को सुशोभित करने के लिये । समय के सुन्दर प्रभाव ने आपमें जीवन की ओर गम्भीरता से देखने की वृत्ति पैदा कर दी है । अपने दैनिक कर्तव्यों का पालन करने का उत्साह बहुत समय से ऊँचे और महान विचारों के कारण पवित्र और स्वर्गीय हो गया है । [भीड़ की ओर घूमता है] और अब मित्रो ! मिस्टर बर्निक और उनके साथियों के लिये जय घोष ! हमारे समाज के स्तम्भों के लिये जय घोष !

भीड़—बर्निक की, समाज के स्तम्भ की जय हो ! जय हो ! जय हो !

लोना—मैं आपको बधाई देती हूँ जीजा !

[भीड़ में उत्साह फैल जाता है ।]

बर्निक—[गम्भीरता से और धीरे से कहता है] मेरे नागरिक भाइयो ! आपके अध्यक्ष ने अभी कहा है कि हम लोग नये युग के किनारे पहुँच गये हैं । मुझे विश्वास है यह सच होकर रहेगा । लेकिन यह तभी होगा जब हम सत्य का अटूट सहारा लेंगे—सत्य जो कि आज रात तक हर हालत में और हर स्थिति में हमारे इस समाज के लिये अपरिचित रहा है । [सुनने वालों में आश्चर्य] इस उद्देश्य से, मुझे आपकी उस प्रशंसा का विरोध करना होगा, जिससे कि मिस्टर रारलुन्त ! जैसा कि ऐसे अवसरों का नियम है, आपने मुझे लाद दिया है । मैं इसका अधिकारी नहीं हूँ क्यों कि आज तक के मेरे काम केवल स्वार्थहीन ही नहीं रहे हैं । गोकि मैं सदैव आर्थिक लाभ का विचार नहीं करता रहा हूँ, लेकिन यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि शक्ति, प्रभाव और हैसियत का लोभ मेरे सभी कामों की जड़ में रहा है ।

रुम्बेल—[कुछ जोर से] इसके आगे ?

बर्निक—अपने नागरिक भाइयों के सामने खड़ा होकर मैं इसके लिये अपने को धिक्कार नहीं देता, क्योंकि मैं अब भी सोचता हूँ कि अपने कर्तव्यशील भाइयों में मैं अब भी आगे की एक जगह का अधिकारी हूँ ।

आवाज़ें—जरूर, जरूर, जरूर !

बर्निक—लेकिन जिस बात के लिये मैं अपने को दोष देता हूँ, यह है कि मैं अक्सर इतना कमजोर रहा हूँ कि मैंने धोखे का सहारा लिया है, क्योंकि मैं जानता था और डरता था अपने समाज की प्रवृत्ति से, जो किसी भी प्रसिद्ध आदमी के काम में बुरे उद्देश्यों को ढूँढ़ निकालने की रही है । और अब मैं एक ऐसी बात पर आ रहा हूँ जो कि इसे साफ कर देगी ।

रुम्मेल—[अन्यमनस्क होकर] हूँ, हूँ !

बर्निक—कस्बे के बाहर बहुत बड़ी जायदाद खरीद जाने की खबर उड़ती रही है । यह सब मैंने खरीदी है, केवल मैंने और किसी ने नहीं । [धीमी आवाज़ें—क्या कह रहे हैं ? ”... वे... ? बर्निक ?] सभी जायदाद इस समय अकेले मेरे हाथ में है । स्वभावतः मैंने यह अपने साथियों को बता रक्खा है, मिस्टर रुम्मेल, मिस्टर विजलान्त, मिस्टर मान्स्तात और हम सब लोगों ने यह तै किया है कि...

रुम्मेल—यह सच नहीं है । साबित कीजिये, साबित कीजिये !

विजलान्त—हम सब लोग अभी किसी बात पर एक मत नहीं हो पाए हैं ।

सान्स्तात—खैर मुझे कहना होगा...

बर्निक—यह बिल्कुल ठीक है । मैं जो बात कहने जा रहा था ,

अभी हम सब इस बात में सहमत नहीं हैं। लेकिन मुझे पूरी आशा है कि ये तीनों महाशय मेरे साथ बिल्कुल सहमत हो जायेंगे। अब मैं घोषणा करता हूँ कि आज रात मैंने निश्चय कर लिया है कि यह सभी जायदाद एक कम्पनी के द्वारा उपयोग में लाई जायेगी जिसके हिस्से सर्वसाधारण में बाँट दिये जायेंगे, जिस किसी की इच्छा होगी हिस्सा खरीद सकेगा।

आवाजें—वाह, वाह ! बर्निक की जय हो !

रुम्सेल—[धीरे से बर्निक से] यह भयंकर विश्वासघात है !

सान्स्तात—[वह भी धीरे से] तो आप हम लोगों को उल्टा बना रहे थे !

विजलान्त—खैर, बुरा हो ..। हे ईश्वर ! .. मैं कह क्या रहा हूँ ? [बाहर जय घोष होता है ।]

बर्निक—शान्त हूजिये, महाशयो ! आपको इस कृतज्ञता का मुझे अधिकार नहीं, क्योंकि मैंने जो अभी निश्चित किया है वह मेरा जो पहले उद्देश्य था उसके अनुसार नहीं है। मेरी नीयत थी सब कुछ अपने ही पास रख लेने की, और अब भी मेरी राय है कि यह जायदाद तभी फायदा देगी जब यह एक आदमी के हाथ में रहेगी। लेकिन यह निश्चित करने के लिये आप पूरे स्वतन्त्र हैं। अगर आप चाहें, मैं अपनी शक्ति भर उसकी देख रेख करने के लिये तैयार हूँ।

आवाजें—जरूर, जरूर, जरूर !

बर्निक—लेकिन सबसे पहले मेरे नागरिक भाइयों को मुझे अच्छी तरह से जान लेना चाहिये। और हर एक आदमी स्वयं अपने को भी अच्छी तरह जान ले और इस तरह यह सच हो जाय कि आज रात को हम लोग एक नया युग आरम्भ कर रहे हैं। बीता हुआ युग, अपने बनावटीपन, अपने ढोंग, अपनी

निस्सारता, अपनी दिखावटी नैतिकता और अपने लोकमत के लज्जास्पद भय, के साथ हम लोगों के लिये अब अजायबघर सा रहेगा—जिससे हम लोगों का मनोरंजन होगा और हम लोगों को शिक्षा मिलेगी, और उस अजायब घर को हम लोग उपहार देंगे—देंगे न सज्जनो—यह प्याला, ग्लास, अल्वम और पारिवारिक प्रेम की सुन्दर पुस्तक ।

रुम्मेल—आह ! क्यों नहीं ?

विजलान्त—[दबी ज़बान से] अगर तुम ने और सब ले ले लिया है तो...

सान्स्तात—ज़रूर !

बर्निक—और अब समाज के सम्मुख मुझे अपनी खास बात रखनी है । मिस्टर रारलुन्त ने कहा था कि आज शाम को कुछ अवांछनीय संसर्गों से हमें मुक्ति मिल गई है । मैं इसमें वह और जोड़ सकता हूँ जो अभी किसी को मालूम नहीं है । जिस आदमी की बात हुई थी वह अकेला नहीं गया, उसके साथ उसकी स्त्री होने के लिये गई है...

लोना—[जोर से] दीना दोर्फ ।

रारलुन्त—क्या ?

मिसेज़ बर्निक—क्या ? [बड़ी खलबली मचती है ।]

रारलुन्त—भाग गई ? उसके साथ भाग गई ? असम्भव !

बर्निक—उसकी स्त्री बनने के लिये मिस्टर रारलुन्त ! और मैं और भी कहूँगा । [धीरे से अपनी स्त्री से] बेत्ती ! जो कहा जा रहा है उसे सुनने के लिये दिल कड़ा कर लो । [जोर से] मुझे यह कहना है; वह आदमी श्रद्धा का अधिकारी है, क्योंकि उसने महानता के साथ दूसरे का अपराध अपने कंधे पर उठा लिया था ।

मेरे मित्रो ! मैं असत्य से निकलना चाहता हूँ; इसने मेरे अस्तित्व के एक एक रेशे को जहरीला बना दिया है। आप लोगों को सब मालूम हो जायेगा। पन्द्रह वर्ष पहले मैं ही अपराधी आदमी था।

मिसेज़ बर्निक—[नम्रता के साथ और कांपती हुए] कारस्तेन !

मर्था—[उसी तरह से] हाय जान !

लोना—अब अन्त में तुमने अपने को पहचाना है !

[लोगों में सन्नाटा और उद्वेग]

बर्निक—हाँ, मित्रो, मैं अपराधी था और वह भाग गया। जो भयङ्कर और भूठी अफवाहें चारों ओर उड़ीं, उनको मिटा देना अब मनुष्य की शक्ति के बाहर की बात है; लेकिन उसकी शिकायत करने का अधिकार मुझे नहीं है। पन्द्रह वर्ष तक मैं सफलता की सीढ़ी पर चढ़ता गया हूँ उन्हीं अफवाहों की सहायता से। अब वे मुझे फिर से गिराये या नहीं, इस का आप लोगों में से हर एक को अपने दिल में निर्णय करना चाहिये।

रारलुन्त—क्या ? यह वज्र ! हमारा सर्वश्रेष्ठ नागरिक... [बेत्ती से धीमे स्वर में] आप के लिये मुझे कितना खेद है मिसेज़ बर्निक !

हिल्मा—कैसी स्वीकारोक्ति ! खैर, मुझे कहना होगा ..

बर्निक—लेकिन आज की रात आप लोग कुछ निर्णय न कर लें। मैं प्रार्थना करता हूँ हर एक से अपने घर जाने के लिये, अपने विचारों को स्थिर करने के लिये, अपने दिल को भी देखने के लिये। जब आप फिर शान्ति से विचार कर सकें तब मैं देखूँगा कि सत्य कह देने से मैं जीत गया या हार। नमस्कार, मुझे पश्चात्ताप के लिये अभी बहुत कुछ है, लेकिन उसका सम्बन्ध

केवल मेरी अन्तरात्मा से है। विदा ! प्रसन्नता की इन सब चीजों को ले जाइये। हम सब लोगों को जानना चाहिये कि ये चीजें यहाँ शोभा नहीं देतीं।

रारलुन्त—निस्सन्देह नहीं देतीं। [मिसेज़ बर्निक से धीमे स्वर में] भाग गई ! तो वह मेरे लिये बिल्कुल अयोग्य थी।

[कमेटी के सदस्यों से जोर से] हाँ, सज्जनो, इसके बाद जितनी शान्ति से हो सके हम लोगों को चले जाना चाहिये।

हिल्मा—इसके बाद, आदर्श के भण्डे को कैसे ऊँचा रख सकता है कोई ? ओफ !

[इसी बीच में यह बात एक से दूसरे कानों में चली गई है। भीड़ धीरे धीरे बगीचे से निकल जाती है। रुम्ले, सान्स्तात और विजलान्त बाहर निकल जाते हैं, आपस में बहस करते हुए, लेकिन धीरे धीरे। हिल्मा दाहिनी ओर हट जाता है। जब फिर शान्ति होती है तो कमरे में केवल बर्निक, मिसेज़ बर्निक, मर्था, लोना और क्राप रह जाते हैं।]

बर्निक—बेत्ती ! तुम मुझे क्षमा कर सकोगी ?

मिसेज़ बर्निक—[उसकी ओर मुस्करा कर देखते हुए] जानते हो कारस्तेन ! तुमने मेरे लिये ऐसे आनन्द का मार्ग खोल दिया है जैसा वर्षों से नसीब नहीं हुआ था।

बर्निक—कैसे ?

मिसेज़ बर्निक—कई वर्षों तक मैंने अनुभव किया है कि कभी तुम मेरे थे लेकिन अब मैं तुमको खो चुकी हूँ। अब मैं जानती हूँ कि तुम मेरे कभी नहीं थे अब तक, लेकिन अब मैं तुम्हें पा सकूंगी।

बर्निक—[उसे अपनी बांहों में जकड़ते हुए] आह ! बेत्ती ! तुमने मुझे पा लिया। सब से पहले लोना ने मुझे तुम्हें समझने के लायक बनाया था। लेकिन अब ओलाफ को मेरे पास आने दो।

मिसेज़ बर्निक—हाँ, अब वह तुम्हारे पास आयेगा । मिस्टर काप ! [काप को कुछ हटा कर धीरे से उससे कहती है । वह बगीचे के दरवाजे से बाहर जाता है । तब तक मकानों की रोशनी और सजावट धीरे धीरे मिट जाती है ।]

बर्निक—[धीमे स्वर में] धन्यवाद है तुम्हें लोना ! तुमने मुझ में जो सब से सुन्दर था उसकी रक्षा की है...और मेरे लिये ।

लोना—तुम समझते हो कि मैं कुछ और करना चाहती थी इसके अतिरिक्त ?

बर्निक—हाँ, ऐसा था—या नहीं ? मैं तुम्हें समझ नहीं सकता ।

लोना—हूँ !

बर्निक—तब यह घृणा नहीं थी ? प्रतिहिंसा नहीं थी ? तब तुम यहां क्यों लौट आई ?

लोना—पुरानी मित्रता कभी टूटती नहीं ।

बर्निक—लोना !

लोना—जब जान ने मुझसे इस झूठ के बारे में कहा, तो मैंने शपथ ली कि मेरे यौवन काल का वीर सच्चा और स्वतन्त्र होकर सिर उठायेगा ।

बर्निक—मैं कितना नीच हूँ ! और तुमसे मुझे ! इसका कितना कम अधिकार था !

लोना—आह ! अगर हम स्त्रियां बराबर यही देखतीं कि हमारा अधिकार क्या है तो कारस्तेन . ! [आउन ओलाफ के साथ बगीचे की ओर से आता है ।]

बर्निक—[उनसे मिलने के लिये बढ़ता है] ओलाफ !

ओलाफ—पिताजी, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ, फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा ।

बर्निक—कभी नहीं भागोगे ?

ओलाफ—हाँ, हाँ, प्रतिज्ञा करता हूँ पिता जी ।

बर्निक—और मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि कभी तुम्हें भागने के लिए कारण नहीं मिलेगा । भविष्य में तुम्हें भ्रम बढ़ने का अवसर मिलेगा, मेरे जीवन के कार्य के उत्तराधिकारी के रूप में नहीं, बल्कि उसकी तरह जिसके सामने उसके अपने जीवन का कार्य पड़ा है ।

ओलाफ—और मुझे अवसर मिलेगा कि मैं बढ़ने पर जो चाहूँ बनूँ ?

बर्निक—हाँ ।

ओलाफ—धन्यवाद है । तब मैं समाज का स्तम्भ नहीं बनूँगा ।

बर्निक—नहीं ? क्यों नहीं ?

ओलाफ—नहीं, मैं समझता हूँ यह रोचक नहीं है ।

बर्निक—तुम भ्रम तुम बनोगे ओलाफ ! और सब बातें स्वयं होती रहेंगी । और तुम आउन...

आउन—मैं जानता हूँ मिस्टर बर्निक, मैं बरखास्त कर दिया गया ।

बर्निक—हम दोनों इसी तरह साथ रहेंगे, आउन ! और मुझे क्षमा करो...

आउन—क्या ? जहाज़ तो आज रात को नहीं चल सका ।

बर्निक—और न वह कल चल सकेगा । मैंने तुम्हें बहुत कम समय दिया था । उसकी भरमसत खूब ठिकाने से हो जानी चाहिये ।

आउन—अच्छी बात है, मिस्टर बर्निक ! यही होगा और वह भी नई मशीन से ।

बर्निक—सब तरह से, लेकिन ठिकाने के साथ और ईमानदारी से । हम लोगो मे भी बहुतरे है जिनकी सब ओर से और ईमानदारी के साथ मरम्मत होने की जरूरत है आउन ! खैर, नमस्कार ।

आउन—बन्दगी हुआ और धन्यवाद है आपको, धन्यवाद है । [चला जाता है ।]

मिसेज बर्निक—अब सब चले गये ।

बर्निक—और हम लोग अकेले रह गये । मेरा नाम सुनहले अक्षरो मे अब नहीं चमक रहा है, खिड़कियो की सभी रोशनी बुझ गई ।

लोना—तुम उन्हे फिर जलाना चाहोगे ?

बर्निक—अब दुनिया की किसी चीज के लिये नहीं । मै कहाँ रहा हूँ, तुम सुनकर कॉप उठोगी । मै अनुभव कर रहा हूँ कि जैसे मुझे अब होश हुआ है, जहर खा लेने के बाद । लेकिन मै यह भी अनुभव कर रहा हूँ कि मै फिर जवान और स्वस्थ हो सकता हूँ । आह ! आओ । मेरे पास आओ । मेरे चारो तरफ आओ । बेत्ती ! आओ, आओ, ओलाफ ! मेरे बेटे ! और तुम भी मर्था ! मुझे मालूम हो रहा है कि जैसे कई बरों से मैने तुम सब को नहीं देखा है ।

लोना—नहीं देखा, मै इसका विश्वास कर सकती हूँ । तुम्हारा समाज अविवाहितो का समाज है ! तुम लोग स्त्री को नहीं जानते ।

बर्निक—यह बिल्कुल सच है, और इसीलिये यह समझौता रहा लोना ! कि तुम्हें बेत्ती को और मुझको छोड़ना नहीं चाहिये ।

मिसेज बर्निक—नहीं लोना ! तुम्हें नहीं जाना चाहिये ।

लोना—नहीं, मेरा हृदय कैसे चाहेगा तुम जैसे अनुभवहीन स्त्री पुरुष को छोड़कर जाने के लिये, जो अभी घर बसाना सीख रहे हैं ? मैं क्या तुम्हारी माँ नहीं हूँ ? तुम और मैं मर्था ! दो बूढ़ी काकी ? तुम देख क्या रही हो ?

मर्था—देखो आकाश कैसा साफ हो रहा है और समुद्र पर कैसी रोशनी पड़ रही है । “पाम ट्री” की यात्रा सौभाग्यपूर्ण होगी ।

लोना—वह अपना सुन्दर भाग्य अपने ऊपर लिये जा रहा है ।

बर्निक—और हम ? हमको ईमानदारी के साथ काम करने के लिये लम्बा दिन आ रहा है ; सबसे अधिक मेरे लिये । लेकिन वह आवे, केवल तुम हृदय से मेरे चारों ओर रहो, तुम सच्ची, स्नेह-मयी देवियो । मैंने इन दो चार दिनों में यह भी जान लिया है कि देवियो तुम्हीं समाज की स्तम्भ हो ।

लोना—तब तो तुमको बड़ी मामूली समझदारी की बात मालूम हुई है, जीजा ! [अपना हाथ सम्हाल कर उसके कन्धे पर रखती है ।] नहीं, मेरे मित्र ! सत्य और स्वतन्त्रता के भाव, ये ही समाज के स्तम्भ हैं ।

